शिव उपासना

शिवोपासना

चन्द्रकला से जिनका मस्तक देदीप्यमान हो रहा है, जो कंदर्प-दर्पहारी, गंगाधर एवं कल्याण स्वरूप हैं, जिनके कण्ठ और कर्ण सर्पों से भूषित हैं, जिनके नेत्रों से अग्नि प्रकट हो रही है, हस्ति चर्म ही जिनका सुन्दर वस्त्र है तथा जो त्रिलोकी के सार हैं ऐसे भगवान् शिव में आप मोक्ष के लिए अपनी सम्पूर्ण चित्त वृत्तियों को लगा दें, अन्य कर्मों से फिर क्या प्रयोजन ?

हमारे अन्य लोकप्रिय उत्कृष्ट प्रकाशन

शिवोपासना

सत्यवीर शास्त्री

साधना पॉकेट बुक्स

प्रकाशक :
साधना पॉकेट बुक्स,
३१ यू० ए० बंग्लो रोड, दिल्ली-११०००७
दूरभाष : २११४१६९ 2 516 715.

© प्रकाशकाधीन

संस्करण : 1987

मूल्य : दस रुपये

नाइस आफसेट प्रिन्टर्स दिल्ली-३२

विषयानुक्रमणिका

पाठकों से

सम्मानीय पाठक वृन्द !

जिन लोगों के मन में हिंसा, द्वेष, वैर, काम, विषाद एवं शोक आदि दूषित विचार भरे रहते हैं, वे स्वयं अपनी ही हानि नहीं करते बल्कि अपने विचारों का वायु द्वारा संप्रेषण करके आसपास के समस्त वायुमण्डल को भी दूषित कर देते हैं। इस प्रकार उस वातावरण में रहने वाले मनुष्यों के मन पर उन दूषित विचारों का कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ता रहता है। शनैः-शनैः वहां का वातावरण इतना अधिक दूषित हो जाता है कि वहां आने वाला हर सरल हृदय वाला नया मनुष्य बाधित होकर वैसा ही बन जाता है।

इस प्रकार आज का मानव दुःखी है अपने धर्म को भूल गया है। वह विपत्ति आने पर भाग्य और भगवान् को कोसता है। यह स्थिति वास्तव में निर्बल मन की द्योतक है। निर्बल मन होने से जब भयप्रद या बुरे समाचार मिलते हैं तो कितनों की ही हृदयगति बन्द होकर मृत्यु हो जाती है। संकटों की चिन्ता से शरीर का खोखला हो जाना स्वभाविक क्रिया है। मानसिक तौर से जो लोग निर्बल होते हैं वे विपत्ति के समय घबरा कर आत्मसमर्पण कर देते हैं इसीलिए विपत्तियां उन्हें चहुं ओर से तडित करती हैं। हृदय की निर्बलता विपत्ति को न्यौता देती है। जो मानसिकतौर से सबल हैं वे प्रतिकूल परिस्थितियों को विपत्ति नहीं मानते, अपितु उसे जीवन की एक साधारण घटना मान कर उसके निवारण का उपाय करते हैं।

यदि व्यक्ति आपत्तियों से भयभीत न होगा तो वह उन्हें थोड़े प्रयत्न से ही खत्म कर देगा और यदि उसने उन्हें कल्पना में बड़ा मान लिया और उसी की चिन्ता करता रहा तो वह सुरसा के शरीर की नाई बढ़ती चली जायेगी। इसी स्थिति को कहा जाता है विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ना। इस विपत्ति के पर्वत को नष्ट करने का उपाय है मानसिक सबलता।

मानसिक सबलता लाने के अनेकों उपाय हैं जिनमें से सरलतम सरल उपाय है ईश्वरोपासना। ईश्वरोपासना करने से उपासक में एक अनोखी शक्ति और साहस विपत्तियों से लडने के लिए आ जाता है। उपासना से मनुष्य में सूझ-बूझ, विवेक बुद्धि और संघर्ष करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, जिससे प्रतिकूलता में भी अनुकूलता के दर्शन होते हैं। इस प्रकार विपत्तियां उसके लिए चिन्ता का विषय नहीं रहती।

अब प्रश्न उठता है कि किस देवता की उपासना करनी चाहिए जिससे भौतिक जीवन की समृद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रगति एवं नैतिक उत्थान भी हो। ऐसा न हो कि सिकन्दर महान् की भांति अन्त समय में पछताना पड़े कि भौतिक सम्पदा जो अर्जित की थी वह तो यहां ही रह गई वहां साथ ले जाने को कुछ अर्जित नहीं कर सका—

वही आली-मवाली थे वही अरकाने दौलत थे।
सिकन्दर जब चला दुनिया से दोनों हाथ खाली थे॥

आज के युग में भोले शंकर की उपासना करना सब प्रकार से हितकर है। शिवजी बड़े आशुतोष हैं वे उपासक पर जल्दी रीझ जाते हैं। भोले भण्डारी मुंह मांगा वरदान देने में आगा-पीछा कुछ नहीं सोचते, इसीलिए इन्हें 'भोलानाथ' कहा जाता है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने विनय पत्रिका में लिखा है—

बावरो रावरो नाह भवानी·········जगतमातु मुस्कानी॥

अर्थात् ब्रह्माजी लोगों का भाग्य बदलते-बदलते तंग आकर जगत्जननी पार्वती को कहते हैं कि हे भवानी! महेश्वर पागल हो गये है सदा देते ही रहते हैं। जिन लोगों को लेने का कुछ भी अधिकार नहीं है उन्हें भी वे सब कुछ दे डालते हैं इससे वेद की मर्यादा भंग होती है। आप तो स्यानी हैं अपने घर की भलाई देखिए यों देते-देते तो सब खाली हो जाएगा। जिन लोगों के भाग्य में मैंने सुख का नाम भी नहीं लिखा था, उन कंगलों के लिए (आपके नाथ के पागलपन के कारण) स्वर्ग सजाते-सजाते मैं तंग आ गया हूं। आप कृपा करके लोगों का भाग्य लिखने का कार्य किसी और को सौंप दो, मैं ऐसे अधिकार से भीख मांग कर खाना अच्छा समझता हूं। विधाता की ऐसी बातें सुन कर महादेवजी मन-ही-मन मुदित हुए और जगत्जननी

शिवाराधन

जो पुरुष शिव तत्त्व को जान लेता है फिर उसके लिए कुछ भी जानना बाकी नहीं रह जाता। शिवतत्त्व को हिमवान् की पुत्री पार्वती जी यथार्थ रूप से जानती थीं। क्योंकि जब वे तपस्यारत थीं तो भगवान् शिव ने एक ब्रह्मचारी ब्राह्मण का छद्म वेश बना कर उन्हें बहकाने की कोशिश की थी, किन्तु वे टस से मस नहीं हुई थीं। इस संदर्भ में उमा-महेश का संवाद बहुत ही रोचक और उपदेशप्रद है।

शैल पुत्री की कामना थी कि वे शिवजी को पति रूप में वरण करें। किन्तु जब कामदेव शिवजी द्वारा भस्म कर दिया गया तो वे बहुत दुःखी और निराश हो गईं। दैवयोग से नारद जी शैलराज के पास गये थे। हिमवान् ने देवर्षि को अपनी पुत्री के बारे में बतलाया तो नारद जी पार्वती से मिलने उसके कक्ष में पहुंचे। पार्वती को आशीषः देकर नारद जी बोले— हे काली! मुझे इस समय आप पर बड़ी दया आ रही है। मैं आपके हित के लिए जो वचन कहता हूं उन्हें ध्यानपूर्वक श्रवण करो। तुमने महेश्वर की सेवा तो की थी किन्तु वह तपस्या रहित थी। दूसरे अपनी सेवा का तुम्हें अत्याधिक गर्व हो गया था। इसलिए दीन हितकारी 'शिव' ने तुम्हारे कल्याण के लिए ही कृपा करके तुम्हारे गर्व को चकनाचूर कर दिया है।

हे शिवा! 'महेश्वर' महान् योगी और परम विरक्त हैं। वे भक्त वत्सल हैं, इसलिए कामदेव को भस्म कर देने के पश्चात् भी तुम्हें छोड़ दिया है। अतएव अब तुम अधिक तपस्या करके भगवान शंकर का आराधन करो तथा सुसंस्कृत होओ भगवान शंकर तुम्हें निश्चय ही अंगीकार करेंगे। मैं जानता हूं कि तुम हठपूर्वक महेश को ही अपना पति बनाओगी, किसी अन्य को नहीं। नारद जी के वचन सुनकर शैल पुत्री ने कहा कि हे देवर्षि! आप

तो संसार में समस्त प्राणियों का हित करने वाले हैं [illegible]

मुस्कराने लगी।

भावार्थ यही है कि ऐसे ओढ़र दानी से भी कुछ न लिया तो मनुष्य जन्म पाने को धिक्कार है। प्रस्तुत पुस्तक में भगवान् शंकर की उपासना को विधि सहित लिखा गया है। पुराने साधकों के साथ-साथ नये साधक भी इससे लाभान्वित्त होंगे ऐसी आशा है। इस पुस्तक में उपासना प्रणाली का यौगिक दिग्दर्शन किया गया है। श्रद्धा और विश्वासपूर्वक की गई प्रत्येक साधना इच्छित एवं अनुकूल परिणाम देती ही है।

ग्राम पो० भटाली
जि० फरीदाबाद १२१००४

—सत्यवीर शास्त्री

की सेवाराधना करने के लिए मंत्र का उपदेश कीजिए। अच्छे गुरु के बिना संसार में कोई क्रिया सिद्धि को प्राप्त नहीं होती ऐसी सनातन श्रुति है। नारद जी ने कहा हे शिवे ! पञ्चाक्षरी मन्त्र 'नमः शिवाय' सर्वश्रेष्ठ और अद्‌भुत प्रभाव वाला है। नियमपूर्वक शिवस्वरूप का मन में ध्यान करती हुई जब तुम इस मंत्र राज का जप करोगी तो शीघ्र शिव तुम पर प्रसन्न होंगे। हे साहिब ! 'शंकर' तप से ही प्राप्त हो सकते हैं। तप का प्रभाव ध्रुव सत्य है इसमें कुछ भी अन्यथा नहीं है।

नारद जी के वचन सुनकर शैल सुता ने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि कठोर-से-कठोर तप करूंगी। पार्वती ने अपने माता-पिता से आज्ञा लेकर वन में कठोर तपोव्रत धारण कर लिया। एकमेव शिवतत्त्व में प्रीति रखने वाली शिवे घोर-घोरतर-घोरतम तप शिवजी की प्राप्ति के लिए करने लगी, यहां तक कि आहार का भी त्याग कर दिया। पार्वती की ऐसी घोर तपस्या थी कि उसने चीर वल्कधारी, जटाजूट से युक्त शिवजी का ही चिन्तन करते हुए अपने तप द्वारा महातापस मुनियों को भी जीत लिया था।

पार्वती की कठोर तपश्चर्या को देखने एक समय स्वयं जटाजूटधारी शंकर जी ब्रह्मचारी ब्राह्मण का छद्मवेश बनाकर आये। पार्वती ने फल पुष्पादि से उनका अर्चन सत्कार किया। जब पार्वती से उन्हें उसके तप करने का उद्देश्य ज्ञात हुआ तो भोले भण्डारी बोले—हे देवि ! इतने काल तक तुम से बातचीत करने से मेरी तुम्हारी मित्रता हो गई है। मैं मित्रता के नाते तुमसे कहता हूं कि तप करके तुम बड़ी भूल कर रही हो। भूत-भावन शिव के साथ जो तुमने विवाह का संकल्प लिया है यह सर्वथा अनुचित है।

यह तो हीरे को त्यागकर कांच को ग्रहण करने के समान है। स्वर्ण को त्यागकर पीतल को ग्रहण करना चाहती हो। रेशमी वस्त्रों को त्यागकर चर्म पहनना चाहती हो। तुम्हारा यह कार्य ऐसा ही है जैसे कोई देवताओं की संगति को त्यागकर असुरों को अपना ले। उत्तमोत्तम देवों को त्यागकर शिव पर अनुराग करना कहां की अकलमन्दी है।

थोड़ा मन में विचार करो कि कहां तुम्हारा सुकुमार सौन्दर्य और कहां गंजेड़ी-भंगेड़ी, श्मशानवासी, जटाजूटधारी, भूतपति महादेव। जहां तुम्हारे

पिता के घर सुन्दर मधुरवाजों की ध्वनि आती है वहां महादेव के यहां डमरु, सिंगी और गाल बजाने की ध्वनि। महेश की न तो जाति-पाति का पता है न मां-बाप का उनके पार्षद भूत-प्रेत हैं, दरिद्र इतने हैं कि पहनने को कपड़े तक नहीं हैं, बाघम्बर (बाघ का चर्म) धारण करते हैं। सवारी बैल की है, दिगम्बर रहते हैं। उनमें न तो विद्या है न शौचाचार, सदा अकेले रहते हैं। उस मण्डमाल धारी-विरागी के साथ तुम्हें कौन-सा सुख मिलेगा।

पार्वती की सहनशक्ति ने जवाब दे दिया। वे इससे अधिक महेश्वर की निन्दा न सुन सकीं और भड़क कर बोलीं—बस-बस ब्राह्मण देवता रहने दो, मैं और कुछ सुनना नहीं चाहती। मैं यह भली-भांति जान गई हूं कि तुम 'शिव' के विषय में कुछ भी नहीं जानते। यही कारण है कि जो जी में आ रहा है बके जा रहे हो। तुम ब्रह्मचारी नहीं हो, ऐसा प्रतीत होता है कि कोई धूर्त छद्मवेश धर कर आ गया है। क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि शिव निर्गुण है व दयालु होने के कारण ही सगुण रूपधार लेते हैं? ऐसी अवस्था में उनकी जाति क्या होगी। जब वे सबके आदि कारण हैं तब उनके माता-पिता का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

सृष्टि के उत्पन्नकर्त्ता वे स्वयं हैं, अतएव उनकी शक्ति को कौन जान सका है? वे ही अनादि-अनन्त-नित्य-निर्विकार-अज-सर्वज्ञ अविनाशी-सर्वोपरि, सर्वगुणाधार-सर्वशक्तिमान सनातन देव हैं। और तुम कहते हो कि वे विद्याहीन हैं। क्या बता सकते हो कि ये सारी विद्याएं कहां से आई? तुम मुझे शिव को छोड़कर अन्य देवता को वरण करने को जो कह रहे हो। उन्हें शिव से बड़ा बतला रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि उन्हें देवत्व की प्राप्ति भोलेनाथ की कृपा का ही फल है।

हे ब्राह्मण! तूने जो शिव की निन्दा की है इससे मुझे महान् क्रोध उत्पन्न हो गया है। तू शिव के सच्चे स्वरूप को नहीं पहचानता। मैंने तेरी अर्चना एक ब्राह्मण के नाते जो की थी मुझे उसका भी पछतावा है। अरे दुष्ट! तूने यह बिलकुल मिथ्या बात कही थी कि मैं शिव को जानता हूं। पार्वती के वचनों को सुनकर ब्रह्मचारी वेशधारी महेश्वर कुछ कहने को हुए तो पार्वती ने अपनी सखी को कहा—हे सखि! इस नीच ब्राह्मण को यहां से हटा दो क्योंकि यह फिर कुछ शिव द्रोह की बातें करेगा। मैं इस

और अधिक शिवनिन्दा करने का अवसर नहीं देना चाहती। भगवान शिव की निन्दा करने वाला तो महान् पापी होता है किन्तु उनकी निन्दा सुनने से भी पाप लगता है।

जो शिव सेवक हैं उनके द्वारा शिव निन्दक का वध कर दिया जाना चाहिए, हां यदि दुर्भाग्य से निन्दक ब्राह्मण हो तो वह अवध्य है, किन्तु उसका भी त्यागकर देना ही धर्म है। इसलिए मैं चाहती हूं कि इस स्थान को त्यागकर कहीं अन्यत्र चलें ताकि इस मूर्ख से फिर कभी भाषण करने का अवसर ही न आये। पार्वती के ऐसे वचन सुनकर शिव ने वैसा ही रूपधार लिया जिस रूप का निरन्तर ध्यान शैल सुता किया करती थीं। पृथ्वी की ओर निहारती पार्वती से शिव बोले—हे अनघे! मुझे छोड़कर अब तुम कहां जा रही हो। मैंने तुम्हारी भली प्रकार परीक्षा ले ली है। हे शिवे! मैं तेरी अनुपत दृढ़ भक्ति से विशेष रूप से प्रसन्न हूं तू जो चाहे वर मांग ले। तुझे अब कोई भी वस्तु अदेय नहीं है।

परम प्रसन्न पार्वती शिव के दिव्य स्वरूप का दर्शन कर कृत-कृत्य हो गई। आनन्द विभोर होकर तथा लज्जा से नीचे की ओर मुखकर के शिव से प्रार्थना करने लगीं। पार्वती ने महेश्वर से कहा—हे देवेश! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, मुझ पर कृपा करना चाहते हैं तो मुझे अंगीकार कर लीजिए। पार्वती की इच्छा पूर्ण हो गई उन्हें शिव के साक्षात दर्शन हो गये। मात्र दर्शन ही नहीं, शिव ने पार्वती का पाणिग्रहण भी कर लिया।

साम्ब सदा शिव की लीलाएं अपरम्पार हैं वे दया कर जिनको अपनी लीलाओं का रहस्य जानते हैं वह ही जान सकते है। उनकी कृपा बिना तो देवी-देवताओं और मुनियों तक को भी भ्रम हो जाया करता है फिर साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या? वास्तव में योगिराज शिव हैं बड़े 'आशुतोष' अपने भक्तों पर शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं। रहस्य को जान-कर निष्काम प्रेम भाव से भजने वालों पर प्रसन्न होते हैं इसमें तो कहना ही क्या है? सकाम भाव से अपना मतलब साधने को जो अज्ञानपूर्वक साधना करते हैं उन पर भी आप रीझ जाते हैं। जरा-सी भक्ति करने वाले पर ही इनके हृदय का दयासागर उमड़ पड़ता है इसीलिए आपको भोले भण्डारी कहते हैं।

शिवरात्रि व्रत-महात्म्य

फाल्गुन कृष्ण पक्ष में जिस दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी पड़ती हो उस दिन शिवरात्रि का व्रत करना चाहिए। जब इस दिन सोमवार या रविवार पड़े तो यह महान् शुभ का देने वाला व्रत कहा गया है।

शिव पुराण में इसके महात्म्य के सम्बन्ध में एक व्याध की कथा का वर्णन आता है। कैलाश पर्वत पर विराजमान शिव को प्रसन्न देखकर ब्रह्मा जी विष्णु जी और जगदम्बा पार्वती ने परमेश से पूछा था कि—हे शिव! आप किस व्रत से सन्तुष्ट होकर भोग और मोक्ष दोनों को दिया करते हैं। इस प्रकार सबके और विशेष रूप से विष्णु जी द्वारा किये गए इस प्रश्न को सुनकर भगवान शंकर ने उत्तर दिया था—हे देववृन्द! भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान करने वाले मेरे यूं तो विविध व्रत हैं, किन्तु उन सब में दशव्रत मुख्य हैं। वेदों के पारगामी जावाल आदि ऋषियों ने भी यही दशव्रत प्रमुख कहे हैं।

इन दशव्रतों को प्रत्येक द्विजाति को करना उचित है। हे विष्णु! उपरोक्त व्रतों से भी शिवरात्रि का व्रत बहुत अधिक बलवान होता है अतएव भोग-मोक्ष दोनों फल प्राप्त करने की इच्छा वालों को यह व्रत अवश्य ही करना चाहिए। शिवरात्रि व्रत से अधिक मनुष्य मात्र का हित करने वाला अन्य कोई साधन नहीं है।

हे विष्णो! यह व्रत सकाम तथा निष्काम मनुष्यों के चारों वर्णों तथा चारों आश्रमों, स्त्री-पुरुष, बालक-वृन्द सभी के लिए धर्म का श्रेष्ठ साधन माना गया है। हे केशव! शिव चतुर्दशी के दिन प्रातः काल के समय से लेकर जो-जो भी कर्त्तव्य पालन करने चाहिए उन्हें अब मैं तुमसे कहता हूं। धर्मरत बुद्धिमान मनुष्य को प्रातः काल में शिवरात्रि के दिन के सानन्द [illegible] आलस्य का त्याग करते हुए स्नानादि नित्य कर्म को

करना चाहिये। नित्य कर्म के सांग सम्पन्न होने पर शिवालय में जाकर विधान से भगवान शिव का पूजन करे। अन्त में नमस्कार करके निम्नोक्त संकल्प करे।

हे देवाधिदेव! हे नीलकण्ठ! आपको मेरा शत-शत प्रणाम है। मैं आपके इस शिवरात्रि व्रत को करने की सदिच्छा रखता हूं। हे देवेश! मेरी प्रार्थना है कि आपके प्रभाव से मेरा यह व्रत निर्विघ्न पूर्ण हो जाए काम, क्रोधादि महाशत्रु मुझे पीड़ा न दें। इस रीति से संकल्प करके पूजन की समस्त सामग्री एकत्रित करे और शास्त्रों में प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगों की सुरम्यस्थल में स्थापना करनी चाहिए।

हे विष्णो! शिव के श्रेष्ठ भक्तों को किस प्रकार प्रत्येक प्रहर में (महाशिव रात्रि को) विशेष पूजन करना चाहिए उसे कहता हूं। पहले प्रहर में संस्थापित पार्थिव शिवलिंग का अनेक उपचारों में परम भक्ति से अर्चन करे। सर्वप्रथम पांच कृत्यों से शिव का पूजन करे प्रत्येक वस्तु के मंत्र से उसे शिव को समर्पित करे। पूजन के द्रव्यों के समर्पण के पश्चात् जलधारा छोड़नी चाहिए। इस समय एक माला का जप 'ॐ नमः शिवाय' इस परम विख्यात मंत्र का करे। इसी पंचाक्षरी मंत्र से निर्गुण एवं सगुण स्वरूप शिव का पूजन करना चाहिए।

शिव का पूजन सुन्दर चन्दन अखण्डित अक्षत एवं काले तिलों से करना उचित है। कमल के एक सौ दल और कनेर के पुष्प अर्पित करे। शिव के आठों नाम (भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, महान, भीम, उग्र, ईशान) से फूल चढ़ावे यथा—'श्री भवाय नमः' इत्यादि। प्रथम प्रहर में बुद्धिमान साधक को पकवान सहित नैवेद्य अर्पण करना चाहिए। अर्घ, श्रीफल, विल्व, नारियल चढ़ाकर अन्त में ताम्बुल समर्पित करे। तदन्तर नमस्कार और ध्यान करके पंचाक्षारी मंत्र का जप करे। तथा विसर्जन करे (विसर्जन हर प्रहर की पूजा के पश्चात् करे)।

दूसरे प्रहर में प्रथम प्रहर की अपेक्षा द्विगुण मंत्रों का जाप करना चाहिए बिजौरा नींबू का अर्घ्य तथा खीर का नैवेद्य अर्पण करना चाहिए। तीसरे प्रहर में पूर्वंत कर्म करे, पुष्प आक के अर्पण करे, अनार का अर्घ्य तथा [illegible] नैवेद्य देतथा कपूर से शिव की आरती करके पहले से

द्विगुण मंत्र जप करे। चतुर्थ प्रहर की पूजा भी पूर्वत सात धान्यों शंख, पुष्प और विल्व पत्रों से शिव का अर्चन करे। अनेक प्रकार के मिष्ठानों का नैवेद्य दे या उड़द के बने पकवान का नैवेद्य दे। केला की गैर का या विविध फलों के रस से अर्घ्य अर्पण करें इसके पश्चात् पहले से द्विगुण मंत्र का जप करे। उसके पश्चात् उत्सव का समारोह अरूणोदय तक करे।

भुवन भास्कर के उदय होने पर स्नान करके पुनः शिवार्चन करे तथा यथाशक्ति ब्राह्मण, संन्यासियों को भोजन कराके भेंट देकर सन्तुष्ट करे तथा शिव को प्रणाम कर पुष्पांजलि समर्पित करे तथा निम्न रूपेण प्रार्थना करे।

हे कृपानिधे ! हे शिवजी ! मैं आपका हूं, आपके ही प्राणों तथा चित्त वाला हूं यही समझकर जो उचित हो सो करें। हे भूतनाथ ! मुझ सेवक के द्वारा अज्ञानवश पूजन तथा जप आदि किया गया है वह आपकी कृपा से पूर्णता को प्राप्त हो। इस परम पावन व्रत से जो भी उत्तम फल मिलता है, उससे आप समस्त सुख देने वाले मुझ पर प्रसन्न हों। हे महादेव ! मैं यही चाहता हूं कि मेरे कुल में सर्वदा आपका भजन पूजन होता रहे। मैं कभी भी ऐसे वंश में न रहूं जहां आपके नाम का संकीर्तन न होता हो।

इस प्रकार से ब्राह्मणों से भी आशीर्वाद ले तथा शिवजी का विसर्जन करे। इस प्रकार मे जो भी भवगान शम्भु व्रत-पूजन आदि करते हैं उन से मैं कभी दूर नहीं रहा करता। ऐसे भक्तों को मुझे कुछ भी अदेय वस्तु नहीं होती। यदि बिना कुछ श्रम के भी यह परम श्रेष्ठ व्रत किया गया हो उससे भी मोक्षपद की प्राप्ति अवश्य होती है—इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

व्याध की कथा

पुराने समय में बहु-कुटुम्बी, अति बलवान एक गुरुद्रुह नामक भील वन में रहा करता था। वह सर्वदा ही हत्या आदि पाप-कर्मों को किया करता था। वन में मृगों का शिकार करना तथा वहां आते-जाते लोगों के धन

का अपहरण कर लेना उसका नित्य का काम था। उसने बचपन से लेकर युवावस्था तक कोई भी शुभ कार्य नहीं किया था। इसी रीति से वन में रहते उस दुरात्मा के दिन व्यतीत हो रहे थे। इसी प्रकार एक समय शुभ शिवरात्रि का पर्व आया किन्तु उसको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं था।

वह शिव चतुर्दशी को अपने परिवार वालों की उदर पूर्ति के लिए वन में आखेट को गया। वह तमाम दिन मारा-मारा फिरा किन्तु दैवयोग से उसे कोई भी शिकार नहीं मिला। जब सूर्य अस्ताचलगामी हो गया तो उसे बड़ी चिन्ता हुई और वह शिकार न मिलने से बड़ा दुःखी हुआ। उसने मन में सोचा कि अब क्या करूं ? कहां जाऊं ? बड़े खेद की बात है कि आज मुझे कुछ भी भोजन का साधन नहीं मिला। मैं अपने वृद्ध माता-पिता, पुत्र तथा गर्भवती स्त्री को क्या खिलाऊंगा ? अतः मैं खाने का प्रबन्ध किए बिना घर को कैसे लौटूं ? ऐसा विचार करके वह भील एक सरोवर के तट पर जा बैठा।

उसने अपने मन में विचार किया कि यहां अवश्य ही कोई-न-कोई जीव जल पीने आवेगा तो मैं उसी का शिकार करके घर को लौट जाऊंगा। यह सब सोचकर वह जल का पात्र भरकर एक बेल के वृक्ष पर चढ़ गया। उस बेल वृक्ष के नीचे एक शिवलिंग स्थापित था। वह भील मन में विचार करते हुए बैठा था कि कब कोई जीव आवे और कब मैं उसका शिकार करूं। जब रात्रि का प्रथम प्रहर बीता तो एक हिरनी प्यास से व्याकुल हुई सरोवर पर आई। उस मृगी को देखकर व्याध को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उसने उस मृगी का वध करने को अपने धनुष पर बाण चढ़ाया। धनुष पर तीर को साधने के चक्कर में कुछ बेलपत्र और जल नीचे शिवलिंग पर गिर गए और प्रथम प्रहर का शिवार्चन अनजाने में सम्पन्न हो गया।

इधर उसके धनुष की ध्वनि को सुनकर और एक भील को वध के लिए तत्पर देखकर मृगी अत्यन्त भयभीत हुई और व्याध से कहने लगी—हे व्याध ! तुम्हारी क्या करने की इच्छा है ? मृगी की बात सुनकर भील कहने लगा—आज मेरा समस्त कुटुम्ब भूखा है मैं तुम्हारा वध करके उनकी क्षुधा पूर्ति करूंगा। व्याध का भीषण स्वरूप और उत्तर सुनकर

हिरनी मन में विचार करने लगी कि प्राणों पर संकट की इस घड़ी में मैं क्या करूं और कहां जाऊं ? फिर कुछ विचार कर बोली—आज महान् अनर्थ करने वाले मेरे इस शरीर से यदि आपको कुछ भी सुख मिले तो इससे अधिक मेरा और क्या पुण्य होगा। इस लोक में उपकार करने वाले प्राणी का जितना पुण्य होता है उसका वर्णन सौ वर्ष में भी नहीं किया जा सकता।

मेरी केवल आपसे एक प्रार्थना है कि इस समय मेरे सब बच्चे अपने स्थान में अकेले हैं मैं उन्हें अपनी भगिनी या स्वामी को सौंप आऊं तब मैं आपके समीप आऊंगी और आप मेरा वध कर लेना। हे वनचर ! आप मेरे इस वचन को मिथ्या न समझें। मैं निश्चित रूप से वापिस लौटूंगी। सत्य के प्रभाव से यह भूमि स्थित है, सत्य के प्रभाव से सागर और जल-धारा स्थित है। अर्थात् सत्य में ही सब कुछ स्थित है। उस मृगी की प्रार्थना सुनकर भी जब व्याध नहीं माना तो मृगी बहुत डर गई और अत्यन्त विनीत होकर बोली—हे व्याध ! आपके समक्ष मैं शपथ लेकर कहती हूं कि मैं अपने वचन का पालन करूंगी। वेदों के बेचने वाले ब्राह्मणों और त्रिकाल संध्या न करने वालों को जो पाप लगता है, काम में आसक्त हुई स्त्रियों को अपने स्वामी की आज्ञा न मानने से जो पाप लगता है, धर्म को तोड़ने वाले, छल करने वाले को जो पाप लगता है मैं भी उसी पाप की भागी बनूं यदि वापिस न लौटूं तो।

इस प्रकार बहुत-सी शपथ खाकर जब वह संयत हुई तो व्याध बोला कि जाओ मैं विश्वास करता हूं। अब जल पीकर प्रसन्न हो हिरनी स्वघर को चली गई, इधर बिना नींद के व्याध ने शिवरात्रि का प्रथम प्रहर व्यतीत कर लिया। कुछ काल के पश्चात् मृगी की दूसरी बहन उसको खोजती हुई जलपान करने को वहां आ पहुंची। इस दूसरी मृगी को देखकर व्याध ने वध करने को जैसे ही धनुष खींचा कि कुछ बेलपत्र और जल पुनः शिवलिंग पर गिर गये। इस प्रकार अनजाने ही व्याध द्वारा द्वितीय प्रहर का शिव पूजन हो गया जो कि महान् सुखों का देने वाला है। धनुष की आवाज सुनकर हिरनी ने भील को देखा और पूछा कि महाशय आपका क्या करने का इरादा है ? इस दूसरी मृगी को भी मनुष्यों की भांति बोलते

देखकर व्याध को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा कहा कि तुम्हारा आखेट कर परिवार की उदर पूर्ति करूंगा।

मृगी बोली—हे व्याध ! मैं परम धन्य हूं, और मेरा देह धारण करना आज सफल हो गया क्योंकि मेरे इस नाशवान् शरीर से आपका थोड़ा-सा उपकार होगा किन्तु मेरी एक प्रार्थना है कि मैं गर्भिणी हूं, अतः मुझे न मारो, मैं प्रसव करने के बाद आपके समीप आ जाऊंगी तब मेरा वध कर लेना, ऐसा मैं शपथपूर्वक कहती हूं। मृगी की यह बात सुनकर व्याध बोला कि तेरी यह बात मैं नहीं मान सकता, मैं तेरा वध अवश्य ही करूंगा।

व्याध के ऐसे कठोर वचन सुनकर मृगी बोली—हे व्याध ! यदि मैं अपना वचन भंग करूं अर्थात् लौट कर न आऊं तो मेरा समस्त पुण्य चला जाएगा। जो-जो पाप उस मनुष्य को लगते हैं जो स्वपत्नि को छोड़कर अन्य से भोग करता है, वेद धर्म को छोड़कर अन्य मार्ग को अपनाता है, विष्णु भक्त बनकर शिव की निन्दा करता है, जो माता-पिता की दाह तिथि को बिना ब्राह्मण भोजन के खाली जाने देता है, मैं भी उन्हीं पापों में लिप्त हूं यदि आपके पास वापिस न लौटूं तो। भील ने मृगी की शपथपूर्वक बातें सुन कर कहा कि तू चली जा। तब मृगी परम प्रसन्न होकर और जल पीकर चली गई। अब तक उस व्याध को बिना निद्रा लिए दूसरा प्रहर भी व्यतीत हो गया।

काफी समय गुजरने पर भी जब हिरनियां वापिस नहीं लौटी तो व्याध उनकी खोज करने को तत्पर हो गया। इतने में ही उसने सरोवर की ओर आते एक परम पुष्ट हिरन को देखा। उस पुष्ट शरीर वाले हिरन को देखकर व्याध ने धनुष पर तीर चढ़ा लिया इससे कुछ बेलपत्र और जल नीचे शिवलिंग पर गिर गए, इस प्रकार अनजाने में ही व्याध द्वारा तीसरे प्रहर का शिवार्चन सुसम्पन्न हो गया। धनुष के शब्द को सुनकर मृग ने कहा—हे भील ! यह तुम क्या करना चाहते हो। भील बोला कि तेरा वध करके अपने परिवार के लिए आहार की व्यवस्था करूंगा।

भील के ऐसे वचन सुनकर हिरन परम प्रसन्न होकर व्याध से बोला—मैं अत्यन्त बड़भागी हूं क्योंकि मेरे इस नाशवान् शरीर से आपके

परिवार की तृप्ति होगी। जिसके शरीर से किसी का उपकार नहीं बनता उनका जीवन धारण कहना ही व्यर्थ है। ऐसा प्राणी परलोक में नरकगामी होता है। मेरी आपसे मात्र एक प्रार्थना है कि मैं अपने बच्चों और पत्नियों को धीरज बधाकर शीघ्र आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा। मृग के इस कथन से व्याध को बड़ा आश्चर्य हुआ। शिवार्चन हो जाने से उसका मन कुछ निर्मल हो चुका था सो व्याध बोला—हे मृग! जो-जो भी जीव यहां पानी पीने आए थे वे सभी तेरी भांति कहकर चले गए किन्तु वापिस नहीं लौटे। हे मृग! उसी भांति तू भी प्राणों को संकट में देखकर मिथ्या भाषण का सहारा ले रहा है, तू ही बता! इस प्रकार मेरा जीवन कैसे चलेगा?

इस पर मृग बोला—हे व्याध! मैं जो कुछ कहता हूं उसे आप ध्यान-पूर्वक सुनें। मैं कभी भी असत्य नहीं कहता। सत्य के प्रभाव से ही यह चराचरमय समस्त ब्रह्माण्ड स्थित है। जिसकी वाणी में असत्यता रहती है उसका सारा पुण्य नष्ट हो जाता है। संध्या के समय मैथुन करने से, झूठी गवाही देने से, शिवरात्रि को भोजन करने से, अमानता में ख्यानत करने से, समर्थ होकर भी उपकार न करने से अभक्ष्य का भक्षण करने से जो-जो भी पाप होते हैं उनका मैं भागी बनूं यदि मैं वचन देकर वापिस न लौटूं।

हिरन के ऐसे विद्वतापूर्ण वचन सुनकर व्याध बोला—चले जाओ किन्तु शीघ्र लौटना। मृग प्रसन्नतापूर्वक जलग्रहण करके चला गया। जब वह सकुशल अपने निवास स्थान पर पहुंचा तो वहां हिरनियां और हिरन परस्पर प्रणाम करके बोले कि व्याध के साथ ऐसे-ऐसे हमने वचन कहे हैं। सबने एक स्वर में कहा कि हमें अवश्य ही व्याध के पास जाना चाहिए ताकि सत्य का पालन हो सके। इस प्रकार वे अपने बच्चों को धीरज बंधाने लगे।

जो बड़ी हिरनी थी वह बोली—हे मृग! आपके बिना ये बच्चे किस प्रकार यहां रह सकेंगे। हे पति देव! सर्वप्रथम मैंने ही वहां पहुंचने का वचन दिया था, इसलिए मुझे अवश्य ही वहां जाना चाहिए। आप दोनों

यहां ही रहकर बच्चों की देख-भाल करो। बड़ी मृगी के ऐसे वचन सुनकर

छोटी मृगी बोली—मैंने प्रसव कर लिया है। मैं सबमें छोटी भी हूं, इसलिए मैं जाती हूं आप रहें। मृगियों की बातें सुनकर मृग बोला कि तुम दोनों यहां ही रहो, क्योंकि माता के बिना बच्चे कैसे रह सकते हैं मैं अकेला ही व्याध के पास जाता हूं।

मृग की बातें सुनकर उसकी दोनों मृगियां अत्यन्त दु:खी हुईं और साथ चलने का आग्रह करने लगीं तथा बोलीं—पिता-भाई-पुत्रादि सभी सीमित वस्तुएं देते हैं किन्तु पति अपरिमित वस्तु देता है 'अमित दान भर्ता वैदेही' इसलिए स्त्रियों के लिए पति ही परम गति है। पति के बिना नारी का जीवन शून्य है। वैधव्य में जीना स्त्रियों के लिए धिक्कार जैसा है अत: हम भी आपके साथ चलेंगी। इस प्रकार आपस में मंत्रणा करके तीनों ने बच्चों को पड़ोसियों को सौंपा तथा वन में व्याध के पास वचन पालन हेतु चल दिए। इधर बच्चों ने विचार किया कि बिना मां-बाप के हम बच्चों का जीवन बेकार है अत: हमें भी चलना चाहिए। जो कुछ हमारे माता-पिता पर बीतेगी वही हम पर भी बीते।

उस समय सबको आया देखकर व्याध मन में बड़ा प्रसन्न हुआ तथा आखेट के लिए अपने धनुष पर बाण को चढ़ाया तभी कुछ बेलपत्र और जल नीचे शिवलिंग पर गिर गए तथा अनजाने में व्याध द्वारा चतुर्थ प्रहर का शिव पूजन भी सम्पन्न हो गया। इस पूजन के प्रभाव से व्याध के समस्त पापों का समूल विनाश हो गया।

उसी समय मृगियों और मृग ने बच्चों सहित व्याध के समीप जाकर कहा—हे व्याध श्रेष्ठ! अब आप हमारा वध कर लें और अपने परिवार का पोषण कर हमारी देहों को सार्थक करें। उन मृग वृन्दों के शब्दों को सुनकर भील को बड़ा विस्मय हुआ। शिव पूजन के प्रभाव से उसे देव-दुर्लभ ज्ञान प्राप्त हो चुका था। उसने मन में विचार किया कि ज्ञान रहित इस पशु योनि में पैदा ये मृग धन्य हैं जो अपनी इस नश्वर देह से परोकार करने को तत्पर हैं और एक मैं हूं जो कि सदैव अन्य प्राणियों को पीड़ा देकर अपना शरीर पुष्ट कर रहा हूं। मैंने अब तक बहुत से पाप कर्म किए हैं। मैं नहीं समझता मेरी क्या गति होगी।

इस प्रकार ज्ञान के उदय से सद्विचार वाले उस व्याध ने धनुष से

बाण को हटा लिया और कहने लगा—हे मृगवरो ! तुम सब सत्य निष्ठ हो। परम धन्य हो, अब आप सब अपने निवास स्थान को जाओ। जब भील ने मृगवरों से ऐसे वचन कहे तो भगवान शंकर अति प्रसन्न हुए तथा भील को शास्त्रनुमत अपना पूज्य स्वरूप दिखलाया। शिवजी कृपापूर्वक भील के शरीर को स्पर्श करते हुए बोले—मैं तेरे जागरण और व्रत से अत्यन्त प्रसन्न हूं तू इच्छित वर मांग ले।

व्याध बोला—हे भगवान ! मुझे सभी कुछ प्राप्त हो गया है, यह कह वह शिवजी के चरणों में गिर पड़ा। भगवान शंकर ने अतिशय प्रीति से भरकर उसका नाम गुह रखा और उसे दिव्य वर दिए। शिव बोले—हे व्याघ्रर्प ! अब तू मनोऽभिलषत भोगों को उपभोग करके भृंगेश्वर में अपनी राजधानी बना। हे व्याध ! तेरी वंश वृद्धि कभी नाश को प्राप्त नहीं होगी। त्रेता में भगवान रामचन्द्र जी स्वयं तुम्हारे घर पधारेंगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। मेरे भक्तों पर श्रीराम विशेष कृपा वाले होंगे। तुम उनकी सेवा में चित्त लगाकर मोक्ष को प्राप्त करोगे।

इसी समय मृगवरों ने भी साक्षात् शिव के दर्शन प्राप्त किए वे भी शिव कृपा से मोक्ष को प्राप्त हो गए। भील ने अज्ञान से शिव पूजन किया, विवशता में उससे व्रत बन पड़ा इतने पर ही जब वह मोक्ष को प्राप्त हो गया तो जो भक्ति भाव से इस व्रत को करेंगे और सद्गति को पालेंगे तो इसमें आश्चर्य क्या। अपना कल्याण चाहने वालों को यह व्रत अवश्य ही करना चाहिए। यह सब व्रतों में श्रेष्ठ होने के कारण ही व्रतराज कहा जाता है।

व्रत उद्यापन

इस परम शुभ शिवरात्रि का व्रत चौदह वर्ष तक करना चाहिए। त्रयोदशी के दिन एक बार भोजन करके चतुर्दशी को निराहार रहकर शिव का पूजन-अर्चन करना चाहिए। किसी शिवालय या घर में ही दिव्य मण्डल की रचना करके इसके मध्य में सुन्दर लिंग तो भद्र मण्डल को बनावे या सर्व तो भद्र चक्र का निर्माण करना चाहिए। प्रजापत्य के नाम से वस्त्र-फल एवं दक्षिणा सहित घट स्थापन करे। वहां पर बाम भाग में पार्वती

और दक्षिण भाग में शिव की प्रतिमा स्थापित करे सविधि उनका पूजन करे। उस मण्डप में ही योग्य ऋत्विजों और आचार्य को वरण करे तथा उनकी आज्ञा से शिवार्चन करे।

इसी प्रकार समस्त रात्रि जागरण पूजन प्रति प्रहर निरालस्य होकर करता रहे। फिर प्रातः काल शिवार्चन करके हवन करे। अपनी सामर्थ्यानुसार ब्राह्मण भोजन करावे तथा दक्षिणा दे। वरण किए आचार्य और ऋत्विजों को (सपत्नि) वस्त्र भूषण आदि देकर सन्तुष्ट करे तथा प्रार्थना करे कि भगवान शिव मुझ पर प्रसन्न हों।

हे शिव ! भक्ति भावना से मैंने यह व्रत किया है यदि इसमें कुछ न्यूनता रह गई हो तो वह आपकी कृपा से पूर्ण हो और पुष्पांजलि समर्पित करके विसर्जन करें।

प्रदोष व्रत-महात्म्य

भारतीय आस्तिक समाज में शिवजी की प्रसन्नता के लिए प्रदोष व्रत किया जाता है प्रत्येक माह की दोनों पक्षों की त्रयोदशी को यह प्रदोष व्रत करने का विधान है। शिव पुराण में इस व्रत को बहुता महिमामय बतलाया गया है। प्रदोष व्रत की महिमा धर्मगुप्त की कथा के माध्यम से शिव पुराण में दी गई है।

विदर्भ प्रदेश में सत्यरथ नामक एक परम शिव भक्त, पराक्रमी और तेजस्वी राजा हो गए हैं। उन्होंने अनेक वर्षों तक राज्य किया था, परन्तु किसी दिन भी शिव पूजन को नहीं छोड़ा था। वे नित्य नियमपूर्वक शिव का अर्चन किया करते थे। एक बार शाल्व देश के राजा ने कुछ अन्य राजाओं को साथ लेकर विदर्भ नरेश पर चढ़ाई कर दी। एक सप्ताह तक घमासान युद्ध होता रहा। अन्त में दैव गति से राजा सत्यरथ को पराजय का मुंह देखना पड़ा, वे राज्य छोड़ कर भाग निकले। शत्रुओं ने नगर में प्रवेश कर लिया। यह समाचार जब रानी को विदित हुआ तो वे भी चुपके से महल से निकल पड़ी और जंगल का रास्ता लिया। रानी राज महलों के सुख को छोड़कर नाना प्रकार के कष्टों को सहन करती हुई जंगल में बढ़ी जा रही थीं। उनको नौ मास का गर्भ था। एक दिन उन्हें जंगल में प्रसूति वेदना हुई और एक पुत्र रत्न को जन्म दिया। पुत्र के जन्म देने के पश्चात् उन्हें प्यास ने अत्यन्त विचलित कर दिया और वे पुत्र को छोड़कर जंगल में पानी की तलाश में बढ़ीं। दैव योग से एक सरोवर पर जब वे अपनी प्यास बुझा रही थी उन्हें एक मगर ने निगल लिया।

ईश्वर की गति निराली है, जहां जंगल में बच्चा अकेला पड़ा था वहां से उमा नामक एक विधवा ब्राह्मणी का गुजर हुआ। ब्राह्मणी की गोद में उसका एक साल का लडका था। ब्राह्मणी ने उस अरण्य में एक नवजात

शिशु को पड़े देखा। जब वह उसके समीप गई तो उसने देखा कि बच्चे का नाल तक नहीं काटा गया था, यह देखकर उस बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वह अपने मन में विचार करने लगी कि यह किस का बच्चा है, इसे यहां इस हालत में कौन छोड़ गया है? उसने इधर-उधर उस बच्चे की माता को खोजा किन्तु वह अभागी किस प्रकार मिलती, वह तो मगर द्वार निगली जा चुकी थी। ब्राह्मणी सोचने लगी कि यदि मैं इस बच्चे को अपने साथ ले जाऊं तो लोग मुझे लज्जित करेंगे। मैं विधवा हूं, कहेंगे कि अरण्य में जाकर बच्चे को जंन कर ले आई है, मिथ्या ही किसी दूसरे का कह रही है। यदि न ले जाऊं तो इसे जंगली जीव अपना ग्रास बना लेंगे। इसकी रक्षा न करने पर मैं पाप की भागी बनूंगी। जब ब्राह्मणी ऐसा विचार कर रही थी तथा द्विधा में थी कि क्या करूं? उसी समय भगवान शंकर वहां प्रकट हो गए और ब्राह्मणी से बोले—यह राज पुत्र है, इस बच्चे को तू अपने साथ लेजा तथा अपने बच्चे के समान इसका पालन कर। लोगों में इसकी बात को प्रकट मत करना, इससे तेरे भाग्य का उदय होगा। भगवान् ऐसा कहकर अन्तर्धान हो गए।

ब्राह्मणी के पुत्र का नाम शुचिव्रत था तथा राज पुत्र का नाम उसने धर्मगुप्त रखा। ब्राह्मणी बहुत निर्धन थी। दैव योग से उसको एक दिन महर्षि शाण्डिल्य के दर्शन हुए। महर्षि के मुख से प्रदोष व्रत करके शिव पूजन की महिमा सुनकर उस विधवा ने महर्षि शाण्डिल्य को शिव पूजन की विधि पूछी। महर्षि ने ब्राह्मणी की श्रद्धा और आग्रह को देकर पूजन का बिधान बतलाया और उससे बोले—तुम अपने दोनों पुत्रों से प्रदोष व्रत कराओ। इस व्रत के प्रभाव से वे अपनी अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त कर लेंगे।

महर्षि के वचनों को सुनकर ब्राह्मणी ने अपने दोनों पुत्रों को उनके चरणों में डाल दिया और नतमस्तक होकर बोली—हे ब्राह्मण! आज मैं आपके दर्शन करके धन्य हो गई हूं। मेरे यह दोनों पुत्र आपकी शरण में हैं। यह शुचिव्रत मेरा पुत्र है और यह राज पुत्र धर्मगुप्त मेरा धर्म पुत्र है। आप इन दोनों को अपना सेवक जानकर इनका उद्धार करिए। उस ब्राह्मणी को शरणागत जानकर मुनिश्रेष्ठ ने दोनों बच्चों को दीक्षा देकर उन्हें शिव पूजन की विधि बतला दी। तदनन्तर वे दोनों बालक ब्राह्मणी

सहित महर्षि को प्रणाम करके शिव मन्दिर में चले गए।

उस दिन से वे दोनों बालक ऋषि की दीक्षानुसार नित्यनियम शिवाराधन एवं प्रदोष काल में शिव पूजन करने लगे। उन दोनों को शिवाराधन करते हुए चार मास व्यतीत हो गए। धर्मगुप्त की अनुपस्थिति में एक दिन शुचिव्रत स्नान करने नदी पर गया और जल में क्रीड़ा करने लगा। दैव योग जल में धन पूरित एक बड़ा कलश शुचिव्रत को दिखलाई पड़ा। उस धन के भरे कलश को पाकर ब्राह्मण पुत्र शुचिव्रत बड़ा प्रसन्न हुआ। वह कलश को सिर पर उठा कर जलदीर घर की ओर बढ़ चला।

कलश को भूमि पर रख कर शुचिव्रत अपनी माता से बोला, हे माता! भगवान शिव की लीला तो देखो। उस लीला धारी ने मुझे इस घड़े के रूप में अपार सम्पत्ति दी है। शुचिव्रत की माता घड़े को देखकर अचम्भा करने लगी और उसने धर्मगुप्त को पास बुलाकर कहा—बेटे मेरी बात ध्यान-पूर्वक सुनो, तुम दोनों इस धन को आधा-आधा बांट लो।

माता की बात सुन कर शुचिव्रत अति प्रसन्न हुआ। लेकिन राज पुत्र धर्मगुप्त नें इस कार्य में अपनी असहमति प्रकट की और कहा—हे माता! यह धन भाई शुचिव्रत को उसके पुण्य से प्राप्त हुआ है मैं इसमें किसी प्रकार का हिस्सा लेना नहीं चाहता। क्योंकि मानव अपने किए कर्म का फल स्वयं भोगता है।

शिव पूजन करते हुए उन दोनों को एक ही घर में एक वर्ष बीत गया। एक दिन धर्मगुप्त, शुचिव्रत के साथ वन विहार करने के लिए गया। वे दोनों वन में काफी आगे निकल गए। उस वन में उन्हें सहस्त्रों गन्धर्व कन्याएं क्रीड़ा करती दिखलाई पड़ीं। ब्राह्मणी पुत्र उन कन्याओं को देखकर धर्मगुप्त से बोला—भाई यहां पर कन्यायें विहार कर रही हैं इसलिए हम दोनों को आगे न जाकर वापिस लौट चलना चाहिए। गन्धर्व कन्यायें मन को शीघ्र मोह लेती हैं इसलिए भी हमें इनसे दूर रहना चाहिए।

राज पुत्र धर्मगुप्त ने ब्राह्मणी पुत्र शुचिव्रत की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और विहार करती गन्धर्व कन्याओं के पास अकेला ही निर्भीक भाव से चला गया। उन गन्धर्व कन्याओं में प्रधान सुन्दरी कन्या धर्मगुप्त [illegible] कामदेव के समान सुन्दर को देखकर मन में विचार करने लगी कि यह

रूपवान कुमार कौन है ? उस कुमार से परिचय प्राप्त करने के उद्देश्य से उस परम सुन्दरी ने अपनी सखियों से कहा—सखियों ! तुम सब निकट के वन में वहां से चम्पक, अशोक, मौलसिरी आदि के ताजे फूल तोड़ लाओ। तब तक मैं तुम्हारी यहां ही प्रतीक्षा करूंगी।

उस सुन्दरी के ऐसे वचन सुन कर सब गन्धर्व कन्यायें वहां से चली गईं। उनके चले जाने के पश्चात् वह सुन्दरी धर्मगुप्त को स्थिर दृष्टि से देखने लगी। उन दोनों में प्रेम का संचार होने लगा। गन्धर्व कन्या ने धर्मगुप्त को आसन देकर बैठने को कहा। प्रेमावेग के कारण वह सुन्दरी राज पुत्र के सहवास के लिए अत्यन्त व्याकुल हो उठी तथा धर्मगुप्त से पूछने लगी—हे कामदेव के समान सुन्दर कुमार ! आप कहां के रहने वाले हैं ? आप यहां किस कारण पधारे हैं ?

गन्धर्व कन्या की बात सुनकर धर्मगुप्त ने कहा—हे सुन्दरी ! मैं विदर्भ के राजा का पुत्र हूं। मेरे माता-पिता दोनों का स्वर्गवास हो गया है। शत्रुओं ने मेरे राज्य को छीन रखा है।

अपना इस प्रकार परिचय देकर धर्मगुप्त ने पूछा—आप कौन हैं ? किस की पुत्री हैं ? इस वन में किस कारण आई हैं ? आप मुझसे क्या चाहती हैं ?

धर्मगुप्त के प्रश्नों के उत्तर में वह सुन्दरी बोली कि मैं विद्रविक नामक गन्धर्व की कन्या हूं। मेरा नाम अंशुमती है। मैं आपको देखकर आपसे बातचीत करने के उद्देश्य से ही सखियों का साथ छोड़कर यहां अकेली रह गई हूं। मैं गान विद्या में सिद्ध हूं। मेरा गाना सुन कर देवांगनाएं भी रीझ जाती हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मेरा और आपका प्रेम बना रहे।

इतना कहकर उस गन्धर्व कन्या ने अपने गले का मुक्ताहार उतार कर धर्मगुप्त के गले में डाल दिया। यह हार ही दोनों के प्रेम का प्रतीक बन गया। अब राज पुत्र बोला—हे सुन्दरी ! तुमने जो कुछ कहा है वह तो ठीक है, किन्तु आप राजविहीन राजकुमार के पास किस प्रकार निर्वाह कर सकेंगी।

राज पुत्र की ऐसी बात सुनकर वह सुन्दरी मुस्करा दी और कहने लगी कि चाहे जो कुछ भी हो मैं अपनी इच्छा से ही आपको पति रूप में पाना

चाहती हूं। आप कृपा करके परसों यहां पधारें मेरी बात कदापि मिथ्या नहीं है।

गन्धर्व कन्या ऐसा कहकर अपनी सखियों के पास चली गई और धर्म-गुप्त भी शुचिव्रत के पास चला आया तथा उसने वहां का सब वृतान्त शुचिव्रत को कह सुनाया। इसके पश्चात् दोनों घर को लौट गए और वहां पहुंच कर सब किस्सा ब्राह्मणी को कहा। उनकी ये बातें सुनकर ब्राह्मणी अति प्रसन्न हुई।

जिस दिन के लिए गन्धर्व कन्या ने आने को कहा था उसी निश्चित दिन धर्मगुप्त शुचिव्रत को साथ लेकर उसी वन में जा पहुंचा। वहां पहुंच कर उन्होंने देखा कि गन्धर्वराज विद्रविक अपनी कन्या अंशुमति के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। गन्धर्वराज ने उन दोनों का अभिनन्दन किया और उन्हें बैठने को सुन्दर आसन दिए। तदपुरान्त विद्रविक ने कहा—: परसों कैलाशपुरी को गया था वहां भगवान शंकर; मां पार्वती के साथ विराजमान थे। उन्होंने मुझे बुला कर कहा कि—पृथ्वी पर धर्मगुप्त नामक युवक राज्यविहीन होकर विचार रहा है। शत्रुओं द्वारा उसके वंश का नाश किया जा चुका है। वह राज पुत्र मेरा परम भक्त है तुम इसकी सहायता करो जिससे वह अपने शत्रुओं को पराजित करके अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर ले।

भगवान शिव की आज्ञा से मैं अपनी पुत्री अंशुमति को आपको सौंपता हूं तथा शत्रुओं के द्वारा हरण किए गए आपके राज्य को वापिस लौटा दूंगा। आप इस कन्या के साथ सुख भोगकर शिव लोक को चले जाएंगे। वहां जाने पर भी मेरी पुत्री इसी देह से आपके साथ रहेगी। इतनी बातें कह कर गन्धर्वराज ने अपनी कन्या का विवाह धर्मगुप्त के साथ कर दिया तथा दहेज में बहुमूल्य रत्न, वस्त्र, हाथी, घोड़े, रथ आदि प्रदान किए। इसके अतिरिक्त दास-दासियां तथा अपनी चतुरंगिनी सेना भी दी ताकि शत्रु को पराजित किया जा सके।

राजकुमार धर्मगुप्त ने शत्रुओं पर हमला करके अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर लिया। मन्त्रियों ने राजकुमार का राज्याभिषेक किया। राज-कुमार सुखपूर्वक राज्य करने लगा। जिस ब्राह्मणी ने उसका पालन-पोषण

किया था उसको राजमाता का पद दिया गया। इस प्रकार प्रदोष व्रत में शिव पूजन के प्रभाव से वह राजपुत्र दुर्लभ पद को प्राप्त हुआ।

प्रदोष काल में या नित्य जो इस कथा का श्रवण करता है वह सभी कष्टों से मुक्त होकर अन्त में परम पद को पा लेता है इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

व्रत एवं पूजन विधि

प्रदोष व्रत करने वाले को दोनों पक्षों की त्रयोदशी को दिन भर भोजन नहीं करना चाहिए। प्रदोष काल वह है सायं काल के बाद और रात्रि आने से पूर्व इन दोनों समय के बीच का काल प्रदोष कहा जाता है। सायं काल जब सूर्य अस्त होने में तीन घड़ी बाकी रहें तो व्रती पुरुष को स्नानादि कृत्य से निवृत होकर स्वच्छ श्वेत वस्त्र धारण करने चाहिएं। इसके पश्चात् सन्ध्यावन्दन करके शिव पूजन प्रारम्भ करना चाहिए। पूजा स्थल को गोमय (गाय के गोबर) से लीप कर शुद्ध कर लेना चाहिए। मण्डप बना कर उसे वन्दनवार से सजाना चाहिए फिर भगवान शिव की स्थापित मूर्ति का ध्यान करना चाहिए।

ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारू चन्द्रावतंसम्।
रत्नाकल्पोज्ज्वालाङ्ग परशुमृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृतिं वसानम्।
विश्व वाद्यं विश बीजं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

बन्धूकसन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।
त्रिशूलधारिणं देवं चारूहासं सुनिर्मलम्॥
कपाल धारिणं देवं वरदाभय-हस्तकम्।
उमया सहितं शम्भुं ध्यायेत् सोमेश्वरं सदा॥

अर्थ—चांदी के पर्वत के समान शुभ्र वर्ण वाले, देदीप्यमान चन्द्र किरणों से युक्त, सुन्दर और चमकीले रत्नों के से वर्ण वाले, हाथ में फरसा, मृग धारण करने वाले, प्रसन्न, अभय मुद्रा वाले, कमल के आसन पर विराजमान, समस्त देवताओं द्वारा पूजित, विश्व के आदि कारण एवं बीज रूप, अपने भक्तों के सभी भयों का विनाश करने वाले, पंचमुख, त्रिनेत्र-धारी भगवान शिव का निरन्तर नित्य ध्यान करना चाहिए।

वन्धूक पुष्पा के समान वर्ण वाले, त्रिनेत्र, भाल पर चन्द्र धारण करने वाले, त्रिशूल धारी, मन्द हास्य युक्त, अत्यन्त स्वच्छ, नरमुण्डधारी, अभय-हस्त मुद्रा वाले, उमा के सहित सोमेश्वर भगवान शिव का ध्यान करें।

ध्यान करते समय मन को एकाग्रचित करके संकल्प करना चाहिए तथा हाथ जोड़कर मन-ही-मन देवाधिदेव भगवान शंकर से निम्न प्रार्थना करनी चाहिए—हे शंकर जी ! आप मुझ पर प्रसन्न होइये, मेरे समस्त पापों का क्षय कर दीजिए। मैं शोक रूपी अग्नि से दग्ध हो रहा हूं, अनेक रोगों से पीड़ित हूं तथा संसार के भय से भयभीत हूं, हे महेश्वर ! आप ऐसे मुझ अनाथ की रक्षा कीजिए। हे पार्वतीश्वर ! देवी के सहित यहां पधार कर मेरी सेवा-पूजा स्वीकार कीजिए।

आह्वान से नमस्कार पर्यन्त षोऽषोपचार पूजन करे। पुष्पों में मन्दार, कमल, कनेर, धतुरा एवं बेलपत्र चढ़ाने चाहिएं। ऋतु फलों का, खीर का, नैवेद्य (प्रशाद) चढ़ावे इनके अभाव में गुड, घी अर्पण करे तत्पश्चात् ॐ नमः शिवाय या नमः शिवाय मन्त्र का जप १० माला का कर दे।

व्रत-उद्यापन

व्रत का उद्यापन करने से पहले दिन गुरु-गणेश पूजन करके घर में या किसी शिवालय में वन्धु वान्धवों सहित कीर्तन करते हुए रात्रि भर जागरण करे। अगले दिन स्नानादि नित्य कर्म से निवृत होकर एक मण्डप का निर्माण करके भगवान शिव एवं भगवती उमा की मूर्ति स्थापित करे उनका विधिवत् पूजन करे तत्पश्चात खीर से हवन करे। अपने आचार्य जो कि वरण किया हो अथवा किसी धार्मिक (सपत्नि) ब्राह्मण को वस्त्रा-लंकार आदि सामर्थ्यानुसार दान दे ब्रह्म भोज करावे। उन्हें दक्षिणा आदि देकर सन्तुष्ट करे।

इस व्रत के करने से मानव के सम्पूर्ण पापों का क्षय हो जाता है। दरिद्रता का नाश होकर व्रती पुरुष धन का लाभ प्राप्त करता है। पुत्र की इच्छा वाले को पुत्र की प्राप्ति होती है। इस प्रदोष व्रत के करने से विद्यार्थियों को विद्या की प्राप्ति होती है धर्मार्थियों को धर्म की, इस व्रत की महिमा का वर्णन असम्भव है।

नित्य कर्म विधि

धर्म पालन ही मनुष्य का परम कर्तव्य है, क्योंकि धर्म की रक्षा करने से स्वयं की रक्षा होती है, और न करने से हानि ही हानि है—

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो यतो धर्मो हतोऽवधीत ॥

महर्षि मनु ने अहिंसा (किसी को किसी प्रकार की पीड़ा न पहुंचाना) सत्यं (सदैव सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग) अस्तेय (चोरी न करना) शौच (बाह्य और आन्तरिक शुद्धि) तथा इन्द्रिय निग्रह (अपनी इन्द्रियों और कामनाओं को वश में करना) इसे ही चारों वर्णों का धर्म बतलाया है। यथा—

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः ॥

मानुष तन को सफल बनाने के लिए हमारा जीवन नियमबद्ध होना आवश्यक है, यही स्वधर्म पालन की नींव है। अतएव नीचे प्रातः काल से रात्रि काल तक में शयन करने तक का पालन करने योग्य लिखे जा रहे हैं।

ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्धयेत धर्मार्थावनुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थं मेव च ॥

अर्थात् मनुस्मति में कहा गया है कि प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में जाग कर धर्म-अर्थ शारीरिक क्लेश और उनके हेतु तथा वेद का तत्त्वार्थ भूत जो परमात्मा है उसका चिन्तन करे।

विष्णु पुरान में ब्रह्ममुहूर्त का लक्षण इस प्रकार बतलाया गया है कि रात्रि के चतुर्थ पहर का जो तीसरा मुहूर्त है यानि जब चार घड़ी रात्रि शेष रहे उस समय का नाम ब्रह्ममुहूर्त है। यह ब्रह्ममुहूर्त ही जागने के लिए शास्त्रों में बतलाया गया है। यथा—

रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः ।
स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने ॥
पंच पंच उषः कालः सप्तपंच चारुणोदयः ।
अष्ट पंच भवेत्प्रातस्ततः सूर्योदयः स्मृतः ॥

अर्थात् सूर्योदय से ५५ घड़ी पहले उषा काल, ५७ घड़ी पहले अरुणोदय, ५८ घड़ी पहले प्रातः काल और इसके बाद सूर्योदय काल माना जाता है। रात्रि के पिछले प्रहर के तृतीय भाग ५६ से ५८ घड़ी तक के समय को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं।

ब्रह्ममुहूर्त में उठने के अनेक लाभ आयुर्वेद ग्रंथों में कहे गए हैं। ब्रह्ममुहूर्त में उठने से शरीर कमल जैसा सुन्दर बनता है, स्वास्थ्य, आयु, बुद्धि, लक्ष्मी और सौन्दर्य की वृद्धि होती है। जिन्हें नव सृजन करना है उनके लिए यही समय उपयुक्त रहता है। इसलिए हमारे धर्माचार्यों ने साधना का सर्वप्रथम नियम ब्रह्ममुहूर्त में उठना बतलाया है। भगवत्स्मरण करने के पश्चात् नीचे लिखे श्लोक को बोलते हुए अपने दोनों हाथों को देखना चाहिए—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती ।
कर मूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम ॥

इस श्लोक में हाथ के अग्र भाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती तथा पृष्ठ भाग में ईश्वर का वास बतलाया है। सत्य भी यही है क्योंकि व्यक्ति हाथों द्वारा ही विद्यार्जन करता है, धनार्जन करता है तथा जपादि साधना, पूजन करके ब्रह्म प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। हस्त दर्शन के पश्चात् भगवान के जिस नाम में श्रद्धा हो उसका स्मरण करना चाहिये। जैसे—

हे जिह्वे रस सारज्ञे सर्वदा मधुर प्रिये ।
नारायणाख्यपीयूषं पिब जिह्वे निरन्तरम् ॥
त्रैलोक्य चैतन्यमयादि देव श्रीनाथ विष्णो भवदाज्ञयैव ।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसार यात्रा मनुवर्तयिष्ये ॥
सुप्तः प्रबोधितो विष्णो हृषीकेशेन यत्त्वया ।
यद्यत्कारयसे कर्मतत्करोमि तवाज्ञया ॥

फिर हाथ-मुह धोने के हेतु शय्या से उठने के लिए पृथ्वी की प्रार्थना नीचे लिखे मंत्र से करे—

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यं पाद स्पर्श क्षमस्व मे॥

अर्थात् हे समुद्र रूपी वस्त्रों वाली, पर्वत रूपी स्तनों वाली, भगवान विष्णु की भार्या पृथ्वी देवी मैं तुझे नमस्कार करता हूं तथा पैरों के स्पर्श के लिए क्षमा प्रार्थी हूं। इस प्रकार क्षमा प्रार्थना करके शय्या त्याग देनी चाहिए और प्रथम मुख शुद्धि के लिए जल से तीन कुल्ली करके तीन बार आचमन करना चाहिए। अंगिरा स्मृति में इसे इस प्रकार कहा है—

उत्थाय पश्चिमे रात्रे तत आचम्य चोदकम्।
मुखशुद्धयर्थं मादौ तु गण्डूषत्रितयं चरेत्॥

आचार प्रदीप में लिखा है कि प्रातः काल में वेदज्ञ ब्राह्मण, गो, मोर, अग्नि, नील कण्ठ और नेवले का दर्शन होना शुभ होता है। मल-मूत्र त्याग करने के लिए यदि कोई असुविधा न हो तो घर से वाहर कहीं दूर चले जाना चाहिए। इसका एक लाभ प्रातः भ्रमण भी हो जाएगा, क्योंकि स्वास्थ्य-लाभ की दृष्टि से प्रातः वायु सेवन बहुत उपयुक्त रहता है। यदि ऐसी सुविधा न हो तो जहां जैसी व्यवस्था हो उसी के अनुसार शौचादि से निवृत होना चाहिए। यज्ञोपवीतधारी को चाहिए कि मूत्र त्याग के समय यज्ञोपवीत को दायें कान पर, शौच के समय बाएं कान पर तथा मैथुन के समय कण्ठ में धारण करे।

मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे वामकर्णके।
उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतिवत्॥

आज के युग में शौचादि के समस्त नियमों का पालन करना सम्भव नहीं है, फिर भी जितना पालन करने में कोई असुविधा न हो उतना तो करना ही चाहिए। शास्त्रों की आज्ञा है कि खड़े होकर मूत्र त्याग करना असभ्यता है। मार्ग में, भसम पर, गोशाला में, जुते खेत में, जल में, चिता पर, पर्वत पर, जीर्ण देव मन्दिर में, विल में और जीवों से युक्त गढ़े में मल मूत्र त्याग नहीं करना चाहिए।

हारीत संहिता में लिखा है—मल त्यागते समय, मैथुन काल में, खून

बहते समय, श्राद्ध और भोजन के समय तया दन्त धावन करते समय किसी से वार्तालाप नहीं करना चाहिए। मल-मूत्र का त्याग करते समय यह मंत्र बोलना चाहिए—

गच्छन्तु ऋषयो देवाः पिशाचा ये च गुह्यका।
पितृभूतगणाः सर्वे करिष्ये मलमोचनम् ॥

शौच से निवृत्त होकर शुद्ध मिट्टी और जल से हाथों को भली प्रकार धोना चाहिए और जल से कुल्ली करनी चाहिए। कुल्ली कब कितनी करनी चाहिए कि बारे में लिखा है कि शौच के बाद बारह बार, मूत्र त्याग के बाद चार बार और भोजन के बाद सोलह बार कुल्ली करनी चाहिए। मनुष्य के अग्रभाग में सब देवता, दाएं भाग में सब पितर और पृष्ठ भाग में सब ऋषि रहते हैं इसलिए सदा अपनी बायीं ओर कुल्ली करनी चाहिए।

इस प्रकार मुख शुद्धि करके दन्त शुद्धि के लिए दन्त धावन करना चाहिए तथा नीचे लिखा मंत्र बोलना चाहिए—

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजा पशु वसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

अर्थात् हे वनस्पते! दीर्घायु, विपुल बल, लोक में निर्मल यश, ब्रह्म-तेज, श्रेष्ठ सन्तति, पशु, धन, वेदाध्ययन, उत्तम बुद्धि और शास्त्रों के पठन धारण करने की शक्ति हमें प्रदान कर।

दन्त धावन के पश्चात् स्नान करना चाहिए। समीप में कोई नदी बहती हो तो उसमें अन्यथा कुएं या नल के ताजे जल से स्नान करना चाहिए। स्नान करने से इन दस गुणों की प्राप्ति होती है, रूप, तेज, बल, पवित्रता, दीर्घायु, आरोग्य, अलोभ, बुरे स्वप्नों का नाश, यश और ऐसा याज्ञवल्क्यस्मृति में लिखा है। यह भी ध्यान करना चाहिए कि भोजन के शीघ्र बाद स्नान करना, रोगावस्था में स्नान करना, अर्धरात्रि में, वस्त्रों के सहित और अनजाने तालाब में स्नान नहीं करना चाहिए। मनुस्मृती में लिखा है—

न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा नातुरो न महानिशि।

न वासोभिः सहाजस्रं नाविज्ञाते जलाशये ॥

स्नान-काल में नीचे लिखे मंत्रों से जल में तीर्थों का आवाहन करना चाहिए—

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नान काले सदा मम॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्म्मदे सिन्धो कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

स्नान क्रिया से निवृत होकर पवित्र वस्त्र धारण करना चाहिए और मस्तक पर चन्दनादि से तिलक करना चाहिए, क्योंकि मस्तक पर तिलक धारण करके ही सन्ध्यादि कर्म करने चाहिएं। अपने इष्टदेव का ध्यान व नाम-स्मरण गुरु द्वारा बताई रीति से करना चाहिए।

क्षौर नियम—शस्त्र के अनुसार सप्ताह में रवि, मंगल एवं शनिवार को, विशेष तिथियों में एकादशी, अमावस्या, चतुदर्शी-पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात-व्रत और श्राद्ध के दिन क्षौर कर्म नहीं करना चाहिए। गर्गादि मुनियों का आदेश है कि निषिद्ध तिथियों में क्षौर कराने पर आयु क्षीण होती है। इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है कि क्षौर करने से क्रमशः रविवार, मंगलवार और शनिवार को १-८ और ७ मास की आयु क्षीण होती है। बुध, सोम, गुरु एवं शुक्रवार को क्षौर कराने का विधान है।

भोजन-विधि—दोनों हाथों, दोनों पैरों और मुख—इन पांचों अंगों को जल से धोकर शुद्ध आसन पर बैठकर अपने सामने भोजन पात्र को रखना चाहिए और दाहिनी ओर जल पात्र। अन्न का आदर करना चाहिए और भोजन करते समय उसमें की किसी वस्तु की निन्दा नहीं करनी चाहिए। भोजन को देखकर हर्ष करना और प्रसन्न होना चाहिए।

भगवद् बुद्धि से अन्न को प्रणाम करके नीचे लिखे मंत्रों का उच्चारण करते हुए अन्न भगवान नारायण को अर्पण करना चाहिए। थाली को दोनों हाथों से ढांपकर यह मंत्र बोलना चाहिए—

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां-लोकां॥ अकल्पयन्॥

अर्थात् परमेश्वर के नाभि से अन्तरिक्ष, सिर से द्युलोक, चरणों से भूमि और कानों से दिशाएं उत्पन्न हुई, इस प्रकार परमेश्वर ने सब लोकों

की रचना की।

ॐ सत्यं त्वर्तेन परिषिचामि नमः मंत्र द्वारा किंचित् जल से अन्न का प्रोक्षण करना चाहिए फिर भोजन पात्र के दाहिनी ओर "ॐ भूपतये स्वाहा" मंत्र बोलकर एक ग्रास (भोजन में से) लेकर पृथ्वी पर आहूति देनी चाहिए "ॐ भुवन पतये स्वाहा" बोलकर दूसरी "ॐ भूतानां पतये स्वाहा" बोलकर तीसरी आहूतिं देनी चाहिए। भोजन के बाद यह तीनों आहूतियों के अन्न को गौ माता को अर्पण कर देना चाहिए।

तदनन्तर "ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा" मंत्र बोलकर जल से एक आचमन करना चाहिए। अब नीचे लिखे मंत्र को बोलकर प्रत्येक मंत्र से एक-एक ग्रास मुख में डाले। "ॐ प्राणाय स्वाहा", "ॐ अपानाय स्वाहा", "ॐ व्यानाय स्वाहा", "ॐ समानाय स्वाहा", "ॐ उदानाय स्वाहा" अब फिर आचमन करके मौन होकर भोजन करना चाहिए। भोजन करने के पश्चात् शुद्ध होकर नीचे लिखे श्लोक को बोलकर अपने दाहिने हाथ को अपने पेट पर फिराना चाहिए। यह क्रिया तीन दफा दोहरानी चाहिए—

अगस्त्यं वैनतेयं च शनिं च वडवानलम्।
आहार परिपाकाय स्मरेद्भीमं च पंचमम्॥

अर्थात् सुखपूर्वक अन्न पचने के लिए भोजन के अन्त में अगस्त्य ऋषि गरूड, शनि,वडवानल और भीमसेन—इन पांचों का स्मरण करना चाहिए।

दिन में भोजन के उपरान्त कभी श्यन नहीं करना चाहिए। महर्षि अत्रि ने कहा है—

दिवा स्वापं न कुर्वीत स्त्रियं चैव विवर्जयेत।
आयुर्हति दिवा निद्रा दिवा स्त्री पुण्यनाशिनी॥

अर्थात् दिवा काल में सोना और स्त्री संसर्ग करना हानिप्रद है, क्योंकि दिन में सोने से आयु क्षीण होती है तथा स्त्री संगम करने से पुण्य नष्ट होते हैं।

दिन में अपने जीविकोपार्जनादि दैनिक व्यवहारों से निवृत्त होकर [illegible] सूर्यास्त के समय सायं साधना आदि करके दीपक की प्रार्थना [illegible]

करनी चाहिए—

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपोज्योतिर्जनार्दनः।
दीपहरतु मे पापं संध्या दीप नमोऽस्तुते ॥
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाम्।
मम बुद्धि प्रकाशञ्च दीप ज्योति नमोऽस्तुते ॥

तत्पश्चात् भोजनादि से निवृत्त होकर भ्रमण, सत्संग, स्वाध्याय आदि करना चाहिए। शयन करने से पूर्व, मुख से पान, शय्या से स्त्री, मस्तक से तिलक तथा गले से पुष्प माला को अलग कर देना चाहिये। सोने से पूर्व नीचे लिखे मंत्र का उच्चारण करके तीन बार ताली बजानी चाहिए और ईश्वर का स्मरण करते हुए सुखपूर्वक सोना चाहिए।

ॐ सर्वभूतनिवारकाय शार्ङ्गाय सशराय सुदर्शनायास्त्रराजाय हूं फट् स्वाहा।

मंत्र जप की साधारण विधि

सर्व मंत्र जप विधि नीचे लिखे अनुसार समझें।

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में नित्यकर्म से निवृत्त होकर शुद्ध जल से स्नान करना चाहिए और शुद्ध वस्त्र पहनकर पूर्व या उत्तर को मुख करके निश्चित आसन पर बैठ जाना चाहिए। बैठने में पद्मासन, स्वास्तिकासन, सुखासन (जैसी सुविधा रहे) आदि से बैठें। फिर आचमन करें निम्न मंत्र बोलते हुए। पहला आचमन—ॐ केशवाय नमः स्वाहा, दूसरा आचमन—ॐ नारायणाय नमः स्वाहा, तीसरा आचमन—ॐ माधवाय नमः स्वाहा और ॐ गोविन्दाय नमः कहकर हस्त शुद्धि कर लें।

प्रथम गुरु स्मरण करें—

ॐ स्वस्ति श्री परम शिवानाथ पादाद्य शेष गुरु पारम्पर्य क्रमेण, स्वगुरुनाथ पादाम्बुजं यावत् तावत् वृणोमि। श्री गुरुभ्यो नमः बोलकर मस्तक झुकाकर प्रणाम करें फिर तत्त्व मुद्रा (सारी अंगुलियों और अंगूठे को एक साथ मिलाने से तत्त्व मुद्रा बनाती है।) से नीचे लिखा न्यास करें—

गुं	गुरुभ्यो नमः	(दाएं हाथ से तत्त्व मुद्रा बनाकर दाएं कन्धे का स्पर्श करे)
गं	गणपतये नमः	बाएं कन्धे का स्पर्श करे
दुं	दुर्गाय नमः	बाईं जंघा का स्पर्श करे
क्षं	क्षेत्रपालाय नमः	दाईं जंघा का स्पर्श करे
पं	परमात्माने नमः	हृदय का स्पर्श करे
सं	सरस्वत्यै नमः	मुख का स्पर्श करे

इसके पश्चात् "ॐ सहस्त्रसार हुं फट्", "ॐ शली हूं फट्", "ॐ तपः सत्यात्मने अस्त्राय फट्"—इन तीनों मंत्रों में से एक मंत्र बोलते हुए दाएं हाथ से बाएं हाथ को अंगुलियों के पर्व से लेकर कोहनी तक स्पर्श करे तथा बाएं हाथ से दाएं हाथ को इसी प्रकार स्पर्श करे। ऊपर वाले मंत्र

बोलने का क्रम इस प्रकार रहेगा कि वैष्णव मंत्र हो तो पहला मंत्र, शैव हो तो दूसरा और अन्य कोई मंत्र हो तो तीसरा मंत्र बोलते हुए उपरोक्त क्रिया करनी चाहिए। तथा यही मंत्र बोलते हुए दाएं हाथ की मध्यमा और तर्जनी द्वारा बाएं हाथ की हथेली पर तीन ताली बजा दे।

दशों दिशाओं में इष्ट मंत्र बोलकर चुटकी बजाकर दिग्बन्धन करना चाहिए। फिर बाह्य भूत शुद्धि के लिए नीचे लिखा मंत्र बोलकर आसन के चारों ओर काले तिल, उड़द आदि लेकर बखेर दे—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता:।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाच: सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे॥

इसके उपरान्त उपासना के अधिकार के लिए श्री भैरव की निम्न मंत्र बोलते हुए आज्ञा प्राप्त करे—

तीक्ष्ण दंष्ट्रम् महाकाय कल्पान्तदहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥

और मन में भावना करे कि भगवान भैरव ने मुझे आज्ञा प्रदान कर दी है। इसके पश्चात् दीपक जलाकर स्थापित करके दीपक को निम्न मंत्र बोलते हुए नमस्कार करे।

भो दीप ! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्ति: स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरोभव॥

इतना करने के पश्चात् अपने इष्ट देव के ध्यान मंत्रों को बोल कर उनका ध्यान करे, संकल्प करे तथा पचोपचार, षोडशोपचार अथवा राजोपचार से पूजन करके मंत्र जप करे।

संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णु-राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्राह्मणों द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बुदीपे भरतखण्डे अमूक स्थाने श्री शालिवाहनशके अमूक सम्वतसरे अमूक अयने अमूक ऋतौ अमूक मासे अमूक पक्षे अमूक तिथौ अमूक वासरे अमूक गोत्रोत्पन्ने अमूक (शर्मा वर्मा गुप्त आदि) [illegible] ममात्मन: श्रुति-स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तार्थं अमूक देव प्रीत्यर्थं पूजनमहं करिष्ये।

हाथ में अथवा आचमनी में जल, अक्षत तथा पुष्प लेकर ऊपर वाला संकल्प बोले (अमूक की जगह तिथि, वार, सम्वत्, नाम आदि का उच्चारण करे) तथा जल को पृथ्वी पर छोड़ दे।

शास्त्रीय पूजा विधान—मंत्र जप से पूर्व जो-जो प्रमुख क्रियाएं की जाती हैं यहां उनका विधान लिखा जाता है। यह विधान लम्बा होने के कारण ऊपर संक्षिप्त साधना विधि लिख दी गई है। मंत्र जप में भू शुद्धि, भूत शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका व वहिर्मातृकान्यास का वड़ा महत्त्व माना गया है, प्रतिदिन जप करने से पूर्व इनका पालन करने से साधक के शरीर एवं वाह्य वातावरण में दिव्यता आ जाती है। 'देवो भूत्वादेवं यजेत्' यानि देवता की उपासना देवता बनकर करनी चाहिए। देवरूप होने के लिए साधक को चाहिए कि इन विभिन्न क्रियाओं का पालन करें तत्पश्चात् मंत्र जप में संलग्न हो।

प्रथम नीचे वाला मंत्र बोलकर देह शुद्धि करे। बाएं हाथ में जल लेकर दाएं हाथ से ढक कर मंत्रोच्चारण करे—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
ये स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यान्तरः शुचिः॥

इस जल को दाएं हाथ की अनामिका और मध्यमा अथवा कुशा से अपने मस्तक पर छिड़के। फिर कूर्म शोधन करे. कूर्म पर पानी या आटे मे त्रिकोण बनाकर "कूर्मायनमः" "ह्रीं आधार शक्ति कमलासनायनमः, "प्रथिव्यैनमः" इन तीनों मंत्रों का क्रमशः उच्चारण करते हुए त्रिकोण पर गंधाक्षत चढ़ाए और निश्चित आसन लेकर बिछा ले। आसन कुशा का हो तो "अनन्तासनाय नमः" बोलकर तीन कुशा आसन पर रख दे, मृगचर्म का हो तो "विमलासनाय नमः" बोलकर तीन कुशा रखे और आसन ऊन का हो तो "पद्मासनाय नमः" बोलकर तीन कुशा आसन पर रखे।

आसन शोधन के लिए—ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य, मेरूपृष्ठं ऋषिः सुतलम् छन्दः, आसने विनियोगः से विनियोग करके दाएं हाथ में जल लेकर नीचे वाला मंत्र बोले और आसन के चारों ओर छिड़क दे।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय माम् देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शास्त्रकारों ने शिखा (चोटी) का बड़ा महत्त्व बतलाया है। सभी शास्त्रीय कर्मों को शिखा बांधकर करने का विधान है। यदि किसी को चोटी न हो तो उसे कुशा की चोटी बना कर अपने दाहिने कान पर पहननी चाहिए। औरतें गीले हाथ से अपने चोटी स्थान को छू लें। नीचे लिखा मंत्र बोल कर शिखा बंधन करने का विधान है।

ॐ चिद्रूपिणी महामाये ! दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजो वृद्धि कुरुष्वमे॥

शिखा की भांति पूजा में तिलक का भी महत्त्व है। संध्या, तर्पण, पूजन आदि से पूर्व तिलक का धारण करना आवश्यक माना गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा है—

स्नानं दानं तपो होमो देवता पितृ कर्म्म च।
तत्सर्वं निष्फलम् याति ललाटे तिलकम् विना॥

अर्थात् ललाट पर तिलक धारण किए बिना स्नान, दान, तप, यज्ञ, देव तथा पितृ कर्म निष्फल जाते हैं अतः द्विज मात्र को तिलक धारण करने के पश्चात् ही संध्या तर्पण आदि कर्म करने चाहिए। तिलक, ललाट, कण्ठ दोनों भुजाओं तथा हृदय पर लगाना चाहिए—

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पाप नाशनम।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिष्ठति सर्वदा॥

भस्म धारण करने के लिए ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः से ललाट पर, ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषं से कण्ठ में, ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् से दोनों भुजाओं पर तथा तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् से हृदय पर—भस्म का तिलक करना चाहिए।

तत्पश्चात् भूत शुद्धि एवं आत्म प्राण प्रतिष्ठा करके प्राणायाम करें। मूलाधार से कुण्डलिनी को श्वास द्वारा ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर मूलाधार में वापिस लाकर स्थित कर दे (यह क्रिया गुरुगम्य है अतः योग्य गुरु के समीप रह कर इस बात का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए)।

साधक को चाहिए कि अपने इष्ट मंत्र को ताम्रपत्र पर अष्ट गंध से लिखे और मंत्र के चहूं ओर कादि-हादि मंत्र लिखकर सम्पुटित कर दे। कादि-हादि विद्या इस प्रकार है। "क ए ई ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं सकल ह्रीं" "ह स क ल ह्रीं ह स क ल ह्रीं सकल ह्रीं" मंत्र की षोडशोपचार से पूजन करे।

प्रत्येक मंत्र के देवता पृथक्-पृथक् होते हैं, इसलिए साधक को चाहिए कि उसने जो मंत्र ग्रहण किया है उस मंत्र के देवता की इसमें भावना करे। इसी को देव प्रतिमा समझ कर श्रद्धा-भक्ति और विश्वास की भावना इसी में मन को लीन कर दें, यही प्रतीकोपासना, सिद्ध हो जाती है। अब पीठ पूजा करे—

ॐ मण्डूकाय नमः, ॐ कालाग्निरुद्राय नमः, ॐ मूल प्रकृत्यै नमः, ॐ आधार शक्त्यै नमः, ॐ कूर्माय नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ वाराहाय नमः, ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ सुधाम्बुधये नमः, ॐ सर्पिः सागराय नमः, ॐ मणिद्वीपाय नमः, ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः, ॐ श्मशानाय नमः, ॐ पारिजाताय नमः, ॐ रत्नवेदिकायै नमः, ॐ मणि पीठाय नमः, ॐ नानामुनिभ्यो नमः, ॐ शिवेभ्यो नमः, ॐ शवमुण्डेभ्यो नमः, ॐ बहु मांसास्थिमोदमान शिवाभ्यो नमः, ॐ धर्माय नमः, ॐ ज्ञानाय नमः, ॐ वैराग्याय नमः, ॐ ऐश्वर्याय नमः, ॐ अधर्माय नमः, ॐ अज्ञानाय नमः, ॐ अवैराग्याय नमः, ॐ अनैश्वर्याय नमः, ॐ आनन्द कन्दाय नमः, ॐ सर्वतत्त्वात्मकपद्माय नमः ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः, ॐ विकारमयं के सरेभ्यो नमः, ॐ पंचाशद्वर्णाढ्य कर्णिकायै नमः, ॐ अर्क मण्डलाय नमः, ॐ सोम मण्डलाय नमः, ॐ महीमण्डलाय नमः, ॐ सत्त्वाय नमः, ॐ रजसे नमः, ॐ तसमे नमः, ॐ आत्मने नमः, ॐ अन्तरात्मने नमः, ॐ परामात्मने नमः, ॐ ज्ञानात्मने नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ आनन्दायै नमः, ॐ ऐं पराय नमः, ॐ परापर्यै नमः।

इस पूजा के पश्चात् अभिषेक करे, ब्रह्मघट की स्थापना करे, ब्रह्म-घट को सागर तथा पवित्र नदियों के जल से भरे, इसमें अश्वत्थ, पंच पल्लव, तुलसी, बिल्व पत्र, केला तथा नारियल के पत्तों से आच्छादित करके दशोपचार पूजा करे फिर रुद्राभिषेक द्वारा मंत्र का अभिषेक करे। इससे मंत्र चैतन्य सिद्ध हो जाता है।

नीचे पंचोपचार, दशोपचार तथा षोडशोपचार लिखे जा रहे हैं।

पंचोपचार—गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य पंचोपचार पूजा में आते हैं।

दशोपचार—पाद्य-अर्घ्य आचमनीय, मधुपर्क, आचमनीय, गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य पूजा दशोपचार कही गई है।

शिव पूजन विधि

ध्यानम्—ध्यायोन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारू चन्द्रवतंसं ।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्ग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।।
पद्मासिनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं ।
विश्ववाद्यं विश्ववीजं निखिल-भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।।
बन्धूक सन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्र शेखरम् ।
त्रिशूल धारिणं देवं चारुहासं सुनिर्मलम् ।।
कपाल धारिणं देवं वरदाभय-हस्तकम् ।
उमया सहितं शम्भूं ध्यायेत् सोमेश्वरं सदा ।।

आवाहनं—आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरोभव ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधोभव ।।

सांगाय, सायुधाय साम्बसदा शिवाय नमः आवाहनं समर्पयामि ।

आसनं—विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वर प्रिय ! ।
आसनं दिव्यमीशान दास्येऽहं तुभ्यमीश्वर ! ।।

सांगाय सायुधाय साम्बसदा शिवाय नमः आसनं समर्पयामि कहके आसन दे ।

पाद्यम्—महादेव महेशान महादेव परात्पर ! ।
पाद्यं गृहाण मद्दत्तं पार्वती सहितेश्वर ! ।।

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि कहकर पाद्य अर्पण करे ।

अर्घ्यम्—त्र्यम्बकेश सदाचार जगदादि-विधायक ! ।
अर्घ्यं गृहाण देवेश साम्ब सर्वार्थदायक ! ।।

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः अर्घ्यम् समर्पयामि कहकर अर्घ्य दे ।

आचमनीयम्—त्रिपुरान्तक दीनार्ति नाशक श्री कण्ठ शाश्वत।
गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदक—कल्पितम्॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः आचमनीयम् समर्पयामि कहकर एक आचमनी जल गिरा दे।

गोदुग्धस्नानम्—मधुर गोपयः पुण्यं पटपूतं पुरुस्कृतम्।
स्नानार्थं देव देवेश गृहाण परमेश्वर!॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः गोदुग्धस्नानम् समर्पयामि कहकर भगवान को गौ के दूध से स्नान करायें।

दधिस्नानम्—दुर्लभं दिवि सुस्वादु दधि सर्वं प्रियं परम्।
पुष्टिदं पार्वतीनाथ! स्नानाय प्रतिगृह्यताम॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि कह कर दधि से स्नान करायें।

घृत स्नानम्—घृतं गव्यं शुचि स्निग्धं सुसेव्यं पुष्टिमिच्छताम्।
गृहाण गिरिजानाथ स्नानाय चन्द्रशेखर!॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः घृत स्नानम समर्पयामि।

मधु स्नानम्—मधुरं मृदुमोहघ्नं स्वरभङ्ग विनाशनम्।
महादेवेदमुत्सृष्टं तव स्नानाय शङ्कर!॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः मधु (शहद) स्नानम् समर्पयामि।

शर्करा स्नानम्—तापशान्तिकरी शीतामधुरास्वाद संयुता।
स्नानार्थं देव देवेश! शर्करेयं प्रदीयते॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः शर्करा स्नानम् समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम्—गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वत्यादि तीर्थानि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि कहकर शुद्ध जल से स्नान करायें।

वस्त्रं—सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।

मयोपापादिते देवेश्वर! गृह्यताम् वाससी शुभे॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः वस्त्रम् समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण पार्वती पतिः ! ॥
सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

गन्धम्—श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुर श्रेष्ठाः चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः गन्धम् समर्पयामि ।

अक्षतान्—अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः शुभ्रा धूताश्च निर्मलाः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ! ॥
सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि ।
(बिना टूटे चावल सात दफा धोये हुए अक्षत कहलाते हैं ।)

पुष्पाणि—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभु ।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ! ॥
सांगय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः पुष्पं च पुष्पमालां समर्पयामि ।

बिल्व पत्राणि—बिल्वपत्रं सुवर्णेन त्रिशूलाकार मेव च ।
मयार्पितं महादेव ! बिल्वपत्रं गृहाणमे ॥
सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः बिल्व पत्राणि समर्पयामि ।

धूपम्—वनस्पति रसोद्भूत गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रति गृह्यताम् ॥
सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः धूप माघ्रापयामि कहकर देवता के सामने अग्नि पर धूप डालें ।

दीपं—आज्यं च वर्ती संयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश ! त्रैलोक्यतिमिरापह ॥
सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्यं—शर्कराघृत संयुक्त मधुरम् स्वादुचोत्तमम् ।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि ।

आचमनीयं—एलोशीर लवङ्गादि कर्पूर परिवासितम् ।

प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण गिरिजापतिः ! ॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः आचमनीयम् समर्पयामि ।

ताम्बुलम्—पुङ्गी फलम् महद् दिव्यम् नागवल्लीदलैर्युतम् ।
ऐलाचूर्णादि संयुक्त ताम्बुलं प्रतिगृह्यताम् ॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः ताम्बुलं समर्पयामि ।

दक्षिणां—हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि ।

आरती—कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः आरार्तिक्यं समर्पयामि वर्तन में कर्पूर जलाकर आरती करे तथा स्तोत्र पाठ करे ।

प्रदक्षिणाम्—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि वै ।
तानि सर्वानि नश्यन्तु प्रदक्षिणां पदे पदे ॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि कह कर शिवजी की आधी प्रदक्षिणा (परिक्रमा) करे इसके लिए शास्त्रीय विधान है ।

एक चण्डया रवेः सप्त तिस्रः कार्याः विनायकः ।
हरेश्चतस्रः कर्त्तव्याः शिवस्यार्धं प्रदक्षिणा ॥

अर्थात् भगवती की एक बार, सूर्य की सात बार, गणेश जी की तीन बार और विष्णु जी की चार बार तथा भगवान् शिव की आधी परिक्रमा करे ।

मन्त्र पुष्पांजलि—नाना सुगन्धपुष्पैश्च यथा कालोद्भवैरपि ।
पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण महेश्वर ! ॥

सांगाय सायुधाय साम्ब सदा शिवाय नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलि युक्तं नमस्कारं समर्पयामि । (आक, धतूरा, कनेर आदि के पुष्प चढ़ावें) पुष्पांजलि समर्पित करने के पश्चात "ॐ अनेन यथाशक्ति कृतेन षोडशोपचार पूजनेन भगवान् श्री साम्ब सदा शिवाय प्रीयताम् नमम् ।" कहकर समस्त पूजन कर्म देवेश को अर्पण कर दे । इतना करने पर निश्चित संख्या का मंत्र जप करे तथा समाप्ति पर जप को भगवान के दाहिने हाथ में समर्पण

करने की भावना करके नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर क्षमा प्रार्थना करे तथा विसर्जन कर दे।

क्षमा-प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व महेश्वर! ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम्।
तस्मात्कारूण्यभावेन रक्षस्व पार्वतीनाथः! ॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्रयमेव च।
आगता सुख सम्पतिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥
मन्त्रहीनं क्रिया हीनं भक्तिहीन सुरेश्वर! ।
यत्पूजितम् मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यदक्षरपद भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत सर्वं क्षम्यातां देव प्रसीद नन्दिकन्धरः! ॥

पार्थिव लिंग पूजन

प्रातः काल अर्थात् ब्रह्ममुहूर्त में उठकर नित्य क्रिया से निवृत्त होकर स्नान करना चाहिए तथा पवित्र वस्त्रों को धारण करना चाहिए, प्रातः संध्योपासनादि के पश्चात् उत्तराभिख होकर नीचे लिखे श्लोक के द्वारा पृथ्वी की पाद वन्दना करके उपरोक्त कार्य (शिवलिंग निर्माण हेतु) के लिए अतीव शुद्ध मृत्तिका को लेना चाहिए—

"ॐ उद्धृतासिवराहेण कृष्णेन शत बाहुना।
मृत्तिकेत्वां प्रगृह्णामि प्रजया च धनेन च।।

मृवाहरण मंत्र—"ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः हराय नमः"

हे पृथ्वी! वराह, कृष्ण, शतबाहु आदि अवतरणों के द्वारा तुम उद्धारित की गई, इसलिए धन, पुत्रादि की कामना से मैं तुम्हारे रज को ग्रहण करता हूं। यह कहकर मन में मृदाहरण मंत्र को बोले और मिट्टी लेकर पवित्र स्थान में रखे तथा नीचे लिखे मंत्र के द्वारा कुछ मिट्टी चारों ओर छिड़क दे और उत्तराभिमुख आसन बिछावे।

"ॐ पृथ्वी त्वयाधृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्॥"

हे पृथ्वी! समस्त जीवों को धारण करने वाली तुम हो और महाविष्णु ने तुम्हें कूर्म, वाराहादि रूपों से धारण किया है। तस्मात् हे देवि! मेरे आसन की संशुद्धि करो। इसके पश्चात् हाथ में जौ और काले तिल लेकर नीचे लिखा मंत्र बोलते हुए अपनी रक्षा के लिए अपने चारों ओर फेंक दे।

"अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूंत संस्थिताः।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥"

भगवान शंकर की आज्ञा से पृथ्वी पर रहने वाले सब अनिष्टकारी

जीव यहां से हट जावें।

इसके पश्चात् नीचे लिखे मंत्र से स्वस्थ चित्त होकर मृत्तिका को विचूर्ण करें।

"सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योन्नताय वै नमः। भवे भवे
नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ ॐ ह्रौं ह्रीं
जूं सः महेश्वराय नमः॥"

मैं यह जानता हूं कि आप क्षण भर में ही प्रकट हो सकते हो। इसलिए हे सद्योजात! हरदम पैदा होने वाले! आपको नमस्कार है। हे भवोद्भव आपको बारम्बार नमस्कार है।

नीचे लिखे मंत्र से मृत्ति को भिगोवे।

ॐ वामदेवाय नमः, ज्येष्ठाय नमः, श्रेष्ठाय नमः, रूद्राय नमः, कालाय नमः, कलविकरणाय नमः, बलविकरणाय नमः, बलाय नमः, बल प्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

अखिल विश्व में सबसे बड़े तथा श्रेष्ठ होने के कारण हे वामदेव! तथा ब्रह्माण्ड में भयंकर (रुद्र) रूप आप ही का है। आप ही काल के भी काल, महाकाल तथा सभी प्रकार की कला तथा बल का विकरण करने वाले हैं, इसलिए आपके ही हे प्रलयंकर! सदा नमस्कार है। जगत् का सम्पूर्ण बल आप ही में अवस्थित है अथवा संसार की समस्त शक्तियों का प्रमथन आप ही के द्वारा हुआ करता है। समस्त प्राणियों के दमन तथा मानसिक विकास की शक्ति आप ही के द्वारा प्राप्त हुआ करती है अर्थात् प्राणीमात्र के उत्थान-अधःपतन का होना आप ही की कृपा पर अवलम्बित है। इसलिए हे सर्वशक्तिमान! शिव आपको सर्वदा नमस्कार है।

नीचे लिखे मंत्र से मृत्तिका को सानै—

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रूद्ररूपेभ्यः॥

उग्र, उग्रतर तथा उग्रतम आदि विश्व के सभी के सभी रूप आपके रूद्र रूप से उत्पन्न हुए हैं। इसलिए सबके आदि कारण आपके रूद्र रूप को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

इस मंत्र से मृत्तिका का पिण्डीकरण करे—

तत्पुरूपाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

उसी एकमात्र पुरुप को सब कुछ जानकर देवों के देव महादेव में अपनी बुद्धि अवस्थित कर केवल भगवान रुद्र को ही मैं प्रेरित करता हूं।

अधोलिखित मंत्र से सुन्दर शिवलिंग का निर्माण करे—

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमे अस्तु सदाशिवोम्॥

विश्व की सभी विद्याओं के स्वामी तथा चराचर सभी जीवों के एकमात्र अधीश्वर तथा ब्रह्मादि भी देवताओं के प्रभु और उनके एकमात्र आराध्य दैवत् पूर्ण ब्रह्म रूप आप ही हैं। इसलिए हे शिव! आप मेरा सर्वदा कल्याण करते रहें।

शिवलिंग बनाकर बाएं हाथ, वेदी, ताम्रपत्र अथवा बिल्वपत्र पर ही अक्षत पुष्प युक्त लिंग की स्थापना अधोलिखित मंत्र से करें—

"ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः शूलपाणये नमः"

लिंग स्थापित करने के पश्चात् नीचे लिखा मंत्र (संकल्प बोलें)—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। श्रीमद्भगवतो महापुरुपस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्यब्रह्मणः द्वितीये परार्धे श्री श्वेत वराह कल्पे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे पुण्य प्रदेशे बौद्धावतारे श्री विक्रमादित्यराज्यतः अमूक संख्याके, अमूक नाम, संवत्सरे अमूकायने अमूक ऋतौ महामङ्गल्यप्रदे मासानां उत्तमे, अमूक मासे, अमूक पक्षे, अमूक तिथौ, अमूक वासरे, अमूक गोत्रो, अमूक शर्मा, वर्मा, गुप्त आदि शुभ पुण्यफल प्राप्ति कामनया पुरुषार्थ चतुष्ट्य प्राप्त्यर्थम्, सर्वारिष्ट-शांत्यर्थम् तथा च सदाशिवं प्रीत्यर्थे पार्थिव पूजनमहं करिष्ये।

"ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः पिणाकपाणये नमः" इस मंत्र का उच्चारण करके अधोलिखित मंत्रों से शिव का आह्वान करे।

कैलासशिखराद्रम्यात्समागच्छ मम प्रभो। पूजां जपं गृहीत्वा च यथोक्त फल दो भव॥ देव देव महादेवं सर्वलोक हितेरतम्। यथोक्त रूपिणं देवं शम्भुमावाहयाम्यहम्॥ सदाषिवेहस्थितोभव।

हे प्रभो! अतिरमणीक कैलास पर्वत से शिव यहां पधार कर मेरे

द्वारा किए हुए जप तथा पूजा को स्वीकार करके अभीष्ट फलों की संसिद्धि के लिए वर देने का अनुग्रह करो। हे देवों के देव महादेव ! सम्पूर्ण जीव-मात्र के कल्यण में सदैव तल्लीन रहने वाले भगवान शंकर के तथाकथित स्वरूप को मैं हृदय से आह्वान करता हूं इसलिए यहां पधार कर यहीं निवास कीजिए।

आह्वान के पश्चात् प्राण प्रतिष्ठापन के लिए नीचे लिखा विनियोग बोलें।

प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्राऋषयः ऋग्यजु:सामच्छंदांसि प्राणाख्यादेवता ॐ बीजाम ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकम् पार्थिवलिङ्ग प्राण-प्रतिष्ठापनार्थे जपे विनियोगः।

प्राण प्रतिष्ठा मंत्र के ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र ऋषि हैं तथा ऋग, युज सामवेद—ये तीनों छन्द हैं उसके प्राण नामक देवता हैं ॐ बीज है ह्रीं शक्ति है एवं क्रौं कीलक है ऐसे महामंत्र को पार्थिव लिग के प्राण-प्रतिष्ठापन के लिए विनियोजित करता हूं।

अब हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मंत्र को बोलते हुए पार्थिव लिग के ऊपर छिड़कता रहे।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः शिवास्य प्राणाः शिवस्य-जीवाः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखेन चिरंतिष्ठन्तु स्वाहा शिव-इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः—इन बीज मंत्रों की शक्ति से शिव का जीव, शिव का प्राण तथा शिव की समस्त ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियां इस पार्थिव लिंग में प्रविष्ट होकर चिरकाल तक सुखपूर्वक अधिवासित रहें। हे शिव ! आप यहां आकर इसी लिंग में निवास कर मेरी पूजा ग्रहण करो।

फिर हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखित मंत्र से प्राण संस्थापन करे।

अस्मिन् सर्वजग्नाथ यावत्पूजां करोम्यहम्। तावत्वं प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन संस्थितिं कुरु।

हे जगत् के स्वामी सदाशिव ! जब तक मैं आपका पूजन करूं तब तक बड़े प्रेम से आप इस पार्थिव लिंग में निवास करें।

इसके पश्चात् एकाग्र चित्त होकर नीचे लिखे श्लोकों से भगवान् शंकर का ध्यान करे—

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्।
रत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात्स्तुममरगणैर्व्याल यज्ञोपवीतम्।
विश्वाद्यं विश्व वन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रम् त्रिनेत्रम्॥

चांदी के पहाड़ की कान्ति के सदृश सुन्दर देह धारण करने के साथ ही जिसने अपने मस्तक पर अतिरम्य चन्द्र खण्ड को भी धारण कर रखा है एवं जिसका समस्त शरीर रत्नादिकों की कान्तिवत् प्रज्वलित हो रहा है तथा जिसने फरसा, मृग, वरद व अभय आदि सुन्दर मुद्राओं से अपने चारों हाथों को सुशोभित कर रखा है और सुन्दर पर्प का यज्ञोपवीत धारण कर पद्मासीन होकर चतुर्दिक् देववृन्दों द्वारा प्रशंसित हो रहा है। ऐसा विश्व का आदिकरण तथा समस्त भयों से दूर करने वाला, तीन नेत्र और पांच मुख वाला सदाशिव समस्त ब्रह्माण्ड द्वारा अर्हनिश वंद्य हो रहा है ऐसे माहेश्वरी रूप का शुद्ध हृदय से मैं ध्यान करता हूं।

इसके पश्चात् अधोलिखित मंत्रों से पार्थिव लिंग का पूजन करे—

ॐ शिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि
ॐ महेश्वराय नमः अर्घ्यं समर्पयामि
ॐ शम्भवे नमः अर्घ्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि

पंचामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु। शर्करा च समायुक्तं
स्नानार्थं प्रतिगृह्यतां

उपरोक्त मंत्र से लिंग को पंचामृत (दूध, दही, घी, मधु, शर्करा) से स्नान करा के नीचे लिखे मंत्र से शुद्धोदक स्नान करावे—

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च। नमः शिवाय च शिवतराय च

ॐ ज्येष्ठाय नमः वस्त्र समर्पयामि
ॐ रुद्राय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि
ॐ कपर्दिने नमः पुनराचमनीयम् समर्पयामि
ॐ कालाय नमः गन्धं समर्पयामि
ॐ कल विकरणाय नमः अक्षतान् समर्पयामि

ॐ बल विकरणाय नमः विल्वपत्र धतुरादि पुष्पाणि समर्पयामि
ॐ वलाय नमः धूपमाघ्रार्पयामि
ॐ बल प्रमथनाय नमः दीपं दर्शयामि
ॐ नील कण्ठाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि
ॐ भवाय नमः ऋतुकालोद् भूत फलादि समर्पयामि
ॐ मनोन्मनाय नमः आचमनं समर्पयामि
ॐ शम्भवे नमः ताम्बुलं समर्पयामि
ॐ त्रिलोकेशाय नमः अभिषेकं समर्पयामि
ॐ शितिकण्ठाय नमः नीराजनं समर्पयामि
ॐ शिवप्रियाय नमः साधुपुण्यार्थे दक्षिणां समर्पयामि
ॐ शम्भवे नमः अन्ते नमस्करोमि

पूजन के पश्चात् नीचे लिए मंत्र से पुष्पांजलि अर्पण करे।

हर विश्वाऽखिलाधार निराधार निराश्रय। पुष्पांजलिमिमांशम्भो गृहाण वरदो भव। ॐ पार्थिवेश्वराय नमः पुष्पांजलि समर्पयामि।

अखिल विश्व के आधार आप ही हैं किन्तु स्वयं बिना किसी आधार तथा आश्रय के सर्वत्र व्याप्त हो इसलिए हे हर! पुष्पांजलि ग्रहण करके मुझे वर दो।

प्रार्थना—रूप देहि जयं देहि भाग्यं देहि महेश्वर।
पुत्रान देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥

हे महेश्वर! आप मुझे रूप विजय सौभाग्य पुत्र पौत्र धन-धान्य आदि समस्त इच्छाओं की पूर्ति करते रहें।

इस प्रकार भगवान् शिव से प्रार्थना करके नीचे लिखे किसी एक मंत्र का यथाशक्ति जप करें। (कम से कम एक माला [१०८ बार])

१. "ॐ नमः शिवाय"

२. "ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः प्रपन्नपारिजाताय स्वाहा"

गुह्यातिगुह्यगोप्त्वं ग्रहाणस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रासादान्महेश्वर ॥

आप गुप्त से भी गुप्त परम गोपनीय हैं, मेरे द्वारा किए जप को स्वीकार करके हे महेश्वर! कृपा करके मेरे सभी अभीष्टों को सिद्ध करिए।

नीचे लिखे मंत्रों से शिवलिंग अष्टादिक स्थित्यावरण पूजा करे—

ॐ शर्वाय क्षिति मूर्तये नमः पूर्वस्याम्
ॐ भवाय जलमूर्तये नमः ईशान्याम्
ॐ रुद्राय तेजो मूर्तये नमः उत्तरस्याम्
ॐ उग्राय वायू मूर्तये नमः वायव्याम्
ॐ भीमाय आकाश मूर्तये नमः पश्चिमायाम्
ॐ पशुपतये यजमान मूर्तये नमः नैर्ऋत्याम्
ॐ महादेवाय सोम मूर्तये नमः दक्षिणस्याम्
ॐ ईशानाय सूर्य मूर्तये नमः आग्नेय्याम्

स्तोत्र

ॐ नमः ॐ काररूपाय वेद रूपाय ते नमः।
आलिङ्गलिङ्ग रूपाय विश्व रूपाय ते नमः॥
नमो मोक्षप्रदे नित्यं तुभ्यं नादात्मने तथा।
नमः शब्द स्वरूपाय रूपा तीतायते नमः॥
त्वं त्राता सर्व लोकानां त्वमेव जगतां पिता।
त्वं भ्राता त्वं सुहृन्मित्रं त्वं प्रियः प्रियरूपधृक्॥
त्वं गुरुस्त्वं गतिः साक्षात् त्वं देवं त्वं पितामहः।
नमस्ते भगवान् रुद्र भास्करामित तेजसे॥
संसार सागरे मग्नं मामुद्धर शिवाऽव्यय।
अनेन पूजनेन त्वं वांछितार्थं प्रदोभव॥
दण्डवत् प्रणतो भूत्वा स्तुत्वा चैव विशेषतः।
एकाग्रः प्रणतो भूत्वा मन्त्रमेत दूदीरयेत्॥
अंगहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं महेश्वर।
पूजितोऽसि महादेव तत्क्षमस्वाम्बिका पते॥
अन्यथासक्त चित्तेन क्रियाहीनेन वा प्रभो।
मनोवाक्काय दुष्टेन पूजितोऽसि त्रिलोचन॥
तत्सर्वं क्षम्यतां देवदासे कृत्वा दयाँमपि।
शरणागतदीनार्त परित्राण परायण॥

ॐ—देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनो बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्यां अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसामभिषिचामि ॥

उपरोक्त मंत्र से शिवलिंग को अभिसिक्त करें तदुपरान्त तिलक धारण करके नीचे लिखे मंत्र को बोलते हुए शिव की परिक्रमा करें—

वृषश्चण्डं वृषश्चैव सोमसूत्रं पुनर्वृषम् ।
चण्डश्चसोमसूत्रश्च पुनश्चण्डं पुनर्वृषम् ॥
यानिकानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे ॥

अब अधोलिखित मंत्रों से क्षमायाचना करें—

आह्वानं न जानामिन जानामि तवार्चनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारूण्य भावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्रयमेव च ।
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

हे देवाधिदेव ! मैं आह्वान पूजन एवं विसर्जन आदि कुछ भी नहीं जानता इसलिए हे हर ! कृपा करके मेरा यह अपराध क्षमा करें बिना मंत्र, बिना क्रिया के एवं बिना भक्तिभाव के जो कुछ पूजा मैंने आपकी की है उसे दया करके हे मेरे देव ! पूर्णता प्रदान करके मेरे द्वारा किए गए पापों को तथा मेरे दारिद्रय को क्षमा करते हुए मुझे सुख सम्पत्ति प्रदान करें ।

अब नीचे लिखे मंत्रों से हाथ में फूल, अक्षत आदि लेकर शिवलिंग पर छोड़कर विसर्जन करें—

उग्रोमहेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक् ।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम् ॥
ईशानः सर्वविद्यानामोंकारो भुवनेश्वर ।
कैलासं गच्छ देवेश पुनरागमनाय च ॥

॥ अनेन यथाशक्ति पूजनेन श्री सदाशिवो देवता प्रसन्नोऽस्तु ॥

महामृत्युञ्जय उपासना

भगवान शंकर को तीन नेत्र वाला कहा गया है और वेद में उनके स्वरूप की उपासना करते हुए कहा है—हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, हम सुगन्धियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले उर्वारुक की तरह मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाएं अमृत से नहीं। यथा—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ यजु० ३।६०॥

तीन नेत्र वाले ईश्वर की उपासना का उद्देश्य है मृत्यु के बन्धन से छुटकारा पा लेना। मृत्यु मात्र शरीर के क्षय हो जाने का नाम नहीं है अपितु इसका तत्त्व से कुछ और अर्थ है। हम साधारणतः इस पंचभौतिक शरीर का आत्मा के साथ संयोग बने रहने पर जीवित रहना मानते हैं और वियोग हो जाने पर मृत्यु होना। जब मानव का स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है तो वह ईथरिक शरीर (छाया शरीर) धारण कर लेता है तथा विभिन्न लोकों में विचरता है। ईथरिक शरीर जब तक पंचभौतिक शरीर में बना रहता है तब तक प्राण वायु का प्रवाह शरीर में चलता रहता है। जैसे-जैसे ईथरिक शरीर का वियोग होता रहता है वैसे-वैसे ही भौतिक शरीर में निर्बलता आती जाती है तथा पूर्ण वियोग हो जाने पर शरीर नष्ट हो जाता है। इसी ईथरिक शरीर के वियोग को (प्राण वायु के संचार न होने को) मृत्यु या शरीर का नष्ट होना कहा जाता है।

मृत्यु का अर्थ जीव का नाश हो जाना कदापि नहीं है बल्कि यह क्रिया ऐसी ही स्वाभाविक है जैसे मनुष्य कपड़ों के फट जाने पर या पुराने हो जाने पर नए वस्त्र धारण कर लेता है। ऐसे ही जीव जर्जर शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेता है। भारतीय तत्त्वज्ञानियों ने जीवन का गहन अध्ययन किया है अर्थात् शरीर के संयोग-वियोग होने की

क्रियाओं का शोध किया है। अपने अनुसंधान से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि जब मानव का यह पंचतत्त्वात्मक शरीर नाश को प्राप्त हो जाता है तब भी जीव का नाश नहीं होता। जीव एक ऐसा अदृश्य गुप्त तत्त्व है जो इस नाशवान शरीर के खत्म हो जाने पर भी वैसा ही बना रहता है। यह पार्थिव शरीर तो जीव का खोल मात्र है। अत: तत्त्व से समझने पर मृत्यु को दु:ख का कारण नहीं है।

वास्तविक तथ्य यह है कि आत्मा और चेतन का जब संयोग होता है तो जन्म होता है और जब वियोग होकर जड़ से सम्बन्ध हो जाता है तो मृत्यु हो जाती है। जगत् के अणु-अणु में चेतन तत्त्व व्याप्त है इसी से सारी सृष्टि का संचालन हो रहा है। अणु-अणु में ईश्वर की उपस्थिति समझकर तथा प्राणिमात्र को उसी का रूप समझ लेना ज्ञान है। इस ज्ञान को व्यवहारिक रूप दे देना जीवन कहलाता है तथा इसके विपरीत व्यवहार मृत्यु। मृत्यु से शरीर नष्ट होता है तथा अज्ञान से चेतना नष्ट होती है और विवेक मृतक अवस्था में पड़ा रहता है। जब-जब मानव मन क्षुद्र विचारों से ग्रसित होता है तब-तब वह मृत्यु की ओर ले जाता है। उच्च विचारों की सुगन्धि ही जीवन की अनुभूति है।

जो जीवन के वास्तविक अर्थ को समझते हैं उन्हें शरीर के वियोग हो जाने का कोई दु:ख नहीं होता, वे मृत्यु से भयभीत होने की अपेक्षा उससे दो-दो हाथ करने को सदैव तत्पर रहा करते हैं। जिनका अन्त:करण ज्ञान की रश्मियों से आलोकित रहता है, उन्हें मृत्यु के कष्ट का कोई अनुभव नहीं होता वे उसका आलिंगन हंसकर करते हैं। अज्ञान के अन्धेरे के साथ दु:ख का गठबन्धन है, प्रकाश के साथ नहीं; अत: मृत्यु को तत्त्व रूप में जान लेने के पश्चात् मृत्यु एक साधारण प्रक्रिया रह जाती है कोई असाधारण घटना नहीं। यदि हम मृत्यु को अमरता में बदलने का प्रयत्न करें तो मृत्यु होने का कोई प्रश्न ही नहीं।

मुकुण्ड मुनि सन्तानहीन थे। सन्तान के न होने से वे सदैव चिन्ता किया करते थे। इस चिन्ता के निवारणार्थ मुनि ने सपत्नी भगवान शिव की आराधना की। भगवान शिव उनकी तपश्चर्या से अत्यन्त प्रसन्न हुए और वर मांगने को कहा। मुनि ने उन्हें पुत्र प्रदान करने की प्रार्थना की।

भगवान शिव बोले—तेजस्वी, बुद्धिमान, ज्ञानी, चरित्रवान पुत्र चाहते हो तो मात्र वह सोलह वर्ष तक जीवित रहेगा। अज्ञानी और चरित्रहीन पुत्र पूर्ण आयु वाला होगा। किन्तु मुनि ने अल्पायु वाला गुणवान पुत्र मांगा। शिव की कृपा से मुनि को गुणवान पुत्र की प्राप्ति हुई।

ऋषि ने अपने सर्वगुण सम्पन्न पुत्र का नाम मार्कण्डेय रखा। शनैः-शनैः उसकी शिक्षा-दीक्षा चलती रही। मृत्यु का समय निकट आता रहा। ऋषि प्रायः यह सोचकर चिन्तित हो जाते। एक दिन पुत्र ने कारण जानना चाहा तो पिता ने उन्हें पूर्ण जानकारी दे दी। मार्कण्डेय को अपनी साधना पर विश्वास था। उन्होंने प्रण किया मैं भगवान मृत्युञ्जय को प्रसन्न करूंगा और पूर्णायु को प्राप्त करूंगा। इस प्रकार बालक मार्कण्डेय विधि-विधान से आशुतोष की उपासना करने लगे। वे लिंग पूजा करके मृत्युञ्जय स्तोत्र का पाठ करते शिव उनकी साधना से प्रसन्न हुए।

सोलहवें वर्ष का अन्तिम दिन आ पहुंचा और काल उनके प्राणों का हरण करने को आ पहुंचा। बालक मार्कण्डेय ने स्तोत्र को पूर्ण करने का आग्रह किया किन्तु मृत्यु के गर्व ने उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। जब काल ने मुनि मार्कण्डेय के प्राण हरण करने चाहे तो भक्तवत्सल भगवान शंकर भक्त को बचाने के लिए लिंग से प्रकट हो गए। उन्होंने काल को ललकारा। यम भगवान से भयभीत होकर चले गए। स्तोत्र की समाप्ति पर प्रसन्न होकर प्रलयंकर ने उन्हें अमरता का वरदान दिया। प्रायः स्मरण के श्लोकों में एक श्लोक यह भी है कि अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम—इन सातों और आठवें मार्कण्डेय को स्मरण करने वाला सौ वर्ष की आयु भोगता है। यथा—

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिर जीविनः॥
सप्तैतान संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्ट मम्।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥

विधि :

प्रातः कृत्य एवं स्नान आदि से निवृत्त होकर शान्त एवं पवित्र स्थान में आसन (कुश का या मृग चर्म, व्याघ्र चर्म) बिछा लें

(पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख) सामने चौकी पर शिव प्रतिमा या लिंग स्थापित कर लें। लिंग पार्थिव भी हो सकता है। फिर आचमन, प्राणायाम, गुरु, गणेश का पूजन करके हाथ में जल, पुष्प, अक्षत लेकर संकल्प करें। संकल्प की एक विशेष भाषा रहा करती है। इसमें संवत्, मास, पक्ष, तिथि, वार आदि का उच्चारण किया जाता है।

संकल्प के पश्चात् विनियोग किया जाता है।

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव कहोलवशिष्ठा ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्दांदि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्री बीजं महामृत्युञ्जय प्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

यह बोलकर हाथ में लिए जल आदि को भूमि पर छोड़ दे। अब ऋष्यादि न्यास करे। न्यास में मंत्रों से सर, मुख, लिंग आदि अंगों का स्पर्श किया जाता है। यह तत्त्व मुद्रा से करे।

ऋष्यादि न्यास :

वामदेवकहोलवशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः शिरसि।
पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्दांसि नमः मुखे।
सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्र देवतायै नमः हृदि।
ह्रीं शक्तये नमः गुह्ये।
श्री बीजाय नमः पादयो।
विनियोगाये नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—नीचे लिखे मंत्र बोलकर न्यास करना चाहिए।

ॐ ह्रीं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा—अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों तर्जनियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करें)।

ॐ ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवयवद्ध तर्जनीभ्या नमः (दोनों अंगूठों से तर्जनियों को)।

ॐ ह्रीं जूं सः भूर्भुव स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा मध्यभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों मध्यमाओं को)।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुव स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्री ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों अनिभिकाओं को)।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः (दोनों अंगूष्ठ से दोनों कनिष्ठिका)।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नि-त्रयाय ज्वलज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों को आपस में मलें)।

हृदयादि न्यास :

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः (तत्त्व मुद्रा से हृदय का स्पर्श करें। तत्त्व मुद्रा हाथ के अंगुलियों और अंगुष्ठ के अग्रभाग को मिलाने से बनती है)।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवयवद्ध शिरसि स्वाहा (तत्त्व मुद्रा से शिर को स्पर्श करें)।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा-शिखायैवषट् (शिखा को स्पर्श करें)।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रीं कवचायहुम् (दाहिने हाथ से बायां कन्धा तथा बाएं से दाहिना कन्धा स्पर्श करें)।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुव स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साम मन्त्राय नेत्र त्रयाय वौषट् (दोनों नेत्रों का स्पर्श करें)।

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुव स्वः मामृतात ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मा रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय अस्त्राय फट् (दाहिने हाथ को बाएं ओर से सिर के चारों ओर घुमाकर बाएं हाथ की हथेली पर तर्जनी और मध्यमा से तीन ताली बजावें)।

अक्षर न्यास :

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः पूर्व मुखे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः पश्चिम मुखे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः दक्षिण मुखे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः उत्तर मुखे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः जां नमः उरसि
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मं नमः कण्ठे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः हें नमः मुखे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुं नमः नाभौ
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः गं नमः हृदि
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः धिं नमः पृष्ठे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः पुं नमः कुक्षौ
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुव स्वः ष्ठिं नमः लिङ्गे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः गुदे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः र्धं नमः दक्षिणोरूमूले
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः वामोरूमूले
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उं नमः दक्षिणोरूमध्ये
ॐ ह्रौं जूं सः भुर्भुवः स्वः र्वा नमः वामोरूमध्ये
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः रूं नमः दक्षिण जानूनि
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः वामजानूनि
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मिं नमः दक्षिण जानुवृत्ते
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः वाम जानुवृत्ते
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्व. नं नमः दक्षिणस्तने
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः धं नमः वामस्तने
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः ना नमः दक्षिणपार्श्वे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामपार्श्वे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्यों नमः दक्षिणपादे
ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मुं नमः वामपादे

ॐ ह्रौं जूं सः भुर्भुवः क्षीं नमः दक्षिण करे

ॐ ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः वाम करे
ॐ ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः मां नमः दक्षिणनासायाम्
ॐ ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृतां नमः वामनासायाम्
ॐ ह्रीं जूं सः भूर्भुवः स्वः तां नमः मूर्द्धि

ध्यान—इनके पश्चात् ध्यान करना चाहिए। नीचे लिखे ध्यान का स्वरूप इस प्रकार है कि मृत्युञ्जय देवता आठ हाथों वाले हैं। उनके ऊपर के दो हाथों में दो कलश हैं। नीचे के दो हाथों से वे सिर पर जल डाल रहे हैं। सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी कलश है और उन्हें गोद में ले रखा है। एक हाथ में रुद्राक्ष और आठवें हाथ में मृग है। वे कमलासन पर विराजमान हैं। उनके सिर पर चन्द्रमा स्थित है एवं निरन्तर अमृत की वर्षा कर रहा है। वे त्रिनेत्र हैं, उन्होंने मृत्यु को जीत लिया तथा उनके वाम भाग में भगवती विराज रही हैं। यथा—

हस्ताम्भोजयुगस्थ कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः।
सिञ्चन्तं करयोर्युगेनदधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ॥
अक्षस्रङ् मृगहस्तमम्बुजगत मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्।
पीयूषार्द्रतनुं भजेसगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम्॥

ध्यान के पश्चात् पूजा करनी चाहिए। पूजा षोडषोपचार या पंचोपचार से करे। कुछ विद्वान पूजा जप के बाद भी करने की बात कहते हैं। सुविधानुसार पहले या बाद में पूजा कर ले। फिर कवच पाठ करे। कवच पाठ के बाद मूल मंत्र का जप करे। मूल मंत्र का सवा लक्ष जप करके उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश ब्रह्मभोज करना चाहिए। मृत्युञ्जय का जप रुद्राक्ष की माला से करना कहा गया है।

यह रोग निवारण, ग्रह क्लेश एवं अपमृत्यु योगों को टालने का अचूक विधान है। लाखों लोगों ने इसे जपकर कार्य सिद्ध किए हैं। कोई भी व्यक्ति इसको श्रद्धाभक्ति सहित जपकर लाभ ले सकता है। जप के साथ-साथ मन में भावना करे कि मैं रोगमुक्त हो गया हूं, मैं प्रसन्न और आनन्दित हूं। अब मुझमें इतनी शक्ति आ गई है कि कोई भी कष्ट मुझे नहीं व्याप सकता।

महामृत्युञ्जय कवचम्

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय कवचस्य श्री भैरवः ऋषिः गायत्री छन्दः श्री मृत्युञ्जयरुद्रो देवता, ॐ बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं हौमिति तत्त्वं श्री चतुर्वर्गफल साधनार्थं पाठे विनियोगः।

चन्द्रमण्डल मध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रते।
तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति॥
ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवोमृत्युञ्जयोमम।
श्री शिवो वै ललाटं च ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः॥
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दी मेऽवताच्छ्रुती।
त्रिलोचनोऽवताद् गण्डौ नासामे त्रिपुरान्तकः॥
मुखं पीयूष घटभृदोष्ठौ मे कृतिकाम्बरः।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं वटुकभैरवः॥
कन्धरां काममथनो गलं गणप्रियोऽवतु।
स्कन्धौ स्कन्द पिता धातुर्हस्तौ मे गिरिशोऽवतु॥
नखान्मे गिरिजानाथः पायादङ्गुलिसंयुतान्।
स्तनौ तारापति पातु वक्षः पशुपतिर्मम॥
कुक्षिं कुबेरवरदः पार्श्वौ मेऽ मारशासनः।
शर्वः पातु तथा नाभि शूलि पृष्ठं ममाऽवतु॥
शिश्नं मे शङ्करः पातु गुह्यं गुह्यक वल्लभः।
कटिं कालान्तकः पायादूरू मेऽन्धकघातकः॥
जागरूकोऽवताज्जानुजंघे मे कालभैरवः।
गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु॥
पादादिमूर्द्धपर्यन्तं सद्योजातो ममाऽवतु।
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः॥
पूर्वेबलविकरणो दक्षिणे कालशासनः।
पश्चिमे पार्वतीनाथः उत्तरे मां मनोन्मनः॥
ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेय्यामग्नि लोचनः।
नैर्ऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः॥

ऊर्ध्वे बलप्रमथने पाताले परमेश्वरः ।
दशदिक्षेषु सदापातु महामृत्युञ्जयश्च माम् ॥
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राण संशये ।
पायादों जूं महारुद्रो देव देवो दशाक्षरः ॥
प्रभाते पातुमाम् ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ।
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्य चेतनः ॥
अर्द्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः ।
सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः ह्रौं मृत्युञ्जयः ॥
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिपुलोकेषु दुर्लभम् ।
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥

महात्म्यम् :

पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधि दैवतम् ।
य इदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयेत्ततः ॥
तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्ट सिद्धयः ।
रणे धृत्वा च देयुद्ध हत्वा शत्रुञ्जयं लभेत् ॥
जयं कृत्वा गृहदेवि सः प्राप्स्यति सुखं पुनः ।
महाभये महारोगे महामारीभये तथा ॥
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत्कवचमादरात् ।
सर्वं तत्प्रशमम् याति मृत्युञ्जय प्रसादतः ॥
धनं पुत्रान्सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसम्पदाम् ।
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः ॥
इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्यतु ।
गोप्यं सिद्धि प्रदं गुह्यं गोपनीयम् स्वयोनिवत् ॥

अब मूल मंत्र का दत्त चित्त होकर जप करना चाहिए ।

अथ मंत्र—"ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्युर्मुक्षीयमामृतात स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ" ।

जप के पश्चात् प्रार्थना बोलकर विसर्जन करें ।

प्रार्थना

गुह्यातिगुह्यगोप्तां त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रासादान्महेश्वर ॥
मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहिमाम् शरणागतम् ।
जन्ममृत्युजरारोगः पीडित कर्म बन्धनैः ॥

अमोघ मृत्युञ्जय स्तोत्रम्

मार्कण्डेय रचित इस मृत्युञ्जय स्तोत्र का जो कोई श्रद्धा और विश्वासपूर्वक पाठ करता है वह मृत्यु से निर्भय हो जाता है ऐसा पद्म-पुराण में वशिष्ठ जी ने कहा है। अनेक साधनों ने इसका पाठ करके लाभ उठाया है। रोग निवृत्ति के लिए इसका प्रयोग अद्भुत और चमत्कारी लाभ देता देखा गया है।

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय स्तोत्र मन्त्रस्य श्री मार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टुप छन्दाः, श्री मृत्युञ्जयो देवता, गौरीशक्तिः मम सर्वारिष्ट-मृत्यु-शान्त्यर्थं, सकलैश्वर्यं प्राप्त्यार्थं च जपे विनियोगः।

ध्यान मंत्र—चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मित मुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं ।
मुद्रापाश मृगाक्षसूत्र विलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् ॥
कोटीन्दु प्रगलत्सुधाप्लुततनं हारादिभूषोज्ज्वलम् ।
कान्तं विश्व विमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत् ॥

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृङ्ग निकेतनम्,
शिञ्जनीकृत पन्नगेश्वर मच्युतानलसायकम् ।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितम्,
चन्द्रशेखर माश्रये मम किंकरिष्यति वैयमः ॥
पंचपादप पुष्पगन्धिपदाम्बुद्वय शोभितम्,
भाल लोचन जात पावकदग्धमन्मथ विग्रहम् ।
भस्मदिग्ध कलेवरं भवनाशनं भवमव्ययं,
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वैयमः ॥

मत्तवारण मुख्य चर्म कृत्तोत्तरीय मनोहरम्,
पङ्कजासन पद्मलोचन पूजिताङ् घ्रिसरोरुहम् ।
देवसिद्धतरङ्गिणी कर सिक्त शीतजटा धरम्,
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्याति वैयमः ॥

कुण्डलीकृत कुण्डलेश्वर कुण्डलं वृषवाहनं,
नारदादि मुनिश्वर स्तुत वैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्तकमाश्रितामर पादपं शमनान्तकम्,
चन्द्रशेखर माश्रेय मम किं करिष्यतिवै व्रमः ॥

यक्षराज सखां भगाक्षिहरं भुजङ्ग विभूषणं,
शैलराजसुता परिष्कृत चारुवाम कलेवरम् ।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वध धारिणं मृगधारिणम्,
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वैयमः ॥

भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं,
दक्ष यज्ञ विनाशिनं त्रिगुणात्मक त्रिविलोचनम् ।
भुक्ति मुक्ति फलप्रदं निखिलायसघंनिवर्हणं,
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वैयमः ॥

भक्तवत्सलमर्जितं निधिमक्षयं हरिदम्बरं,
सर्वभूतपतिं परात्परं प्रमेयमनुत्तमम् ।
भूमिवारिन भूहुताशन सोमपानिलखार्कृति,
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वैयमः ॥

विश्वसृष्टि विधायिनं पुनरेव पालन तत्परं,
संहरन्तमपि प्रपञ्चमशेषलोक निवासनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथ समन्वितम्,
चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वैयमः ॥

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठ मुमापतिम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥
कालकण्ठं कलामूर्ति कालाग्नि काल नाशनं ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥

नीलकण्ठ विरूपाक्षं निर्मलं निरूपद्रवम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगत् गुरुम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
देव देव जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजं ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
गङ्गाधरं महादेवं सर्वाभरणभूषिताम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
अनाथं परमानन्दं कैवल्यपददायिनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥
स्वर्गापवर्ग-दातारं सृष्टि-स्थिति-विनाशकम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥
उत्पत्तिस्थिति संहारकर्त्तारमीश्वरं गुरुम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
मार्कण्डेय कृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
तस्य मृत्युभयं नास्ति नाग्निचौर भयंक्वचित् ॥
शतावर्तं प्रकर्त्तव्यं सङ्कटे कष्टनाशनम् ।
शुचिर्भूत्वा पठेत्स्तोत्रं सर्वासिद्धि प्रदायकम् ॥
मृत्युञ्जय महादेव त्राहिमां शरणागतं ।
जन्ममृत्यु जरारोगैः पीडितं कर्म बन्धनैः ॥
तावतस्त्वद्गत प्राणस्त्वाच्चितोऽहं सदामृड ।
इति विज्ञापय देवेशं त्र्यम्बकाख्य मनुं जपेत् ॥
नमः शिवाय साम्बाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेश नाशाय योगिनां पतये नमः ॥

अमोघ-शिवकवचम्

यह शिव कवच स्कन्दपुराण के ब्रह्मोत्तर खण्ड में वर्णित है। महर्षि ऋषभ ने इस शिव कवच के प्रभाव द्वारा एक राजा को संकट मुक्त किया था। यह कवच सम्पूर्ण विघ्न-बाधाओं एवं पापों का नाशक कहा गया है। यह परम गोपनीय एवं सम्मानीय है एवं इस कवच के प्रभाव से समस्त भय दूर हो जाते हैं। दरिद्री व्यक्ति दरिद्रता से छुटकारा पाकर ऐश्वर्य-सम्पन्न हो जाता है, अल्पायु व्यक्ति इसके पाठ करने से दीर्घ जीवन का लाभ प्राप्त करता है। रोगी व्यक्ति स्मरण करने पर आरोग्यता को प्राप्त होता है। श्रद्धापूर्वक इसको लिखकर धारण करने पर मनुष्य अन्त समय में मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। इसका पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व विनियोग, ऋष्यादि न्यास, कर न्यास, हृदयादि न्यास, त्रिनेत्र भगवान शंकर का ध्यान और मानसोपचार पूजन करना चाहिए।

विनियोग—अस्य श्री शिव कवच स्तोत्र मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री सदाशिव रुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः वं कीलकम् श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम्, सदाशिव प्रीत्यर्थे मम अभीष्ट सिद्ध्यार्थे शिव कवच स्तोत्र जपे विनियोगः।

हाथ में जल, अक्षत, फूल (दाहिने हाथ में) उपरोक्त विनियोगों को बोलकर जल को भूमि पर गिरा दें फिर ऋष्यादि न्यास करे।

ऋष्यादि न्यास—ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्द से नमः मुखे श्री सदाशिव रुद्रो देवतायै नमः हृदि, ह्रीं शक्तये नमः पादयो, वं कीलकाय नमः नाभौ, श्रीं ह्रीं क्लीमिति बीजाय नमः गुह्ये, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्व-

शक्ति धाम्ने इशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ नं रीं नित्य तृप्ति धाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादि शक्ति धाम्ने अघोरात्मने मध्याभ्यां।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्र शक्ति धाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ वां रौं अलुप्त शक्ति धाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठाभ्यां।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ यं रः अनादि शक्ति धाम्ने सर्वात्मने करतलकर पृष्ठाभ्यां।

हृदयादि न्यास—ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ ह्लीं रां सर्वशक्ति धाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्ति धाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ मं रूं अनादि शक्ति धाम्ने अघोरात्मने शिखायैवषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्र शक्ति धाम्ने वामदेवात्मने कवचायहुम्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ वां रौं अलुप्त शक्ति धाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वाला मालिने ॐ यं रः अनादि शक्ति धाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनम् कालकण्ठमरिन्दमम्।
सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥

ध्यानार्थ—जो त्रिनेत्रधारी हैं, जिनकी दाढ़ें वज्र के समान हैं, जिनके कण्ठ में हलाहल पीने से नीला चिह्न शोभायमान है, जो शत्रुभाव रखने वालों को दबाने वाले हैं जिनके सहस्रों हाथ हैं तथा जो अभक्तों के लिए उग्ररूप वाले हैं ऐसे उन गिरिजापति भगवान महेश को मेरा नमस्कार है।

ऋषभ उवाच

अथाऽपरं सर्वपुराण गुह्यं निःशेष-पापौघ-हरं पवित्रम्।
जयप्रदं सर्वविपद् विमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते॥

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिन मीश्वरम्।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षा करं नृणाम्॥
शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्॥

हृत्पुण्डरीकान्तर-सन्निविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत् परानन्दमयं महेशम्॥
ध्यानावधूताऽखिल कर्मबन्धश्चिरं चिदानन्द निमग्न चेताः।
षडक्षरन्यास-समाहितात्मा शैवेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम्॥

श्लोकार्थ—ऋषभ जी कहते हैं कि जो सम्पूर्ण पुराणों में गोपनीय, समस्त पापों के हरने वाला पवित्र, जय प्रदान करने वाला तथा जो समस्त विपत्तियों से छुड़ाने वाला है उस सर्वश्रेष्ठ शिव कवच को मैं तुम्हारे हित के लिए बतलाता हूं। मैं विश्वव्यापी परमेश्वर महादेव को नमस्कार करके मनुष्यों के लिए इस कल्याणकारी कवच का उपदेश करता हूं।

पवित्र स्थल में आसन पर बैठकर और जितेंद्रिय होकर प्रणायाम करे तथा भगवान शंकर का चिन्तन करे। परमानन्दमय भगवान सदाशिव मेरे हृदयकमल के अन्तःकर्णिका में विराजमान हैं; वे सूक्ष्म, अनन्त इन्द्रियों से परे तथा सभी जीवों के आदि कारण हैं ऐसा चिन्तन करे तथा उपरोक्त ध्यान के द्वारा समस्त कर्मबन्धनों का नाश करके चिदानन्द-स्वरूप भगवान शंकर में चित्त को चिरकाल तक स्थिर कर दे, उसके पश्चात् षडक्षर न्यास से स्वयं के चित्त का एकीकरण करके निम्नलिखित कवच के द्वारा अपनी रक्षा करे।

कवच :

मां पातु देवोऽखिल देवतात्मा

संसार कूपे पतितं गम्भीरे।

तन्नाम दिव्यं वर मन्त्रमूलं
धुनोतु मे सर्वं मघं हृरिस्थाम् ॥

गम्भीर संसार कूप में मुझ पतित और अनाथ की सर्वदेव देवेश्वर महादेव जी रक्षा करें। उनका दिव्यनाम जो कि उनके दिव्य मन्त्र का मूल है मेरे आन्तरिक पापों को नष्ट करे।

सवत्र मां रक्षतु विश्वमूर्ति-
ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्म।
अणोरणीयानुरूशक्तिरेक:
स ईश्वर: पातु भयादशेषात् ॥

समस्त संसार ही जिनकी मूर्ति है जो ज्योतिर्मय-आनन्दघन स्वरूप चिदात्मा हैं, वे भगवान शंकर सब जगह मेरी रक्षा करें। जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, महान शक्ति के पुंज, अद्वितीय "ईश्वर" शिवजी मेरा सब भयों से पीछा छुड़ाएं।

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं
पायात् सभूमेर्गिरिशोऽष्ट मूर्ति:।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति
संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्य: ॥

पृथ्वी स्वरूप होकर जिन्होंने समस्त संसार को धारण किया हुआ है वे अष्ट मूर्ति गिरीश पृथ्वी से मेरी रक्षा करें। जो जल रूप होकर जीवों को जीवन प्रदान कर रहे हैं वे महेश्वर मेरी जल से रक्षा करें।

कल्पावसाने भुवनानि दग्धवा
सर्वाणि यो नृत्यति भूरि लील:।
स कालरूद्रोऽवतु मां दवाग्ने-
र्वात्यादिभीतेर खिलाच्च तापात् ॥

कल्प के अन्त में सब भुवनों को तप्त करके विविध लीलाधारी भगवान शंकर आनन्द से नृत्य करते हैं वे कालरुद्र भगवान दावाग्नि आंधी, तूफान, डर एवं समस्त तापों से मुझे बचावें।

प्रदीप्तविद्युत् कनकावभासो
विद्यावराभीति कुठार पाणि:

चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः
प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम् ॥

जिनके देह की कान्ति स्वर्ण और चमकती बिजली के सदृश है तथा जिनके हाथों में विद्या, वर, अभय तथा कुल्हाड़ी शोभायमान है। जो चार मुख वाले तथा तीन नेत्र वाले हैं वे भगवान तत्पुरुष सर्वदा पूर्व दिशा में मेरे रक्षक हों।

कुठार वेदांकुश-पाश-शूल-
कपाल-ढक्काक्ष गुणान् दधानः ।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः
पायाद घोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥

जिन्होंने अपने हाथों में कुल्हाड़ी, वेद, अंकुश, त्रिशूल, फन्दा कपाल, डमरू एवं रुद्राक्ष की माला धारण की हुई है वे भगवान अघोर मेरी दक्षिण दिशा में रक्षा करें।

कुन्देन्दु-शंख स्फटिकावभासो (कुन्देन्दु-शंख स्फटिकावभासो)
वेदाक्षमाला-वरदाभयङ्कः ।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः
सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम् ॥

जिनकी कान्ति, चन्द्रमा, स्फटिक, शंख और कुन्द के समान प्रकाशमान है तथा जिन्होंने वेद, रुद्राक्ष माला, अभय और वरद को धारण किया हुआ है वे महान् प्रभाव वाले त्रिलोचन एवं चतुरानन् भगवान "सद्योजात" पश्चिम दिशा में मेरे रक्षक हों।

वराक्षमाला-भयटङ्कहस्तः,
सरोज-किञ्जल्क-समानवर्णः ।
त्रिलोचनश्चारु-चतुर्मुखो मां,
पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥

रुद्राक्ष माला, टंक, वर एवं मुद्राएं जिनके हाथों में विराजती हैं जो कमल-किंजल्क के सदृश गौर वर्णी हैं, वे त्रिनेत्रधारी, चतुर्मुख भगवान "वाम देव" मेरी उत्तर दिशा में रक्षा करें।

वेदाभयेष्टाकुंश-पाश-टङ्क-
कपाल-ढक्काक्षक-शूलपाणिः ।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मा-
मीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ॥

जो श्वेत आभा से परिपूरित हैं तथा जिनके हाथों में वेद, अभय, वर, अंकुश, टांकी, पाश, कपाल, डमरू, रुद्राक्ष की माला एवं त्रिशूल सुशोभित हैं वे परमप्रकाश अर्थात् प्रकाश के भी प्रकाश भगवान "ईशान" जो कि पांच मुखों वाले हैं ऊपर से मेरी रक्षा करें ।

मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलि-
र्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः ।
नेत्रे ममाऽव्याद् भगनेत्रहारी,
नासां रक्षतु सदा विश्वनाथः ॥

भगवान "चन्द्रमौलि" मेरे सिर की, ललाट की "भालनेत्र" नत्रों की "भगनेत्रहारी" और नासिका की भगवान "विश्वनाथ" सदैव रक्षा करें ।

पायाच्छ्रुती मे श्रुति गीत कीर्तिः
कपोलं व्यात् सततं कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो
जिह्वां सदा रक्षतु वेद जिह्वः ॥

मेरे कानों की "श्रुति कीर्ति", "कपाली" कपोलों की "पंचमुख" मुख की तथा जिह्वा की "वेद जिह्वः" सदैव रक्षा करें ।

कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः
पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु-
र्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ॥

मेरे गले की भगवान नीलकण्ठ, दोनों हाथों की "पिनाकपाणिः" दोनों कन्धों की "धर्मबाहु" तथा मेरे वक्षःस्थल की "दक्षयज्ञ विध्वंशी" सर्वदा रक्षा करें ।

ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा-
मध्यं ममाऽव्यान्मदनान्तकारी ।

हेरम्बतातो मम पातु नाभिं,
पायात् कटी धुर्जटिरीश्वरो मे ।।

मेरे उदर (पेट) की "गिरीन्द्रधन्वा", "मदनजित" मध्य देश की नाभि की "गणेश जी के पिता" तथा भगवान "धुर्जटि" मेरे कटि प्रदेश की रक्षा करें।

उरूद्वयं पातु कुबेर मित्रो
जानुद्वयं में जगदीश्वरोऽव्यात्।
जंघायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात्
पादौ ममाऽव्यात् सुरवन्द्य पादः ।।

मेरी दोनों जांघों की "कुबेर मित्र" दोनों घुटनों की "जगदीश्वर" दोनों पिण्डलियों की "पुंगवकेतु" तथा दोनों पैरों की "सुरवन्द्य चरण" सदैव रक्षा करें।

महेश्वरः पातु दिनादियामे
मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः।
त्रियम्बकः पातु तृतीययामे
वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे।।

"महेश्वर" दिन के प्रथम प्रहर में "वामदेव" मध्य प्रहर में "त्र्यम्बक" तीसरे प्रहर में तथा दिन के अन्तिम प्रहर में भगवान वृषध्वज मेरी रक्षा करें।

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां
गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे।
गौरीपतिः पातु निशावसाने
मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम् ।।

"शशिशेखर" रात्रि के प्रारम्भ में "गङ्गाधर" अर्ध रात्रि में, रात्रि के अन्तिकाल में "गौरीपति" तथा "मृत्युञ्जयो" मेरी सब समय रक्षा करें।

अन्तःस्थितंरक्षतु शङ्करो माम्,
[illegible]

तदन्तरे पातु पतिः पशुनां
सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात् ॥

"शंकर" मकान के भीतर रहने पर, "स्थाणु" बाहर रहने पर, बीच में "पशुपति" तथा "सदाशिव" चहुं ओर से सदा मेरी रक्षा करें।

तिष्ठन्तमव्याद् भुवनैकनाथः
पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः।
वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्ण,
मामव्ययः पातु शिव शयानम् ॥

"भुवनैकनाथ" खड़े हुए, "प्रेमनाथ" चलते हुए, "वेदान्तवेद्य" बैठे हुए तथा शयनकाल में अविनाशी "शिव" सर्वदा मेरी रक्षा करें।

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः
शैलादि-दुर्गेषु पुरत्रयारिः।
अरण्यवासादि महाप्रवासे,
पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः ॥

राह चलते "नीलकण्ठ", "त्रिपुरारि" पर्वतों पर तथा वन वासादि तथा यात्रा के समय उदार शक्ति "मृगव्याधि" मेरी रक्षा करें।

कल्पान्तकाटोप-पटुप्रकोपः,
स्फुटाटट्-हासोच्चलिताण्डकोशः।
घोरारि-सेनार्णव-दुर्निवार-
महाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः ॥

कल्पों के अन्त करने में जिनकी प्रचण्ड क्रोधाग्नि अत्यधिक प्रवीण है। जिनके प्रबल अट्टहास से समस्त ब्रह्माण्ड कम्पायमान् हो उठता हैं वे सागर के समान शत्रु की सेना का निवारण करने वाले "वीरभद्र जी" महान भयों से मेरी सदैव रक्षा करें।

पत्त्यश्व-मातङ्ग-घटावरूथ-
सहस्रलक्षायुत-कोटिभीषणम्।
अक्षौहिनीनां शतमाततायिनां
छिन्द्यान्मृडो घोर कुठार धारया ॥

मुझ पर आक्रमण करने वालों की हजारों, लाखों, करोड़ों

पैदलों-घोड़ों एवं हाथियों से युक्त भीषण सैंकड़ों अक्षौहिणी सेनाओं को भगवान "मृड" अपनी कठोर कुठार की धार से काट फेंके।

निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चि-
ज्र्वलत्त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य।
शार्दूल-सिंहर्क्ष-वृकादि-हिंस्रान्
सन्त्रासयत्वीशधनुः पिनाकः॥

मेरे दस्युदल का प्रलयाग्नि के समान ज्वालाओं से जलता हुआ भगवान "त्रिपुरान्तक" का त्रिशूल नाश करे तथा चीता, रीछ, सिंह, भेड़िया आदि हिंसक जीवों को उनका पिनाक धनुष त्रास दे।

दुःस्वप्नदुश्शकुन-दुर्गति-दौर्मनस्य-
दुर्भिक्ष-दुर्व्यसन-दुस्सह-दुर्यशांसि।
उत्पात-ताप-विषभीतिमसद्-ग्रहार्ति-
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः॥

मेरे सब बुरे स्वप्नों, बुरे शकुनों, दुर्गति, मन की भावना, दुर्व्यसन, अकाल, दुःसह अपकीर्ति, उत्पात सन्ताप, विषभय, ग्रहादि पीडाभय तथा समस्त रोगों का वे जगदीश्वर (संसार के स्वामी) नाश करें।

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकल-तत्त्वात्मकाय सकल तत्त्वविहाराय सकल लोकैककर्त्रे सकल लोकैकभर्त्रे सकल लोकैकहर्त्रे सकल लोकैकगुरवे सकल लोकैकसाक्षिणे सकल निगमगुह्याय सकलवर प्रदाय सकल दुरितार्त्तिभञ्जनाय सकल जगद् भयङ्कराय सकल लोकैक शङ्कराय शशाङ्क शेखराय शाश्वत निजाभासाय निर्गुणाय निरूपमाय निरूपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निस्सङ्गाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निराधाराय नित्यशुद्ध बुद्धपरिपूर्ण-सच्चि-दानन्दाद्वयाय परमशान्त प्रकाश तेजोरूपाय जय जय महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्त भैरव कपाल-मालाधर खट्वाङ्ग-खड्ग-चर्म-पाशांकुश-डमरू-शूल-चाप-बाण-गदा-शक्ति-भिन्दिपाल-तोमर-मूसल-मुद्गर-पट्टिश परशु-परिघ-भुशुण्डी-शतघ्नी-चक्रा-द्यायुध-भीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराल निकटाट्टहास-विस्फारित-ब्रह्माण्ड-मण्डल नागेन्द्र कुण्डल नागेन्द्र हार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय-

त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषभवाहन विभूषपण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल।

महामृत्युभयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभय मुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरान्मारय मारय मम शत्रूनुच्चाऽयोच्चाटय त्रिशूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय वाणैः सन्ताडय सन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूषमाण्ड-वेताल-मारीगण-ब्रह्मराक्षसान् सन्त्रासय सन्त्रासय ममाऽभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाऽऽश्वासया-ऽऽश्वासय नरक भयान्मामुद्धारयोद्धारय सञ्जीवय सञ्जीवय क्षुत्तृड्भ्यांमामाप्यायया प्यायय दुःखातुरं मामानन्द-यानन्दय शिव कवचेन मामाच्छादयाच्छदय त्र्यम्बक सदाशिव! नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

ॐ जिनका वाचक है, सम्पूर्ण तत्त्व जिनके स्वरूप हैं, जो समस्त तत्त्वों में विचरण करने वाले, समस्त लोकों के एकमात्रकर्त्ता और सम्पूर्ण विश्व के एकमात्र भरण-पोषण करने वाले हैं जो अखिल विश्व के एक ही संहारकारी, सब लोकों के एकमात्र गुरु, समस्त संसार के एक ही साक्षी, सम्पूर्ण वेदों के गूढ़ तत्त्व, सबको वर देने वाले, समस्त पापों और पीड़ाओं का नाश करने वाले, सारे संसार को अभय देने वाले, सब लोकों के एक-मात्र कल्याणकारी, चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाले, अपने सनातन प्रकाश से प्रकाशित होने वाले, निर्गुण, उपमारहित, निराकार, निराभास, निरामय, निष्प्रपञ्च, निष्कलंक, निर्द्वन्द्व, निस्संग, निर्मल, गतिशून्य, नित्य रूप, नित्य वैभव से सम्पन्न, अनुपम, ऐश्वर्य से सुशोभित, आधार शून्य, नित्य शुद्ध-बुद्ध, परिपूर्ण, सच्चिदानन्दघन, अद्वितीय तथा परम शान्त, प्रकाशमय, तेजःस्वरूप हैं उन भगवान सदाशिव को नमस्कार है। हे महारुद्र, महारौद्र, भद्रावतार, दुःदावाग्नि-विदारण, महाभैरव-कालभैरव-कल्पान्तभैरव, कपालमालाधारी! हे खट्वाङ्ग, खड्ग, ढाल, फन्दा, अंकुश, डमरू, त्रिशूल, धनुष, बाण, गदा, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर, मूसल, मुग्दर, पट्टिश, परशु, परिघ, भुशुण्डी, शतघ्नी और चक्र आदि आयुधों के द्वारा भयंकर हाथों वाले, हजार मुख और दंष्ट्रा से कराल,

विकट अट्टहास्य से विशाल, ब्रह्माण्ड-मण्डल का विस्तार करने वाले, नागेन्द्र वासुकि को कुण्डल, हार, कंकण तथा ढाल के रूप में धारण करने वाले, मृत्युञ्जय-त्रिनेत्र-त्रिपुरनाशक, भयंकर नेत्रों वाले, विश्वेश्वर, विश्वरूप में प्रकट, बैल पर सवारी करने वाले, विष को गले में भूषण रूप में धारण करने वाले तथा सब ओर मुख वाले शंकर ! आपकी जय हो, जय हो । मेरे महामृत्यु भय का नाश कीजिए, नाश कीजिए, (बाहरी और भीतरी) रोग भय को जड से मिटा दीजिए, जड से मिटा दीजिए, विष और सर्प के भय को शान्त कीजिए, शान्त कीजिए, चोर को मार डालिए मार डालिए, मेरे (काम क्रोधादि, लोभादि भीतरी तथा इन्द्रियों के और शरीर के द्वारा होने वाले पाप कर्म रूपी बाहरी) शत्रुओं का उच्चाटन कीजिए, उच्चाटन कीजिए, त्रिशूल के द्वारा विदारण कीजिए, विदारण कीजिए, कुठार के द्वारा काट डालिए, काट डालिए। खंग के द्वारा छेद डालिए, छेद डालिए, खट्वांग के द्वारा नाश कीजिए, नाश कीजिए, मूसल के द्वारा पीस डालिए, पीस डालिए और बाणों के द्वारा बींध डालिए, बींध डालिए। आप (मेरी हिंसा करने वाले) राक्षसों को भय दिखाइये, भय दिखाइये। भूतों को भगा दीजिए, भगा दीजिए। कूष्माण्ड, वेताल, मारियों और ब्रह्म राक्षसों को सन्त्रस्त कीजिए, सन्त्रस्त कीजिए। मुझको अभय दीजिए, अभय दीजिए। मुझ अत्यन्त भयभीत को आश्वासन दीजिए, आश्वासन दीजिए। नरक भय से मेरा उद्धार कीजिए, उद्धार कीजिए। मुझे जीवनदान दीजिए, जीवनदान दीजिए। क्षुधा-तृषा का निवारण करके मुझ को आप्यायित कीजिए, आप्यायित कीजिए। आपकी जय हो, जय हो। मुझ दुःखातुर को आनन्दित कीजिए, आनन्दित कीजिए। शिव कवच से मुझे आच्छादित कीजिए, आच्छादित कीजिए। त्र्याम्बक सदाशिव ! आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

ऋषभ उवाच

इत्येतत् कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया ।
सर्वबाधा प्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम् ॥

ऋषभ जी कहते हैं—इस प्रकार यह वरदायक शिव कवच मैंने

कहा है। यह सम्पूर्ण बाधाओं को शान्त करने वाला तथा समस्त देह-धारियों के लिए गोपनीय रहस्य है।

यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचं उत्तमम्।
न तस्य जायते क्वाऽपि भयं शम्भोरनुग्रहात्॥

जो व्यक्ति इस उत्तम शिव कवच को सदा धारण करता है उसे भगवान शिव के अनुग्रह से कभी और कहीं भी भय नहीं होता।

क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपिवा।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घामायुश्च विन्दति॥

जिसकी आयु क्षीण हो चली हैं, जो मरणासन्न हो गया है या जिसे महान रोगों ने मृतक-सा कर दिया है, वह भी इस कवच के प्रभाव से तत्काल सुखी हो जाता है और दीर्घायु प्राप्त कर लेता है।

सर्वदारिद्रयशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्।
यो धत्ते कवच शैवं स देवैरपि पूज्यते॥

यह शिव कवच समस्त दरिद्रता का शमन करने वाला और सौमंगल्य को बढ़ाने वाला है, जो इसे धारण करता है वह देवताओं से भी पूजित होता है।

महापातक संघातैर्मुच्यते चोपपातकैः।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः॥

इस शिव कवच के प्रभाव से मनुष्य महापातकों के समूहों और उप-पातकों के भय से भी छूट जाता है तथा शरीर का अन्त होने पर शिवलोक को पा लेता है।

त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि॥

वत्स! तुम भी मेरे दिए हुए इस उत्तम कवच को श्रद्धापूर्वक धारण करो, इससे तुम शीघ्र और निश्चय ही कल्याण के भागी होओगे।

॥ अमोघ शिवकवचं सम्पूर्णम् ॥

मृतसञ्जीवनकवचम्

एवमराध्य गौरीशं देवं मृत्युञ्जयेश्वरम् ।
मृतसञ्जीवनं नाम कवचं प्रजपेत्सदा ॥
सारात्सारतरं पुण्यं गुह्याद्गुह्यतरं शुभम् ।

4 OCTOBER 1973 THURSDAY

Saka 10 Aswin 1895

गुरुवार ४ अक्टूबर आश्विन सुदी ८

मृतसञ्जीवनकवचम्

एवमराध्य गौरीशं देवं मृत्युञ्जयेश्वरम् ।
मृतसञ्जीवन नाम कवचं प्रजपेत्सदा ॥
सारात्सारतरं पुण्यं गुह्याद्गुह्यतरं शुभम् ।
महादेवस्य कवचं मृतसञ्जीवनामकम् ॥
समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभम् ।
श्रुत्वैतद्दिव्यं कवचं रहस्यं कुरु सर्वदा ॥
वराभयकरोयज्वा सर्वदेवनिषेवितः ।
मृत्युञ्जयो महादेवः प्राच्यां पातु मां सर्वदा ॥
दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः ।
सदाशिवो अग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा ॥
अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभय करो विभुः ।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु ॥
खड्गाभयकराधीरो रक्षोगणनिषेवितः ।
रक्षोरूपी महेशो मां नैऋत्यां सर्वदाऽवतु ॥
पाशाभय भुजः सर्वरत्नाकर निषेवितः ।
वरूणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु ॥
गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः ।
वायव्यां मारुतात्मा मां शङ्करः पातु सर्वदा ॥
शंखाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः ।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शङ्करः प्रभुः ।
शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः ।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः ॥

ऊर्ध्वंभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः रुद्राऽवतु ।
शिरो मे शङ्करः पातु ललाटं चन्द्रशेखरः ॥
भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रो लोचनेऽवतु ।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः ॥
नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः ।
जिह्वां मे दक्षिणामूर्तिर्दन्तान् मे गिरिशोऽवतु ॥
मृत्युञ्जयो मुखं पातु कण्ठं मे नाग भूषणः ।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम ॥
पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः ।
नाभि पातु विरूपाक्षः पार्श्वौ मे पार्वतीपतिः ॥
कटिद्वयं गिरिशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः ।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः ॥
जानुनी मे जगद्धर्ता जंघे मे जगदम्बिका ।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः ॥
गिरिशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान् मम ।
मृत्युञ्जयो ममाऽयुष्यं चित्तं मे गणनायकः ॥
सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः ।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम् ॥

फलश्रुति : मृतसञ्जीवनं नाम्ना महादेवेन कीर्तितम् ।
सहस्रावर्तनं चाऽस्य पुरश्चरणमीरितम् ॥
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रावयेत् सुसमाहितः ।
स कालमृत्युं निर्जित्य सदाऽऽयुष्यं समश्नुते ॥
हस्तेनवा सदास्पृष्ट्वा मृतं सञ्जीवयत्यसौ ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन ॥
कालमृत्युमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा ।
अणिमादि गुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः ॥
युद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम् ।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते ॥

न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति तस्य वै ।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा ॥
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत् कवचं शुभम् ।
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च ॥
सर्वव्याधि विनिर्मुक्तः सर्व रोग विवर्जितः ।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोड्षवार्षिकः ॥
विचरत्यखिलांल्लोकान् प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान् ।
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम् ।
मृतसञ्जीवनं नाम्ना दैवतैरपि दुर्लभम् ॥

॥ इति श्री वसिष्ठ प्रणीतं मृतसंजीवनी कवचं ॥

शिवाष्टोत्तर शतनामावलि

शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशेखरः ।
वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नील लोहितः ।
शङ्करः शूलपाणिश्च खट्वाङ्गी विष्णुवल्लभः ।
शिपिविष्टो अम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः ॥
भव शर्वस्त्रिलोकेशः शितिकण्ठः शिवाप्रियः ।
उग्रः कपाली कामारिरन्धकासुर सूदनः ॥
गङ्गाधरो ललाटाक्षः काल काल कृपानिधिः ।
भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः ॥
कैलाशवासी कवची कठोरस्त्रि पुरान्तकः ।
वृषाङ्की वृषभारूढो भस्मोद्धूलित विग्रहः ॥
सामप्रियः स्वरमय स्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः ।
सर्वज्ञः परमात्मा च सोम सूर्य-ऽग्नि लोचनः ॥
हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः ।
विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः ॥
हिरण्यरेता दुर्धर्षो गिरीशो गिरीशोऽनघः ।
भुजङ्ग भूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः ॥
कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान् प्रमथाधिपः ।
मृत्युञ्जयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः ॥
व्योमकेशो महासेन जनकश्चारु विक्रमः ।
रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्यो दिगम्बरः ॥

अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः ।
शाश्वतः खण्ड परशु रजः पाश विमोचनः ॥
मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययो हरिः ।
पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरो हरः ॥
भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
अपवर्ग प्रदोऽनन्तस्तारकः परमेश्वरः ॥

दारिद्रय् दहन शिवस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णव तारणाय, कर्णामृताय शशिशेखर धारणाय।
कर्पूरकन्ति धवलाय जटाधराय दारिद्रय् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
गौरीप्रियाय रजनीश कलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकंकणाय।
गङ्गाधराय गजराज विमर्दनाय दारिद्रय् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
भक्तप्रियाय भवरोग भयापहाय् उग्राय दुर्गभाव सागर तारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्रय् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
चर्माम्बराय शवभस्म विलेपनाय, भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय।
मंजीर पाद युगलाय जटाधराय, दारिद्रय् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
पञ्चाननाय फणिराज विभूषणाय, हेमांशुकाय भुवनत्रय मण्डिताय।
आनन्दभूमि वरदाय तमोमयाय, दारिद्रय् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
भानु प्रियाय भवसागर तारणाय, कालान्तकाय कमलासन पूजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय, दारिद्रय् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
रामप्रियाय रघुनाथ वरप्रदाय, नागप्रियाय नरकार्णवतारनाय।
पुण्येषू पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्रय् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय, गीतप्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय।
मातङ्ग चर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्रय् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
वसिष्ठेनकृतं स्तोत्रं सर्वरोग निवारणं,
सर्वसम्पत्करं शीघ्रं पुत्र पौत्रादि वर्धनम।
त्रिसंध्यं यः पठेनित्यं सहि स्वर्गमवाप्नुयात्॥

॥ इति श्री वसिष्ठ विरचितं दारिद्रयदहन स्तोत्रम् ॥

शिवरक्षास्तोत्रम्

विनियोग—अस्य श्री शिवरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, श्री सदाशिवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः श्री सदाशिवप्रीत्यर्थं शिवरक्षास्तोत्र जपे विनियोगः—

चरितं देवदेवस्यमहादेवस्य पावनम् ।
अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम् ॥

देवाधिदेव भगवान शंकर का यह चरित्र, परम पवित्र, अपार अत्यन्त उदार एवं चतुर्वर्ग (धर्म-अर्थ, काम-मोक्ष) को देने वाला है ।

गौरी विनायकोपेतं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रकम् ।
शिवं ध्यात्वादशभजं शिवरक्षां पठेन्नर ॥

पांच मुख वाले, तीन नेत्र वाले, दश भुजाओं वाले शिव का गौरी और विनायक (गणेश) जी सहित ध्यान करके साधक पुरुष को शिवरक्षा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।

गङ्गाधरः शिरः पातु भालमर्धेन्दु शेखरः ।
नयने मदनध्वंसी कर्णौ सर्पविभूषणः ॥

गंगाधर शिव मेरे सिर की, अर्धचन्द्रधारी मेरे कपाल की, कामदेव को भस्म करने वाले (मदनध्वंसी) मेरे दोनों नेत्रों की तथा सापों के आभूषण धारण करने वाले (सर्पविभूषणः) मेरे दोनों कानों की रक्षा करें ।

घ्राणं पातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः ।
जिह्वां वागीश्वरः पातु कन्धरां शितिकन्धरः ॥

त्रिपुरासुर का वध करने वाले (पुराराति) मेरी नाक की, जगत्पति मेरे मुख की वागीश्वर मेरी जिह्वा की शितिकन्धर मेरी ग्रीवा की रक्षा करें ।

दारिद्र्यदहन शिवस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णव तारणाय, कर्णामृताय शशिशेखर धारणाय।
कर्पूरकन्ति धवलाय जटाधराय दारिद्र्य् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
गौरीप्रियाय रजनीश कलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकंकणाय।
गङ्गाधराय गजराज विमर्दनाथ दारिद्र्य् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
भक्तप्रियाय भवरोग भयापहाय् उग्राय दुर्गभाव सागर तारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्य् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
चर्माम्बराय शवभस्म विलेपनाय, भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय।
मंजीर पाद युगलाय जटाधराय, दारिद्र्य् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
पञ्चाननाय फणिराज विभूषणाय, हेमांशुकाय भुवनत्रय मण्डिताय।
आनन्दभूमि वरदाय तमोमयाय, दारिद्र्य् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
भानु प्रियाय भवसागर तारणाय, कालान्तकाय कमलासन पूजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय, दारिद्र्य् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
रामप्रियाय रघुनाथ वरप्रदाय, नागप्रियाय नरकार्णवतारनाय।
पुण्येषू पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्य् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय, गीतप्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय।
मातङ्ग चर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्य् दुःख दहनाय नमः शिवाय॥
वसिष्ठेनकृतं स्तोत्रं सर्वरोग निवारणं,
सर्वसम्पत्करं शीघ्रं पुत्र पौत्रादि वर्धनम।
त्रिसंध्यं यः पठेनित्यं सहि स्वर्गमवाप्नुयात्॥

॥ इति श्री वसिष्ठ विरचितं दारिद्र्यदहन स्तोत्रम् ॥

शिवरक्षास्तोत्रम्

विनियोग—अस्य श्री शिवरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, श्री सदाशिवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः श्री सदाशिवप्रीत्यर्थं शिवरक्षास्तोत्र जपे विनियोगः—

चरितं देवदेवस्यमहादेवस्य पावनम् ।
अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम् ॥

देवाधिदेव भगवान शंकर का यह चरित्र, परम पवित्र, अपार अत्यन्त उदार एवं चतुर्वर्ग (धर्म-अर्थ, काम-मोक्ष) को देने वाला है ।

गौरी विनायकोतेतं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रकम् ।
शिवं ध्यात्वादशभजं शिवरक्षां पठेन्तर :॥

पांच मुख वाले, तीन नेत्र वाले, दश भुजाओं वाले शिव का गौरी और विनायक (गणेश) जी सहित ध्यान करके साधक पुरुष को शिवरक्षा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।

गङ्गाधरः शिरः पातु भालमर्धेन्दु शेखरः ।
नयने मदनध्वंसी कर्णे सर्पविभूषणः ॥

गंगाधर शिव मेरे सिर की, अर्धचन्द्रधारी मेरे कपाल की, कामदेव को भस्म करने वाले (मदनध्वंसी) मेरे दोनों नेत्रों की तथा सापों के आभूषण धारण करने वाले (सर्पविभूषणः) मेरे दोनों कानों की रक्षा करें ।

घ्राणं पातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः ।
जिह्वां वागीश्वरः पातु कन्धरां शितिकन्धरः ॥

त्रिपुरासुर का वध करने वाले (पुराराति) मेरी नाक की, जगत्पति मेरे मुख की वागीश्वर मेरी जिह्वा की शितिकन्धर मेरी ग्रीवा की रक्षा करें ।

श्रीकण्ठः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ विश्वधुरन्धरः।
भुजौ भूभारसंहर्ता करौ पातु पिनाकधृक्॥

मेरे कण्ठ की श्रीकण्ठ, मेरे दोनों कन्धों, भूभार संहर्ता मेरी दोनों भुजाओं की तथा पिनाकधृक् मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें।

हृदयं शङ्करः पातु जठरं गिरिजापतिः।
नाभिं मृत्युञ्जयः पातु कटिंव्याघ्राजिनाम्बरः॥

शंकर मेरे हृदय की, पेट की गिरिजापति, नाभि की मृत्युञ्जय तथा कटि की व्याघ्राजिनाम्बर रक्षा करें।

सक्थिनी पातु दीनार्त-शरणागतवत्सलः।
ऊरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः॥

दीनार्त-शरणागतवत्सल मेरी समस्त हड्डियों की महेश्वर मेरे ऊरू की तथा मेरे जानु की जगदीश्वर रक्षा करें।

जंघे पातु जगत्कर्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः॥
चरणौ करूणासिन्धु सर्वाङ्गानि सदाशिवः॥

मेरे दोनों जाघों की जगत्कर्ता, दोनों घुटनों की गणाधिप, मेरे दोनों पैरों की करूणा सिन्धु तथा सदाशिव मेरे सारे अंगों की रक्षा करें।

फलश्रुति :

एतां शिववलोपेतां रक्षां यः सुकृति पठेत्।
स भुक्त्वा सकलान् कामान् शिवसायुज्यमाप्नुयात्॥

जो साधक शिव बल से युक्त होकर इस शिवरक्षा स्तोत्र का पाठ करते हैं वे अन्त में शिवसायुज्य (मोक्ष) को प्राप्त होते हैं।

ग्रह-भूत-पिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते शिवनामाभिरक्षणात्॥

इस त्रिलोकी में जितने भी ग्रह-भूत-पिशाच आदि विचरण करते हैं वे मात्र इस शिवरक्षा स्तोत्र के पाठ से तत्काल दूर भाग जाते हैं।

अभयङ्कर नामेदं कवचं पार्वतीपतेः।
भक्त्या बिभर्ति यः कण्ठे तस्य वश्यं जगत्त्रयम्॥

जो साधक भक्तिपूर्वक पार्वती पति शंकर के अभयंकर नामक कवच को अपने कण्ठ में धारण करते हैं उनके तीनों लोक वशीभूत हो जाते हैं।

इमां नारायणः स्वप्ने शिवरक्षां यथाऽऽदिशत् ।
प्रातरुत्थाय योगीन्द्रो याज्ञवल्क्यस्तथाऽलिखत् ॥

जिस प्रकार भगवान नारायण ने स्वप्न में याज्ञवल्क्य ऋषि को इस कवच का उपदेश किया था, उसी प्रकार मुनि श्रेष्ठ ने उसे प्रातःकाल उठकर लिख लिया था ।

॥ इति श्री याज्ञवल्क्यकृतं शिवरक्षास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

तण्डिकृत शिवसहस्रनामस्तोत्र

वासुदेव उवाच

ततः स प्रयतो भूत्वा मम तात युधिष्ठिर ! ।
प्राञ्जलिः प्राह विप्रर्षिर्नामसंग्रहमादितः ॥

उपमन्युरुवाच

ब्रह्मप्रोक्तैर्ऋषिप्रोक्तैर्वेद-वेदाङ्ग सम्भवैः ।
सर्वलोकेषु विख्यात स्तुत्यं स्तोष्यामि नामभिः ॥
महद्भिर्विहितैः सत्यैः सिद्धैः सर्वार्थसाधकैः ।
ऋषिणा तण्डिना भक्त्या कृतैर्वेदकृतात्मना ॥
यथोक्तैः साधुभिः ख्यातैर्मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।
प्रवरं प्रथम स्वर्ग्यं सर्वभूत हितम् शुभम् ॥
श्रुतैः सर्वत्रं जगति ब्रह्मलोकावतारितैः ।
सत्यैस्तत् परमं ब्रह्म ब्रह्मप्रोक्तं सनातनम् ॥
वक्ष्ये यदुकुल श्रेष्ठ शृणुष्वावहितो मम ।
वरयैनं भवं देवं भक्तस्त्वं परमेश्वरम् ॥
तेन ते श्रावयिष्यामि यत् तद् ब्रह्मसनातनम् ।
न शक्यं विस्तरात् कृत्स्नं वक्तुं सर्वस्य केनचित् ॥
युक्तेनापि विभूतीनामपि वर्षशतैरपि ।
यस्यादिर्मध्यमन्तं च सुरैरपि न गम्यते ॥
कस्तस्य शक्नुयाद् वक्तुं गुणान् कार्त्स्न्येन माधव ।

किंतु देवस्य महतः संक्षिप्तार्थपदाक्षरम् ॥

शक्तितश्चरितं वक्ष्ये प्रसादात तस्य धीमतः।
अप्राप्य तु ततोऽनुज्ञां न शक्यः स्तोतुमीश्वरः॥
यदा तेनाभ्यनुज्ञाताः स्तुतो वै स सदा मया।
अनादि-विधनस्याऽहं जगद्योनेर्महात्मनः॥
नाम् नाम् कंचित समुद्देशं वक्ष्याम्यव्यक्त योनिनः।
वरदस्य वरेण्यस्य विश्वरूपस्य धीमतः॥
श्रृणु नाम्नां चयं कृष्ण यदुक्तं पद्मयोनिना।
दशनामसहस्राणि यान्याह प्रपितामहः॥
तानिनिर्मथ्य मनसा दहनो घृतमिवोद्धृतम्-।
गिरेः सारं यथा हेम पुष्पसारं यथा मधु॥
घृतात सारं यथा मण्डस्तथैतत् सारमुद्धृतम्।
सर्वपापापहमिदं चतुर्वेदसमन्वितम्॥
प्रयत्नेनाधिगन्तव्यं धार्यं च प्रयतात्मना।
माङ्गल्यं पौष्टिकं चैव रक्षाघ्नं पावनं महत्॥
इदं भक्तायदातव्यं श्रद्धानास्तिकाय च।
नाश्रद्धानरूपाय नास्तिकायाऽजितात्मने॥
यश्चाभ्यसूयते देवं कारणात्मानमीश्वरम्।
स कृष्ण नरकं याति सहपूर्वैः सहात्मजैः॥
इदं ध्यानमिदं योगमिदं ध्येयमनुत्तमम्।
इदं जप्यमिदं ज्ञानं रहस्यमिदमुत्तमम्॥
यं ज्ञात्वा अन्तकालेऽपि गच्छेत परमां गतिम्।
पवित्रं मङ्गलं मेध्यं कल्याणमिदमुत्तमम्॥
इदं ब्रह्मापुरा कृत्वा सर्वलोक पितामहः।
सर्वस्तवानां राजत्वे दिव्यानां समकल्पयत्॥

तदा प्रभृति चैवायमीश्वरस्य महात्मनः।
स्तवराज इति ख्यातो जगत्यमरपूजितः॥
ब्रह्मलोकादयं स्वर्गे स्तवराजोऽवतारितः।
यतस्तण्डिः पुरा प्राप तेन तण्डिकृतोऽभवत्॥
स्वर्गाच्चैवाऽत्र भूर्लोकं तण्डिना ह्यवतारितः।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वं पाप-प्रणाशनम्॥
निगदिष्ये महाबाहो! स्तवानामुत्तमं स्तवं।
ब्राह्मणामपि यद् ब्रह्म पराणामपि यत् परम्॥
तेजसामपि यत् तेजस्तपसामपि यत् तपः।
शान्तानामपि यः शान्तो द्युतीनामपि या द्युतिः॥
दान्तानामपि यो दान्तो धीमतामपि या च धीः।
देवानामपि यो देव ऋषिणामपि यस्त्वृषिः॥
यज्ञानामपि यो यज्ञः शिवानामपि यः शिवः।
रुद्राणामपि यो रुद्रः प्रभा प्रभवतामपि॥
योगिनामपि यो योगी कारणानां च कारणम्।
यतिलोकः सम्भवन्ति न भवन्ति यतः पुनः॥
सर्वभूतात्मभूतस्य हरस्यामित तेजसः।
अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नां शर्वस्य मे शृणु॥
यच्छ्रुत्वा मनुज व्याघ्र सर्वान् कामानवाप्स्यसि।
स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भीमः प्रवरो वरदो वरः॥
सर्वात्मा सर्वविख्यातः सर्वः सर्वकरो भवः।
जटी चर्मी शिखण्डी च सर्वाङ्गः सर्वभावनः॥
हरश्च हरिणाक्षश्च सर्वभूतहरः प्रभुः।
प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च नियतः शाश्वतो ध्रुवः॥

श्मशानवासी भगवान् खचरो गोचरोऽर्दनः ।
अभिवाद्योमहाकर्मा तपस्वी भूतभावनः ॥
उन्मत्तवेषप्रच्छन्नः सर्वलोक प्रजापतिः ।
महारूपो महाकायो वृषरूपो महायशाः ॥
महात्मा सर्वभूतात्मा विश्वरूपो महाहनुः ।
लोकपालोऽन्तर्हितात्मा प्रसादोहयगर्दभिः ॥
पवित्रं च महांश्चैव नियमो नियमाश्रितः ।
सर्वकर्मा स्वयम्भूत आदिरादि करो निधिः ॥
सहस्राक्षो विशालाक्षः सोमो नक्षत्र साधकः ।
चन्द्रः सूर्यं शनिः केतुर्ग्रहो ग्रहपतिर्वरः ॥
अत्रिरत्र्या नमस्कर्ता मृगबाणार्पणोऽनघः ।
महातपा घोरतपा अदीनो दीन साधकः ॥
संवत्सरोकरो मन्त्रः प्रमाणं परमं तपः ।
योगी योज्यो महाबीजो महारेता महाबलः ॥
सुवर्णरेता सवर्ज्ञः सुबीजो बीजवाहनः ।
दशबाहुस्त्वनिमिषो नीलकण्ठ उमापतिः ॥
विश्वरूपः स्वयंश्रेष्ठो बलवीरोऽबलोगणः ।
गणकर्ता गणपतिर्दिग्वासाः काम एव च ॥
मन्त्रवित परमो मन्त्रः सर्वभाव करो हरः ।
कमण्डलुधरो धन्वी बाणहस्तः कपालवान् ॥
अशनीशतघ्नी खड्गी पट्टिशी चायुधीमहान् ।
स्रुवहस्तः सुरूपश्च तेजस्तेजस्करो निधिः ॥
उष्णीषी च सुवक्त्रश्च उदग्रो विनतस्तथा ।
दीर्घश्च हरिकेशश्च सुतीर्थः कृष्ण एव च ॥

मृगालरूपः सिद्धार्थो मुण्डः सर्वशुभं करः ।
अजश्च बहुरूपश्च गन्धधारी कपर्द्यपि ॥
ऊर्ध्वरेता ऊर्ध्वलिङ्ग ऊर्ध्वशायीनभः स्थलः ।
त्रिजटी चीरवासाश्च रुद्रः सेनापतिर्विभुः ॥
अहश्चरो नक्तंचरिस्तग्ममन्युः सुवर्चसः ।
गजहा दत्याहा कालोलोकधाता गुणाकरः ॥
सिंहशार्दूलरूपश्च आर्द्रचर्माम्बरावृतः ।
कालयोगी महानादः सर्वकामश्चतुष्पथः ॥
निशाचरः प्रेतचारी भूतचारी महेश्वरः ।
बहुभूतो बहुधरः स्वर्भानुरमितो गतिः ॥
नृत्य प्रियो नित्यनर्तो नर्तकः सर्वलालसः ।
घोरो महातपाः पाशो नित्यो गिरिरूहो नमः ॥
सहस्रहस्तो विजयो व्यवसायोह्यतन्द्रितः ।
अघर्षणो घर्षणात्मा यज्ञहा कामनाशकः ॥
दक्षयागापहारी च सुसहोमध्यमस्तथा ।
तेजोऽपहारी बलहा मुदितोऽर्थोऽजितोऽवरः ॥
गम्भीर घोषो गम्भीरो गम्भीरबल वाहनः ।
न्यग्रोधरूपो न्यग्रोधो वृक्षकर्णस्थितिर्विभुः ॥
सुतीक्ष्ण दंशनश्चैव महाकायो महाननः ।
विष्वक्सेनो हरिर्यज्ञः संयुगापीडवाहनः ॥
तीक्ष्णतापश्च हर्यश्वः सहायः कर्मकालवित् ।
विष्णुप्रसादितो यज्ञः समुद्रो बडवामुखः ॥
हुताशन-सहायश्च प्रशान्तात्मा हुताशनः ।
उग्रतेजा महातेजा जन्यो विजय कालवित् ॥

ज्योतिषामयनं सिद्धिः सर्वविग्रह एव च।
शिखी मुण्डी जटी ज्वाली मूर्तिजो मूर्द्धगोबली ॥
वेणवी पणवी ताली खाली कालकटकटः।
नक्षत्र विग्रहमतिर्गुण-बुद्धिर्लयोऽगमः ॥
प्रजापतिर्विश्वबाहुर्विभागः सर्वगोऽमुखः।
विमोचनः सुसरणो हिरण्यकवचोद्भवः ॥
मेढजो बलचारी च महीचारी स्रुतस्तथा।
सर्वतूर्यनिनादी च सर्वातोद्यपरिग्रहः ॥
व्यालरूपो गुहावासी गुहो माली तरङ्गवित्।
त्रिदशस्त्रिकालधृक् कर्म-सर्वबन्ध विमोचनः ॥
बन्धनस्त्वसुरेन्द्राणां युधिशत्रु विनाशनः।
साङ्ख्यप्रसादो दुर्वासाः सर्वसाधुनिषेवितः ॥
प्रस्कन्दनो विभागज्ञोऽतुल्यो यज्ञविभागवित्।
सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासा वासवोऽमरः ॥
हैमो हेमकरोऽयज्ञः सर्वधारी धरोत्तमः।
लोहिताक्षो महाक्षश्चविजयाक्षो विशारदः ॥
संग्रहो निग्राहःकर्त्ता सर्पचीर निवासनः।
मुख्योऽमुख्यश्चं देहश्च काहलिः सर्वकामदः ॥
सर्वकाल प्रसादश्च सुबलो बलरूपधृक्।
सर्वकामवरश्चैव सर्वदः सर्वतोमुखः ॥
आकाश-निर्विरूपाश्च निपातीह्यवशः खगः।
रौद्ररूपोंऽशु रादित्यो बहुरश्मिः सुवर्चसी ॥
वसु वेगो महावेगो मनोवेगो निशाचरः।

सर्ववासी श्रियावासी उपदेशकरोऽकरः ॥

मुनिरात्म-निरालोकः सम्भग्नश्च सहस्रदः ।
पक्षी च पक्षरूपश्च अतिदीप्तो विशाम्पतिः ॥
उन्मादोमदनः कामो ह्यश्वत्थोऽर्थकरो यशः ।
वामदेवश्च वामश्च प्राग्दक्षिणश्च वामनः ॥
सिद्धयोगी महर्षिश्च सिद्धार्थः सिद्धसाधकः ।
भिक्षुश्च भिक्षुरूपश्च विपणो मृदुरव्ययः ॥
महासेनो विशाखश्च षष्टिभागो गवां पतिः ।
वज्रहस्तश्च विष्कम्भी चमूस्तम्भन एव च ॥
वृत्ताऽवृत्तकरस्तालो मधुर्मधुक लोचनः ।
वाचस्पत्यो वाजसनो नित्यामाश्रमपूजितः ॥
ब्रह्मचारी लोकचारी सर्वचारी विचारवित् ।
ईशानः ईश्वरोकालो निशाचरी पिनाकवान् ॥
निमित्तस्थो निमित्तं च नन्दिर्नन्दि करो हरिः ।
नन्दीश्वरश्च नन्दी च नन्दनो नन्दवर्द्धनः ॥
भगहारी निहन्ता च कालोब्रह्मा पितामहः ।
चतुर्मुखो महालिङ्गश्चारुलिङ्गस्तथैव च ॥
लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः ।
बीजाध्यक्षो बीजकर्ता अध्यात्मानुगतो बलः ॥
इतिहासः सकल्पश्च गौतमोऽथ निशाकरः ।
दम्भो ह्यदम्भो वैदम्भो वश्यो वशकरः कलिः ॥
लोककर्ता पशुपतिर्महाकर्ता ह्यनौषधः ।
अक्षरं परमं ब्रह्म बलवच्छक्र एव च ॥
नीतिर्ह्यनीतिः शुद्धात्मा शुद्धो मान्योगता गतः ।
बहुप्रसादः सुस्वप्नो दर्पणोऽथ त्वमित्रजित् ॥

वेदकारो मन्त्र कारो विद्वान् समरमर्दनः।
महामेघ निवासी च महाघोरो वशीकरः॥
अग्निज्वालो महाज्वालो अतिधूम्रोहुतो हविः।
वृषणः शङ्करो नित्यं वर्चस्वी धूमकेतनः॥
नीलस्तथाङ्गलुब्धश्च शोभनो निरवग्रहः।
स्वस्तिदः स्वस्तिभावश्च भागी भागकरो लघुः॥
उत्सश्चङ्ग महाङ्गश्च महागर्भ परायणः।
कृष्ण वर्णः सुवर्णश्च इन्द्रियं सर्वदेहिनाम्॥
महापादो महाहस्तो महाकायो महायशाः।
महामूर्धा महामात्रो महानेत्रो निशालयः॥
महान्तको महाकर्णो महोष्ठश्च महाहनुः।
महानाशो महाकम्बुर्महाग्रीवः श्मशानभाक्॥
महावक्षा महोरस्को ह्यन्तरात्मा मृगालयः।
लम्बनो लम्बतोष्ठश्च महामायः पयोनिधिः॥
महादन्तो महादंष्ट्रो महाजिह्वो महामुखः।
महानखो महारोमा महाकोशो महाजटः॥
प्रसन्नश्च प्रसादश्च प्रत्ययो गिरिसाधनः।
स्नेहनोऽस्नेहनश्चैव अजितश्च महामुनिः॥
वृक्षाकारो वृक्षकेतुरनलो वायुवाहनः।
गण्डली मेरुधामा च देवाधिपतिरेव च॥
अथर्वशीर्षः सामास्य ऋक्सहस्रामितेक्षणः।
यजुः पादभुजो गुह्यः प्रकाशो जङ्गमस्तथा॥
अमोघार्थः प्रसादश्च अभिगम्य सुदर्शनः।
उपकारः प्रियः सर्वः कनकः काञ्चनच्छविः॥

नाभिर्नन्दिकरोभावः पुष्करस्थपतिः स्थिरः।
द्वादशस्त्रासनश्चाद्यो यज्ञो यज्ञसमाहितः॥
नक्तं कलिश्च कालश्च मकरः कालपूजितः।
सगणो गणकारश्च भूतवाहन सारथिः॥
भस्मशयो भस्मगोप्ता भस्मभूतस्तरुर्गणः।
लोकपालस्तथाऽलोको महात्मा सर्वपूजितः॥
शुक्लस्त्रिशुक्लः सम्पन्नः शुचिर्भूत निषेवितः।
आश्रमस्थः क्रियावस्थो विश्वकर्ममतिर्वरः॥
विशालशाखस्ताम्रोष्ठो ह्यम्बुजालः सुनिश्चलः।
कपिलः कपिशः शुक्ल आयुश्चैव परोऽपरः॥
गन्धर्वो ह्यदितिस्तार्क्ष्यः सुविज्ञेय सुशारदः।
परश्वधायुधो देवो अनुकारी सुबान्धवः॥
तुम्बवीणो महाक्रोध ऊर्ध्वरेता जलेशयः।
उग्रो वंशकरो वंशो वंशनादो ह्यनिन्दितः॥
सर्वाङ्गरूपो मायावी सुहृदो ह्यनिलोऽनलः।
बन्धनो बन्धकर्ता च सुबन्धन-विमोचनः॥
सयज्ञारिः सकामारिर्महादंष्ट्रो महायुधः।
बहुधा निन्दितः शर्वः शंकरः शंकरोऽधनः॥
अमरेशो महादेवो विश्वदेवः सुरारिहा।
अहिर्बुध्न्योऽनिलाभश्च चेकितानो हविस्तथा॥
अजैकपाच्च कापाली त्रिशङ्कुरजितः शिवः।
धन्वन्तरिर्धूमकेतुः स्कन्दो वैश्रवणस्तथा॥
धाता शक्रश्च विष्णुश्च मित्रस्त्वष्टा ध्रुवो धरः।
प्रभावः सर्वगो वायुरर्यमा सविता रविः॥

उपङ्गश्च विधाता च मान्धाता भूतभावनः ।
विभुर्वर्णविभावी च सर्वकाम गुणावहः ॥
पद्मनाभो महागर्भश्चन्द्रवक्त्रोऽनिलोऽनलः ।
बलवांश्चोपशान्तश्च पुराणः पुण्यचञ्चुरी ॥
कुरुकर्ता कुरुवासी कुरुभूतो गुणौषधः ।
सर्वाशयो दर्भचारी सर्वेषां प्राणिनां पतिः ॥
देवदेवः सुखासक्तः सदसत्सर्वरत्नवित् ।
कैलाश गिरिवासी च हिमवद्गिरि संश्रयः ॥
कूलहारी कूलकर्ता बहुविद्यो बहुप्रदः ।
वणिजो वर्धकी वृक्षो बकुलश्चन्दनश्छदः ॥
सारग्रीवो महाजत्रुरलोलश्च महौषधः ।
सिद्धार्थकारी सिद्धर्थश्छन्दो व्याकरणोत्तरः ॥
सिंहनादः सिंहदंष्ट्रः सिंहगः सिंहवाहनः ।
प्रभावात्मा जगत्कालस्थालो लोकहितंस्तरूः ॥
सारङ्गो नवचक्राङ्गः केतुमाली सभावनः ।
भूतालयो भूतपतिरहोरात्रमनिन्दितः ॥
वाहिता सर्वभूतानां निलयश्च विभुर्भवः ।
अमोघः संयतो ह्यश्वो भोजनः प्राणधारणः ॥
धृतिमान् मतिमान् दक्षः सत्कृश्च युगाधिपः ।
गोपालिर्गोपतिर्ग्रामो गोचर्म वसनो हरिः ॥
हिरण्य बाहुश्च तथा गुहापालः प्रवेशिनाम् ।
प्रकृष्टारिर्महाहर्षो जितकामो जितेन्द्रियः ॥
गान्धारश्च सुवासश्च तपः सक्तो रतिर्नरः ।
महागीतोमहानृत्यो ह्यप्सरोगणसेवितः ॥

महाकेतु-र्महाधातु-र्नैकसानुचरश्चलः ।
आवेदनीयः आदेशः सर्वगन्ध सुखावहः ॥
तोरणस्तारणो वातः परिधीपतिखेचरः ।
संयोगो वर्द्धनो वृद्धो अतिवृद्धो गुणाधिकः ॥
नित्य आत्म सहायश्च देवासुर पतिः पतिः ।
युक्तश्चयुक्तबाहुश्च देवो दिविसुपर्वणः ॥
आषाढ़श्च सुषाढ़श्च ध्रुवोऽथहरिणो हरः ।
वपुरावर्त्तमानेभ्यो वसुश्रेष्ठो महापथः ॥
शिरोहारी विमर्शश्च सर्वलक्षणलक्षितः ।
अक्षश्च रथयागी च सर्वयोगी महाबलः ॥
समाम्नायोऽसमाम्नायस्तीर्थं देवो महारथः ।
निर्जीवो जीवनो मन्त्रः शुभाक्षो बहुकर्कशः ॥
रत्नप्रभतो रत्नाङ्गो महार्णवनिपानवित् ।
मूलं विशालो ह्यमृतो व्यक्ताऽव्यक्तस्तपोनिधिः ॥
आरोहणोऽधिरोहश्च शीलधारी महायशाः ।
सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युगकरो हरिः ॥
युगरूपो महारूपो महानागहनोऽवधः ।
न्यायनिर्वपणः पादः पण्डितोह्यचलोपमः ॥
बहुमालो महामालः शशी हरसुलोचनः ।
विस्तारो लवणः कूपस्त्रियुगः सफलोदयः ॥
त्रिलोचनो विषण्णाङ्गो मणिविद्धो जटाधरः ।
बिन्दुर्विसर्गः सुमुखः शरः सर्वायुधः सहः ॥
निवेदनः सुखाजातः सुगन्धारो महाधनुः
गन्धपाली च भगवानुत्थानः सर्वकर्मणाम् ॥

मन्थानो बहुलो वायुः सकलः सर्वलोचनः ।
ततस्तालः करस्थाली ऊर्ध्वसंहननो महान् ॥
छत्रं सुछत्रो विख्यातो लोकः सर्वाश्रयः क्रमः ।
मुण्डो विरूपो विकृतो दण्डी कुण्डी विकुर्वणः ॥
हर्यक्षः ककुभोवज्री शतजिह्वः सहस्रपात् ।
सहस्रमूर्धा देवेन्द्रः सर्वदेवमयो गुरुः ॥
सहस्रबाहुः सर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत् ।
पवित्र त्रिककुनमन्त्रः कनिष्ठः कृष्णपिङ्गलः ॥
ब्रह्मदण्ड-विनिर्माता शतघ्नी-पापशक्तिमान् ।
पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्भवः ॥
गभस्तिर्ब्रह्मकृद् ब्रह्मी ब्रह्मविद् ब्राह्मणो गतिः ।
अनन्तरूपो नैकात्मा तिग्मतेजाः स्वयम्भुवः ॥
ऊर्ध्वगात्मा पशुपतिर्वातरंहा मनोजवः ।
चन्दनी पद्मनालाग्रः सुरभ्युत्तरणो नरः ॥
कर्णिकार महास्रग्वी नीलमौलिः पिनाकधृत् ।
उमापतिरुमाकान्तो जाह्नवीधृदुमाधवः ॥
वरो वराहो वरदो वरेण्यः सुमहास्वनः ।
महाप्रसादो दमनः शत्रुहा श्वेतपिङ्गलः ॥
पीतात्मा परमात्मा च प्रयतात्मा प्रधानधृत् ।
सर्वपार्श्वमुखत्र्यक्षो धर्मसाधारणो वरः ॥
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा अमृतो गोवृषेश्वरः ।
साध्यर्षिर्वसुरादित्यो विवस्वान् सवितामृतः ॥
व्यासः सर्गः सुसंक्षेपो विस्तरः पर्ययोनरः ।
ऋतुः सवंतसरो मासाः पक्षः संख्या समापनः ॥

कला: काष्ठा लवामात्रा मुहूर्ताहः क्षपा: क्षणा: ।
विश्वक्षेत्रं प्रजा बीजं लिङ्गमाद्यस्तु निर्गमः ॥
सदसद् व्यक्तं व्यक्तं पितामाता पितामहः ।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम् ॥
निर्वाणं ह्लादनश्चैव ब्रह्मलोकः परागतिः ।
देवासुर विनिर्माता देवासुर परायणः ॥
देवासुगुरुर्देवो देवासुर नमस्कृतः ।
देवासुर महामात्रो देवासुर गणाश्रयः ॥
देवासुर गणाध्यक्षो देवासुर गणाग्रणीः ।
देवातिदेवो देवर्षिदेवासुरवरप्रदः ॥
देवासुरेश्वरो विश्वो देवासुरमहेश्वरः ।
सर्वदेवमयोऽचिन्त्यो देवतात्माऽऽत्मसम्भवः ॥
उद्भित त्रिविक्रमो वैद्यो विरजो नीरजोऽमरः ।
इड्यो हस्तीश्वरो व्याघ्रो देवसिंहो नरर्षभः ॥
विबुधोऽग्रवरः सूक्ष्मः सर्वदेवस्तपोमयः ।
सुयुक्तः शोभनो वज्री प्रासानां प्रभवोऽव्ययः ॥
गुहः कान्तो निजः सर्गः पवित्रं सर्वपावनः ।
भृङ्गी भृङ्ग प्रियो बभ्रू राजराजो निरामयः ॥
अभिरामः सुरगणो विरामः सर्व साधनः ।
ललाटाक्षो विश्वदेवो हरिणो ब्रह्मवर्चसः ॥
स्थावराणां पतिश्चैव नियमेन्द्रिय वर्धनः ।
सिद्धार्थः सिद्धभूतार्थोऽचिन्त्यः सत्यव्रतः शुचिः ॥
व्रताधिपः परंब्रह्म भक्तानां परमागतिः ।
विमुक्तो मुक्त तेजाश्च श्रीमान्श्रीवर्धनो जगत् ॥

यथा प्रधानं भगवानिति भक्त्या स्तुतो मया।
यन्न ब्रह्मादयो देवा विदुस्तत्त्वेन नर्षयः॥
स्तोतव्यमर्च्यं वन्द्यं च कः स्तोष्यति जगत्पतिम्।
भक्त्या त्वेवं पुरस्कृत्यमया यज्ञपति विभु॥
ततोऽभ्यनुज्ञां सम्प्राप्य स्तुतो मतिमतां वरः।
शिवमेभिः स्तुवन् देवं नामभिः पुष्टिवर्धनैः॥

फलश्रुति—नित्ययुक्ता शुचिर्भक्तः प्राप्वोत्यात्मान मात्मना।
एतद्धि परमं ब्रह्म परं ब्रह्माधिगच्छति।
ऋषयश्चैव देवाश्च स्तुवन्त्येतेन तत्परम्॥
स्तूयमानो महादेवस्तुष्यते नियतात्मभिः।
भक्तानुकम्पी भगवानात्मसंस्थाकरो विभुः॥
तथैव च मनुष्येषु ये मनुष्याः प्रधानतः।
आस्तिकाः श्रद्धावानश्च बहुभिर्जन्मभिः स्तवैः॥
भक्त्या ह्यनन्यमीशानं परं देवं सनातनम्।
कर्मणा मनसा वाचा भावना मित तेजसः॥
शयाना जाग्रमाणाश्च व्रजन्नुपविशंस्तथा।
उन्मिषन् निमिषश्चैव चिन्तयन्तः पुनः पुनः॥
शृण्वन्तः श्रावयन्तश्च कथयन्तश्च ते भवम्।
स्तुवन्तः स्तूयमानश्च तुष्यन्ति च रमन्ति च॥
जन्म कोटि सहस्रेषु नानासंसार योनिषु।
जन्तोर्विगतपापस्य भवे भक्ति प्रजायते॥
उत्पन्ना च भवे भक्तिरनन्या सर्वं भावतः।
[illegible]॥
निर्विघ्ना निश्चला रुद्रे भक्तिरव्यभिचारिणी॥

तस्यैव च प्रसादेन भावतरुत्पद्यते नृणाम्।
येन यान्ति परां सिद्धि तद्भावगत चेतसः ॥
ये सर्वभानुगताः प्रपद्यन्ते महेश्वरम्।
प्रपन्नवत्सलो देवः संसारात् तान् समुद्धरेत् ॥
एवमन्ये विकुर्वन्ति देवाः संसारमोचनम्।
मनुष्याणामृते देवं नान्या शक्तिस्तोबलम् ॥
इति तेनेन्द्रकल्पेन भगवान् सद् सत्पतिः।
कृत्तिः वासाः स्तुतः कृष्णतण्डिना शुभबुद्धिना ॥
स्तवमेतं भगवतो ब्रह्मा स्वयमधारयत्।
गीयते च स बुद्धयेत ब्रह्मा शंकर सन्निधौ ॥
इदं पुण्यं पवित्रं च सर्वदा पापनाशनम्।
योगदं मोक्षदं चैव स्वर्गदं तोपदं तथा ॥
एवमेतत् पठन्तेय एक भक्त्या तु शङ्करम्।
या गति सांख्य योगानां व्रजन्त्येतां गतिं तदा ॥
स्तवमेतं प्रयत्नेन सदा रुद्रस्य सन्निधौ।
अवद्मेकं चरेद् भक्तः प्राप्नुयादीप्सितं फलम् ॥
एतद् रहस्य परम ब्रह्मणो हृदि संस्थितम्।
ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्रः प्रोवाच मृत्यवे ॥
मृत्युः प्रोवाच रुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तण्डिमागमत्।
महता तपसा प्राप्तस्तण्डिना ब्रह्मसद्मनि ॥
तण्डिः प्रोवाच शुक्राय गौतमाय च भार्गवः।
वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधवः ॥
नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय धीमते।
यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोऽच्युतः ॥

नाचिकेताय भगवानाह वैवस्वतो यमः।
मार्कण्डेयाय वार्ष्णेय नाचिकेतोऽभ्यभाषत् ॥
मार्कण्डेयान्मया प्राप्तो नियमेन जनार्दन ! ।
तवाप्यहममिन्नघ्न स्तवं दद्यां ह्यविश्रुतम् ॥
स्वर्ग्यमारोग्यमायुष्यं धन्यं वेदेन सम्मितम् ।
नास्य विघ्नं विकुर्वन्ति दानवा यक्ष राक्षसाः ।
पिशाचा यातुधाना वा गुह्य का भुजगाअपि ॥
यः पठेत शुचिः पार्थ ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।
अभग्नयोगो वर्षं तु सोऽश्वमेध फलम् लभेत् ॥

॥ इति श्री महाभारते अनुशासनपर्वणि तण्डिकृत शिवसहस्र नाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

विष्णुकृत शिवसहस्रनाम

श्रूयतां भो ऋषि श्रेष्ठां येन तुष्टो महेश्वर।
तदहं कथयाम्यद्यशिव नाम सहस्रकम् ॥
शिवोहरो मृडो रुद्रः पुष्प लोचनः।
अर्थिगम्यः सदाचारः शर्वः शम्भुमहेश्वरः ॥
चन्द्रापीडश्च चन्द्रमौलिर्विश्वं विश्वम्भरेश्वरः।
वेदान्त सारस दोह कपाली नील लोहितः ॥
ध्यानाधरोऽपिरिच्छेद्यो गौरीभर्ता गणेश्वरः।
अष्ट मूर्ति विश्वमूर्ति स्वर्गः स्वर्ग साधनः ॥
ज्ञान ज्ञम्यो दृढ़प्रज्ञो देव देव त्रिलोचनः।
वाम देवो महा देवो पटुः परिदृढ़ोदृढ़ः ॥
विश्वरूपो विरूपाक्षो वागीशशुचिसत्तमः।
सर्वं प्रमाण संवादी वृषङ्को वृषवाहनः ॥
ईश पिनाकी खटवांगी चित्रवेपिश्चिरन्तनः।
तमोहरो महायोगी गोप्ता ब्रह्मण धुर्जटि ॥
काल कालः कृत्तिवासा सुभगः प्रणवात्मकः।
उन्नध्र पुरुषौजुष्योदुर्वासाः पुरशासनः ॥
दिव्यायुधः स्कन्द गुरुः परमेष्ठो परात्परः।
अनादि मध्य निधनो गिरीशो गिरिजाधवः ॥
कुवेर वन्धु श्रीकण्ठो लोक वर्णोत्तमो मृदुः।
[illegible] कोदण्डी नील कण्ठः परश्वधी ॥

विशालाक्षो मृग व्याघ्रः सुरेश सूर्य तापनः।
धर्माध्यक्षः क्षमाक्षेत्र भगवान् भगनेत्रभितं॥
उग्रः पशुपतिस्ताक्ष्यः प्रिय भक्तः परंतपः।
दाता दया करो दक्षः कपर्दी कामशासनः॥
श्मशान निलयः सूक्ष्मः श्मशानस्थः महेश्वरः।
लोककर्त्ता मृगपतिर्महकर्त्ता महौषधिः॥
सोमपोऽमृतपः सौम्यो महा तेजा महाद्युति।
तेजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्च सुधापतिः॥
नीति सुनीतिः शुद्धात्मा सोमः सोमतर सुखी।
उत्तमो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः॥
अजातशत्रु अलोकसम्भाव्ये हव्यवाहनः।
लोकं करो वेदकरः सूत्रकारः सनातनः॥
पिनाकपाणिर्भूदेव स्वस्तिदः सुकृतसुधीः।
महर्षि कपिलाचार्यो विश्व दीप्तिस्त्रिलोचनः॥
धातृधापा धामकरः सर्वदः सर्वगोचरः।
ब्रह्मसृक सृकर्संगः कर्णिकारः प्रियः कविः॥
शाखो विशाखः गौशाखः शिवौः भिषगनुत्तमः।
गङ्गाप्लवोदकोभव्यः पुष्कलः, स्थापितः स्थिरः॥
विजितात्मा, विधेयात्मा भूतवाहन सारथिः।
सगणो गणकायश्च सुकीर्तिश्छिन्नसंशयः॥
कामदेवः कामपालो भस्मोद्धूलित विग्रहः।
भस्मप्रियो भस्मशायी कामीकान्तः कृतागमः॥
समावर्त्तो निवृत्तात्मा धर्मपुञ्जः सदाशिवः।
अकल्मषश्च पुण्यात्मा चतुर्बाहुर्दुरासदः॥

दुर्लभो दुर्गः सर्वायुध विशारदः ।
अध्यात्मयोगनिलय सुततुस्तुस्तुवर्द्धनः ॥
शुभांगोलोक सारङ्गी जगदीशो जनार्दनः ।
भस्मशुद्धीकरेऽभीरुरोजस्वी शुद्धविग्रहः ॥
असाध्यः साधुसाध्यश्च भृत्यमर्कटरूपधृक ।
हिरण्यसेतापौराणोरिपुजीवहरोवली ॥
महाह्रदो महागतः सिद्धो वृन्दारवन्दितः ।
व्याघ्रचर्माम्बरोव्यालो महाभूतो महानिधिः ॥
अमृतोऽमृतपः श्रीमान्पाञ्चजन्यः सुभाजनः ।
पञ्चविंशति तत्त्वस्थः पारिजातः परात्परः ॥
सुलभः सुव्रतः शूरोवांग मयैकनिधिर्निधिः ।
वर्णाश्रमगुरुर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रु तापनः ॥
आश्रमः श्रमणः क्षामो ज्ञानवानचलेश्वरः ।
प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः सुपर्णी वायुवाहनः ॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणः शशिगुणाः करः ।
सत्यसत्यपरोऽदीनो लज्जाङ्ग धर्मशासनः ॥
अनन्तदृष्टिरानन्दो दण्डोदमयिता दम ।
अभिचार्यो महामायो विश्वकर्म विशारण ॥
वीतारोगो विनीतात्मा तपस्वी भूतभावनः ।
उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नो जितकामो जितेन्द्रियः ॥
कल्याण प्रकृति कल्प सर्वलोक प्रजापति ।
तपस्वी तारको धीमान्प्रधान प्रभुरव्यवय ॥
लोकपालोकऽन्तरात्मा च कल्पादि कमलेक्षणः ।
वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो नियमो नियताश्रमः ॥

चन्द्रः सूर्यं शनि केतुर्वरागं विद्रुमच्छविः ।
भक्तवश्यः परम्ब्रह्म मृगवाणार्पणोऽनघः ॥
अद्रि अद्रियालयः कान्तः परमात्मा जगद्गुरुः ।
सर्वकर्मालयस्तुष्टो मङ्गल्योमङ्गलावृतः ॥
महातपाः दीर्घतपाः स्थाविष्टः स्थविरोध्रुवः ।
अहः संवत्सरोव्याप्तिः प्रमाणं परमं तपः ॥
संवत्सरो मन्त्रः प्रत्ययः सर्वतापनः ।
अजः सर्वेश्वरः सिद्धो महातेजा महाबलः ॥
योगीयोग्यो महारेताः सर्वदिग्ग्रहः ।
वसुर्वसुमुनाः सत्यः सर्वपापहरोहरः ॥
सुकीर्त्तिः शोभनः सत्त्वो वेदाङ्गो वेद्विन्मुनिः ।
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता लोकनाथो प्रतापवान् ॥
कमण्डलुधरो महामायाः सर्वावासश्चतुष्पथः ।
कालयोगी महानदो महोत्साहो महाबलः ॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचर पुरन्दरः ।
निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः ॥
अनिर्देश्यवपुः श्रीमान्सर्वाचार्यो मनोगतिः ।
बहुश्रुतिर्महामायो नियतात्म ध्रुवोऽध्रुवः ॥
तेजस्तेजोद्युतिधरो जनकः सर्वशासनः ।
नृत्यप्रियो नित्यनृत्यः प्रकाशात्मा प्रकाशकः ॥
स्पष्टाक्षरो बुद्धो मन्त्रः समानः सारसप्लवः ।
युगादिकृतद्युगावर्तो गम्भीरो वृषवाहनः ॥
इष्टोविशिष्टः शिष्टे सुलभः सारशोधनः ।
तीर्थरूपो तीर्थनामा तीर्थदृश्यस्त तीर्थदः ॥

अपां निधिरधिष्ठान दुर्जयो जयकालवित् ।
प्रतिष्ठम: प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरि: ॥
विमोचन: सुरगणो विद्यशो विन्दुसंशय: ।
बालरूपोऽमलोऽवलोन्मत्त विकर्ता गहनोगुह: ॥
कारणं फारनं कर्त्ता सर्वबन्ध विमोचन: ।
व्यवसायो व्यवस्थान स्थान दो जगदादिज: ॥
गुरुदो ललितो भेदो नवात्मात्मनि संस्थित: ।
वीरेश्वरो वीरभद्रो वीरासन विधिगुरु: ॥
वीरचूडामणिर्वेता चिदानन्दो नन्दीश्वर: ।
आज्ञाधर स्त्रिशूली च शिपिविष्ठ: शिवालय: ॥
बालखिल्यो महावीरस्तिग्मांशुबधिर: खग: ।
अभिराम: सुशरण: सुब्रह्मण्य: सुधापति: ॥
मघवा कोशिको गोमान्विरत्म: सर्वसाधन: ।
ललाटाक्षो विश्वदेह: सार: संसारचक्र: भृत् ॥
अमोघदण्डो मध्यस्थो हरिणो ब्रह्मवर्चस: ।
परमार्थ: परमाचो संचयो व्याघ्र कोमल: ॥
रुचिर्वहुरुचिर्वैद्यो वांचस्पतिरहंस्पति: ।
रविर्विरोचन: स्कन्द शास्ता वैवस्वतोयम: ॥
युतिरुन्नतकीर्तिश्च सानुरागा: पुरञ्जन: ।
कैलासाधिपति: कान्त: सविता रविलोचन: ॥
विश्वोत्तमो वीतभयो विश्वभर्त्ता: ।
नित्यो नियत कल्याण: पुण्यश्रवण कीर्तन: ॥
दूरश्रवो विश्वसहो ध्येय: दु:स्वप्ननाशना ।
उत्तारणो दुष्कृतिहा विज्ञेयो दुःसहो भवः ॥

अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मी किरीटी त्रिदशाधिपः ।
विश्वगोप्ता विश्वकर्ता सुवीरो रुचिरोंगदः ॥
जननीजन जन्मादिः प्रीतिमान नीतिमानध्रुवः ।
वसिष्ठः कश्यपः भानुर्भीमो भीमपराक्रमः ॥
प्रणवः सत्यधाचारी महोकोशो महाधनः ।
जन्माधपो महादेव शकयागमपारगः ॥
तत्वं तत्वदेकात्मा विभुर्विष्णु विभूषणः ।
ऋषिर्ब्राह्मण ऐश्वर्य्यं जन्ममृत्युजरातिगः ॥
पञ्चतत्व समुत्पत्तिर्विश्वेशो विमलोदयः ।
अनाद्यन्तो ह्यात्मयोनिर्वत्सलो भूतलोकधृक ॥
गायत्री वल्लभः पार्शविश्वावासः प्रभाकरः ।
शिशुर्गिरिरतः सम्राट सुपर्णः सुरशत्रुहा ॥
अमोघोऽरिष्टनेमिश्च मुकुन्दी विगतज्वरः ।
स्वयंज्योतिर्महाज्योतिस्तनुज्योतिरचंचलः ॥
पिङ्गलः कपिलश्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीत नूः ।
ज्ञानस्कन्धा महानीति विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः ॥
भयो विवस्वानादित्यो गतपारी बृहस्पतिः ।
कल्याण गुणनामा च पापहापुण्यदर्शनः ॥
उदार कीर्तिरूद्योगी सद्योगी सदतस्त्रपः ।
नक्षत्रमाली नाकेशः स्वधिष्ठानः षडाश्रिय ॥
पवित्र पाप नाशश्च मणिपूरो नभोगतिः ।
हृत्पुण्डरींकमासीनः शक्रः शान्तिर्वृषकपिः ॥
उष्णो गृहपतिः कृष्णो समर्थोऽनर्थ नाशनः ।
अधर्म शत्रुरज्ञेय पुरुहुतः पुरश्रुतः ॥

ब्रह्मगर्भो बृहद्‍गर्भो धर्मदेनधनागमः ।
जगद्धितैषी सुगतः कुमारः कुशकागमः ॥
हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः ।
आराज्ञो नयनाध्यक्षो विश्वामित्रो धनेश्वरः ॥
ब्रह्मज्योर्वसुधामा महाज्योतिरनुत्तमः ।
मातामहो मातारिश्वान् भस्वान्नामहारधृक् ॥
पुलस्त्यः पुलहोऽगस्त्यो जातुकर्ण्यः पराशरः ।
निरायरणनिर्वादो वैरञ्चयो विष्ठरश्रुवा ॥
आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिर्नार्मूर्तिर्मयशाः ।
लोकनीराग्रणीर्वीरश्चण्डः सत्यपराक्रमः ॥
व्यालकल्पो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ।
अलकारिष्णुरचलो रोचिष्णर्विक्रमोन्नतः ॥
आयुः शब्दपतिर्वाग्मी प्लवनः शिखिसारिथः ।
असस्पृष्टोऽतिथिः शत्रुः प्रमाथी पादपासनः ॥
वसु श्रवाहव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः ।
जप्यो जरादि शमनो लोहिश्च तनूनपात् ॥
बृहदश्वो नभोयोनिः सुप्रतीकस्तमिस्रहा ।
निदाघस्तमन मेघस्वक्षः परस्पुरञ्जयः ॥
सुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः ।
वसन्तो माधवी ग्रीष्मो नभस्यो बीजवाहना ॥
अङ्गिरा गुरुरात्रेयो विमलो विश्ववाहनः ।
पावनः पुरजिच्छक्रस्त्रैविद्यो नरवाहणः ॥
मनोबुद्धिरहंकारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः ।
जमदग्निर्बलनिधिर्विशालो विश्वगालवः ॥

अधीरोऽनुत्तरो यज्ञः श्रेष्ठो निःश्रेयसप्रदः ।
शैलोगगन कुन्दाभो दानवारिररिन्दमः ॥
रजनी जनकश्चारु विः शल्यो लोकशल्यधृक ।
चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चश्चतुरप्रियः ॥
आमनायोऽथ समान्नायस्तीर्थ देवः शिवालयः ।
बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः ॥
न्याय निर्यायको नेयो न्यागम्यो निरंजनः ।
सहस्रमूर्द्धा देवेन्द्रः सर्वशास्त्र प्रभञ्जनः ॥
मुण्डी विरूपो विकृतो दण्डी दानी गुणोत्तमः ।
पिङ्गलाक्षो जनाध्यक्षो नीलग्रीवो निरामयः ॥
सहस्रबाहु सर्वेश शरण्य सर्वलोकधृक् ।
पदमासनः परमज्योतिः पारम्पर्य्यफलप्रदः ॥
पदमगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः ।
परावरज्ञो वरदो वरेण्यश्च महास्वन ॥
देवासुर गुरुर्देवो देवासुर नमस्कृत्यः ।
देवासुरमहामित्रो देवासुर महेश्वरः ॥
देवासुरेश्वरो दिव्यो सुरमहाश्रयः ।
देवदेवोऽनयोऽचिन्त्यो देवतात्मात्मसम्भवः ॥
सद्योनिर्ह्यसुर व्याघ्रो देवसिंहो दिवाकरः ।
विबुधाग्रवरः श्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः ॥
शिवज्ञानरतः श्रीमांछिखी श्रीपर्वत प्रियः ।
वज्रहस्तः सिद्धिखड्गो नरसिंहनिपातनः ॥
ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः ।
नन्दी नन्दीश्वरोऽनन्तो नग्नवृत्ति धरः ॥

लिङ्गाध्यक्षो सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावह्।
स्वर्धामा स्वर्गतः स्वर्गीस्वर स्वरमय स्वनः॥
वाणाध्यक्षो बीजकर्ता कर्मकृद्धर्मसम्भवः।
दम्भो लोभोऽर्थं वै शम्भुः सर्वभूत महेश्वरः॥
श्मशान निलयस्त्र्यक्षः सेतुरप्रतिमाकृतिः।
लोकोत्तर स्फटो लोकस्त्र्यम्बको नागभूषणः॥
अन्धकारिमंखद्वेषी विष्णुकन्धरपातनः।
हीनदोषोऽक्षय गुणो दक्षारिः पूणदन्तभित्॥
पूर्णं पूरयिता पुण्यः सुकमारः सुलोचनः।
- सागमेय प्रिय अक्रूरः पुण्यकीर्तिरनामयः॥
मनोजवः तीर्थंकरो जटिलो जीवितेश्वरः।
जीवितान्तकरो नित्यो वसुरेता वसुपदः॥
सद्गतिः सिद्धिनिः सिद्धः सज्जाति खलकंटकः।
कलाधारो महाकाल भूतः सत्यपरायणः॥
लोकलावण्यकर्ता च लोकोत्तर सुखालयः।
चन्द्र संजीवन शास्ता लोकगूढ़ः महाधिपः॥
लोकवन्धुर्लोकनाथः कृतिज्ञः कृतिभूषितः।
अनपायोऽक्षरः कान्तः सर्वशास्त्रभृतां वरः॥
तेजोमयोद्युतिधरो लोकनामग्रणीः अणुः।
शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा दुजर्यो दुरितक्रमः॥
ज्योतिर्मयो जगन्नाथो निराकारो जलेश्वरः।
तुम्बवीणो महाकोयः विशोकः शोकनाशनः॥
त्रिलोपकस्त्रिलोकेशः सर्वशुद्धिरधोक्षजः।

अव्यक्त लक्षणो देवो व्यक्तिऽव्यक्तो विशांपतिः॥

परः शिवो वसुर्नारासारोमानधरो मयः।
ब्रह्मा विष्णु प्रजापालो हंसो हंसगतिर्वयः॥
वेधाविधाता धाता च सृष्टा हर्ता चतुर्मुख।
कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः॥
हिरण्यगर्भो द्रुहिणो भूतपालोऽथ भूपतिः।
सद्योगी योगविद्योगी वरदो ब्राह्मण प्रियः॥
देव प्रिये देवनाथो देवज्ञः देव चिन्तकः।
विषमाक्षो विरूपाक्षो वृषदो वृषवर्द्धनः॥
निर्ममो निरहंकारो निर्मोही निरूपद्रवः।
दर्पहा दृप्तः सर्वर्तुपरिवर्त्तकः॥
सहस्रार्चिर्भूतिभषः स्निग्धाकृतिर दक्षिणः।
भूतभव्य भवन्नाथो विभवो भूति नाशनः॥
अर्थोऽनर्थो महोकोशः परकार्येक पण्डितः।
निष्कण्टकः कृतानन्दो तिर्व्यंजो व्याजमर्दनः॥
सत्यवान्सात्विकः सत्यः कृतस्नेह कृतागमः।
अकम्पितो गुणग्राही नैकात्मा नैक कर्मकृत॥
सुप्रीतः सुखदः सूक्ष्म सुकरो दक्षिणानिलः।
नन्दिस्कन्धवरो धुर्य्यः प्रकटः प्रीति बन्धनः॥
अपराजितः सर्वसहो गोविन्दः सत्ववाहनः।
अधृतः स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तियंशोधनः॥
वाराह शृङ्गधृक शृङ्गी बलवानेक नायकः।
श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेक बन्धुरनेक कृत॥
श्री वत्सल शिवारम्भः शान्तभद्रः समोयशः।
भूशयो भूषणो भतिर्मूर्तिकृद् भूत भावनः॥

अकम्पो भक्तिकायस्तु कालहानि काल विभुः।
सत्यवृता मना त्यागी नित्यः शान्त परायणः॥
परार्थवृत्तिर्वरदो विरक्तस्तु विशारदः।
शुभदः शुभ कर्त्ता च शुभ नामा शुभ स्वयम्॥
अनर्थितो गुणग्राही ह्ययकर्त्तांकनक प्रभः।
स्वभाव भद्रो मध्यस्थः शत्रुघ्नो विघ्ननाशनः॥
शिखण्डी कवची शूली जटी मुण्डी च कुण्डली।
अमृत्यु सर्वहृक सिंहस्तजोराशिर्महामणिः॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा वीर्यवान वीर्य कोविदः।
वेद्यश्च वै वियोगात्मा परावर मुनिश्वरः॥
अनुत्तोमो दुराधर्षो मधुरः प्रिय दर्शनः।
सुरेशः स्मरणः शर्व शब्दः प्रतप्ता परं॥
काल पक्षः काल कालः सुकृति कृत वासुकिः।
महेष्वासो महीभर्त्ता निष्कलङ्कौ विश्रंखलः॥
द्युतिमणिस्तर णिर्धन्यः सिद्धिदः सिद्धि साधनः।
वश्वतः सतः स्तुत्या न्यूणोनस्को महाभुजः॥
जर्मयोनिर्निरातङ्को नर नरायण प्रियः।
निर्लेपो यति सङ्गात्मा निर्व्यङ्गोव्यत्त नाशनः॥
स्वतः स्तुति प्रियः स्तोताव्यासमूर्ति निराकुलः।
निवद्यमयो पायो विद्याराशिश्च सत्कृतः॥
प्रशान्त बुद्धिरक्षण्णः संग्रहो नित्य सुन्दरः।
वैयाघ्र धुर्यो धात्रीसः शाकल्यः शर्वरीपतिः॥
मनमार्थ गुरुदत्तः शरीश्रितवत्सलः।
सोमो रसज्ञो रसदः सर्वसत्वावलम्बनः॥
एवं नाम्नां सहस्रेण तुष्टावहि हर हरिः।
प्रार्थबामांसम्भुर्वैपूजयामास पंकजैः॥

शिवस्वरूप भैरव सहस्रनाम स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री वटुक भैरव सहस्रनाम स्तोत्रस्य दुर्वासा ऋषिः अनुष्टुप-छन्दः श्री वटुकनाथो भैरवो देवता, मम सर्वकार्य सिद्ध्यर्थं, सर्वशत्रु निवारणार्थं श्री वटुक भैरव सहस्रनाम पाठमहं करिष्य ।

सहस्रनामानि

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भद्र स्वरूपाय जगदाद्य नमो नमः ॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः ।
नमः शुद्ध स्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः ॥
नमः कंकालरूपाय कालरूपी नमोस्तुते ।
नमः त्र्यंबकरूपाय महाकालाय ते नमः ॥
नमः संसार साराय शारदाय नमो नमः ।
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः ।
क्षेत्राक्षेत्र स्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः ॥
नमो नाम विनाशाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो मातंग रूपाय भाररूपी नमो नमः ॥
नमः सिद्ध स्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः ।
नमो बिन्दु स्वरूपाय बिन्दु [illegible] ॥
नमो मंगलरूपाय [illegible] नमो नमः ।
नमः संकष्ट नाशाय शंकराय नमो नमः ॥

नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः ।
नमो तंतस्वरूपाय एकरूप नमोस्तुते ॥
नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिकार नमोस्तुते ।
नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः ॥
नमो जलदरूपाय शामरूप नमोस्तुते ।
नमः स्थुलस्वरूपाय शुद्धरूपाय ते नमः ॥
नमो नीलस्वरूपाय रंगरूपाय ते नमः ।
नमो मंडलरूपाय मंडलाय नमो नमः ॥
नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्रगाथाय ते नमः ।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मवक्त्रे नमो नमः ॥
नमः त्रिशूलधराय धराधारिन्नमोस्तुते ।
नमः संसारबीजाय विरूपाय नमो नमः ॥
नमः विमलरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो जंगमरूपाय जलजाय नमो नमः ॥
नमः कालस्वरूपाय कालरूद्राय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः शत्रु विनाशाय भीषनाय नमो नमः ।
नमः शांताय दांताय भ्रमरूप नमोस्तु ते ॥
न्यायगम्याय शुद्धाय योगिध्येयाय ते नमः ।
नमः कमलकांताय कालवृद्धाय ते नमः ॥
नमो ज्योतिस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः ।
नमो कल्पस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो जयस्वरूपाय जगज्जाड्य निवारणे ।
महाभूताय भूताय भूतानां पतये नमः ॥

नमो नन्दाय वृन्दाय वादिने ब्रह्मवादिने ।
नमो वादस्वरूपाय न्यायगम्याय ते नमः ॥
नमो भवस्वरूपाय मायानिर्माण रूपिणे ।
विश्ववंद्याय वंद्याय विश्वभराय ते नमः ॥
नमो नेत्र स्वरूपाय नेत्र रूपिन्नमोस्तुते ।
नमो वरुणरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो यमस्वरूपाय वृद्धरूपाय ते नमः ।
नमः कुवेररूपाय कालनाथाय ते नमः ॥
नमः ईशानरूपाय अग्निरूपाय ते नमः ।
नमो वायूस्वरूपाय विश्वरूपाय ते नमः ॥
नमः प्राणस्वरूपाय प्राणाधिपतये नमः ।
नमः संहाररूपाय पालनाय नमो नमः ॥
नमः चन्द्रस्वरूपाय चण्डरूपाय ते नमः ।
नमो मंदरवासाय सर्वयोगिनाम वासिने ॥
योगिगम्याय योग्याय योगिनांपतये नमः ।
नमो जंगमवासाय वामदेवाय ते नमः ॥
नमः शत्रु विनाशाय नीलकण्ठाय ते नमः ।
नमो भक्तिविनोदाय दुर्भगाय नमो नमः ॥
नमो मान्य स्वरूपाय मानदाय नमो नमः ।
नमो भूतिविभूपाय भूषिताय नमो नमः ॥
नमो रजस्वरूपाय सात्त्विकाय नमो नमः ।
नमस्तायस्वरूपाय तारणाय नमो नमः ॥
नमो गंगा विनादाय जटासंधारिणे नमः ।
नमो भैरव रूपाय भीषणाय नमो नमः ॥

नमः संग्रामरूपाय संग्राम जयदायिने ।
संग्रामसाररूपाय यवनाय नमो नमः ॥
नमो वृद्धि स्वरूपाय वृद्धिदाय नमो नमः ।
नमः त्रिशूलहस्ताय शूलसंहारिणे नमः ॥
नमो द्वंदुस्वरूपाय रूपदाय नमः नमः ।
नमः शत्रुविनाशाय शत्रुयुद्ध विनाशिने ॥
महाकालाय कालाय कालनाथाय ते नमः ।
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमः नमः ॥
नमः शुभस्वरूपाय शुभरूपिन्नमोस्तुते ।
नमः कमलहस्ताय डमरूहस्ताय ते नमः ॥
नमः कुक्कर वाहनाय वहनाय नमो नमः ।
नमो विमल नेत्राय त्रिनेत्राय नमो नमः ॥
नमः संसाररूपाय सारमेयाय वाहिने ।
संसार ज्ञाननाथाय ज्ञानरूपाय ते नमः ॥
नमो मंगलरूपाय मंगलाय नमो नमः ।
नमो न्यायविशालाय मन्त्ररूपाय ते नमः ॥
नमो यन्त्रस्वरूपाय यन्त्रधारिन्नमोस्तुते ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः कलंकरूपाय कलंकाय नमो नमः ।
नमः संसार पाराय भैरवाय नमो नमः ॥
रूण्डमाल विभूषणाय भीषणाय नमो नमः ।
नमो दुःख निवाराय विपाराय नमो नमः ॥
नमो क्षण स्वरूपाय क्षणरूपाय ते नमः ।

नमो मुहूर्तरूपाय विहाराय नमो नमः ॥

नमो मोद स्वरूपाय श्रोणरूपाय ते नमः ।
नमो नक्षत्ररूपाय क्षेत्ररूपाय ते नमः ॥
नमो विष्णुस्वरूपाय विन्दुरूपाय ते नमः ।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मचारिन्नमोस्तुते ॥
नमः कंथा निवासाय पटवासाय ते नमः ।
नमो ज्वलनरूपाय ज्वलनाय नमो नमः ॥
नमो वटुक रूपाय धूर्तरूपाय ते नमः ।
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो वैद्यस्वरूपाय वैद्यरूपिन्नमोस्तुते ।
नमो औषधरूपाय औषधाय नमो नमः ॥
नमो व्याधि निवाराय व्याधिरूपिन्नमो नमः ।
नमो द्वारनिवाराय ज्वररूपाय ते नमः ॥
नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्रानांपतये नमः ।
विरूपाक्षाय देवाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो ग्रहस्वरूपाय ग्रहानांपतये नमः ।
नमः पवित्रधाराय परशुधाराय ते नमः ॥
यज्ञोपवीत देवाय देव देव नमोस्तुते ।
नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञानां फलदायिने ॥
नमो रणप्रतापाय तापनाय नमो नमः ।
नमो गणेशरूपाय गणरूपाय ते नमः ॥
नमो रश्मिस्वरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः ।
नमो विभक्तिरूपाय विमलाय नमो नमः ॥
नमो रश्मिरूपाय मलयरूपाय ते नमः ।
नमो मधुररूपाय माधिपूर्णकलापिने ॥

कालेश्वराय कालाय कालनाथाय ते नमः ।
नमो विश्व प्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो वृषस्वरूपाय कर्मरूपाय ते नमः ।
नमो वेदांत वेद्याय वेद सिद्धांतसारिणे ॥
नमो योनिस्वरूपाय भ्रातृरूपाय ते नमः ।
नमो भोगस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः शाखा प्रकाशाय पुरुषाय नमो नमः ।
नमः प्रकृतिरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो विश्वस्वरूपाय शिवरूपाय ते नमः ।
नमो ज्योतिस्वरूपाय निर्गुणाय नमो नमः ॥
निरंजनाय शांताय निर्विकाराय ते नमः ।
निर्ममाय विमोहाय विश्वनाथाय ते नमः ॥
नमः कण्ठप्रकाशाय शत्रुनाशाय ते नमः ।
नमो आशाप्रकाशाय आशापूर कृते नमः ॥
नमो मत्स्यस्वरूपाय योगरूपाय ते नमः ।
नमो वाराहरूपाय वामनाय नमो नमः ॥
नमो आनन्दरूपाय आनन्दाय नमो नमः ।
नमः अनर्घकेशाय ज्वलत्केशाय ते नमः ॥
नमः पापविमोक्षाय मोक्षाय नमो नमः ।
नमः कैलाश नाथाय कालनाथाय ते नमः ॥
नमो विदुर्दविदाय विदुभाय नमो नमः ।
नमः प्रणवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो मेरुनिवासाय [illegible] ते नमः ।

नमो मेरुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥

नमो भद्रस्वरूपाय भद्ररूपाय ते नमः।
नमो योगिस्वरूपाय योगिनां रूपाय नमः॥
नमो मैत्रस्वरूपाय मित्ररूपाय नमो नमः।
नमो ब्रह्मनिवासाय काशीनाशाय ते नमः॥
नमो ब्रह्माण्डवासाय ब्रह्मवासाय ते नमः।
नमो मातंगवासाय सूक्ष्मवासाय ते नमः॥
नमो मातृनिवासाय भ्रातृवासाय ते नमः।
नमो जगन्निवासाय जलावासाय ते नमः॥
नमः कौलनिवासाय नेत्रवासाय ते नमः।
नमो भैरववासाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो समुंद्रवासाय वह्नि वासाय ते नमः।
नमश्चन्द्र निवासाय चन्द्रवासाय ते नमः॥
नमः कलिंगवासाय कलिगाय नमो नमः।
नमः उत्कलवासाय महेन्द्रवासाय ते नमः॥
नमः कपूर्वासाय सिद्धिवासाय ते नमः।
नमः सुन्दरवासाय भैरवाव नमो नमः॥
नमः आकाश वासाय सर्वयोगिनां वासिने।
नमो ब्रह्मणवासाय शूद्रवासाय ते नमः॥
नमः क्षत्रियवासाय वैश्यवासाय ते नमः।
नमः पक्षिनिवासाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः पातामूलाय मूलावासाय ते नमः।
नमो रसातल वासाय सर्वपाताल वासिने॥
नमः कंकाल वासाय कंकवासायते नमः।
नमो मंत्र निवासाय भैरवाय नमो नमः॥

नमोऽहङ्कार रूपाय राजो रूपाय ते नमः।
नमः सत्व निवासाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो नलिर्नरूपाय नलिनांग प्रकाशिने।
नमः सूर्य स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो दृष्ट निवासाय साधुपायन रूपिणे।
नमो नभ्र स्वरूपाय स्तंभनाय नमो नमः॥
पंच योनि प्रकाशाय चतुर्योनि प्रकाशिने।
नवयोनि प्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः षोडश रूपाय नमः षोडश धारिणे।
चतुःषष्टि प्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥
नमोर्विदु प्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमो गणस्वरूपाय सुखरूपनमोऽस्तुते॥
नमो अम्बर रूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो नाना स्वरूपाय मुख रूप नमोऽस्तुते॥
नमो दुर्ग स्वरूपाय दुखहंत्रे नमोऽस्तुते।
नमो विशुद्ध देहाय दिव्यदेहाय ते नमः॥
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः प्रेत निवासाय पिशाचाय नमो नमः॥
नमो दिशा प्रकाशाय निशा रूप नमोऽस्तुते।
नमः सोमाधे रामाय धराधीशाय ते नमः॥
नमः संसार भाराय भारकाय नमो नमः।
नमो देह स्वरूपाय अदेहाय नमो नमः॥
देव देहाय देवाय भैरवाय नमो नमः।
विश्वेश्वराय विश्वाय विश्वधारिन्नमोऽस्तुते॥

स्वप्रकाश प्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ।
स्थितिरूपाय स्थित्याय स्थित्तीनां पतये नमः ॥
सुस्थिराय सुकेशाय केशवाय नमो नमः ।
स्थविष्टाय गरिष्टाय प्रेष्ठाय परमात्मने ॥
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः पारद रूपाय पवित्राय नमो नमः ॥
नमो वेधक रूपाय अनिदाय नमो नमः ।
नमः शब्दस्वरूपाय शब्दातीताय ते नमः ॥
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो निंदा स्वरूपाय अनिदाय नमो नमः ॥
नमो विश्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः शरण्य शरण शरण्यानां सुखाय ते ॥
नमः शरण्य रक्षाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः स्वाहास्वरूपाय स्वधारूपाय ते नमः ॥
नमो वौषट् स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
अक्षराय नमस्तुभ्यं त्रिधामात्रास्वरूपिणे ॥
नमो अक्षराय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः ।
अर्धं मात्राय पूर्णाय पूर्णाय ते नमो नमः ॥
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमोऽष्टचत्ररूपाय ब्रह्मरूपाय ते नमः ॥
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः सृष्टिस्वरूपाय सृष्टि कर्त्रे महात्मने ॥
नमः पालयस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः सिद्धाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः ॥

नमो धारास्यरूपाय खड्गहस्ताय ते नमः।
सनातनाय नित्याय निर्गुणाय गुणाय ते ॥
नमस्त्रिशूलहस्ताय भैरवाय नमो नमः।
नमः कुण्डल वर्णाय शवमुंड विभूषिणे ॥
महा क्रुद्धाय चंडाय भैरवाय नमो नमः।
नमो वासुकिभूपाय सर्प भूषाय ते नमः ॥
नमः कपालहस्ताय भैरवाय नमो नमः।
पान पात्र प्रमत्ताय मत्तरूपाय ते नमः ॥
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः।
मद्यककार सुयर्णाय माधवाय नमो नमः ॥
नमो मांगल्यरूपाय भैरवांय नमो नमः।
नमः कुमार रूपाय स्त्रीस्वरूपाय नमो नमः ॥
नमो गंध स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो दुर्गंधरूपाय सुगंधाय नमो नमः ॥
नमः पुष्प स्वरूपाय पुष्प भूषण ते नमः।
नमः पुष्प प्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः पुष्प विनोदाय पुष्प पूजाय ते नमः।
नमो भक्ति निवासाय भक्त दुख निवारणे ॥
भक्त प्रियाय शांताय भैरवाय नमो नमः।
नमो भक्त स्वरूपाय रूपदाय नमो नमः ॥
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो वासाय भद्राय वीरभद्राय ते नमः ॥
नमः संग्राम साराय भैरवाय नमो नमः।
नमः सड्वांगहस्ताय कालहस्ताय ते नमः ॥

नमो ऽघोराय घोराय घोरा घोरस्वरूपिणे ।
घोर घर्माराय घोराय भैरवाय नमो नमः ॥
घोर त्रिशूल हस्ताय घोर पानाय ते नमः ।
घोर रूपाय नील रूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
घोर वाहन गम्याय अगम्याय नमो नमः ।
घोर ब्रह्म स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
घोर शब्दाय घोराय घोर देहाय ते नमः ।
घोर द्रव्याय घोराय भैरवाय नमो नमः ॥
घोर संहाय सिंहाय सिंसिंहाय ते नमः ।
नमः प्रचण्ड सिंहाय सिंहरूपाय ते नमः ॥
नमः सिंह प्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः ।
नमो विजय रूपाय जगदाद्य नमो नमः ॥
नमो भार्गव रूपाय गर्भरूपाय ते नमः ।
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो मेध्याय शुद्धाय मायाधीशाय ते नमः ।
नमो मेध प्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥
दुर्ज्ञाय दुस्तराय दुर्लभाय दुरात्मने ।
भक्तिलभ्याय भव्याय भाविताय नमो नमः ॥
नमो गौरव रूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो भैरव रूपाय गौरवाय नमो नमः ॥
नमो विघ्न निवाराय विघ्नराशिन्नमोऽस्तुते ।
नमो विघ्न विद्रावणाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो किंशुक रूपाय रजो रूपाय ते नमः ।
नमो नील स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥

नमो गण स्वरूपाय गण नाथाय ते नमः।
नमो विश्व प्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो योगि प्रकाशाय योगिगम्याय ते नमः।
नमो हेरम्ब रूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमस्त्रिधार स्वरूपाय रूपदाय नमो नमः।
नमः स्वर स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः सरस्वतीरूपाय बुद्धिरूपाय ते नमः।
नमो वैद्य स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमस्त्रिविक्रमरूपाय त्रिस्वरूपाय ते नमः।
नमः शशांक रूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो व्यापक रूपाय व्याप्य रूपाय ते नमः।
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो विशद रूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः सत्व स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः सूक्त स्वरूपाय शिवदाय नमो नमः।
नमो गंगा स्वरूपाय यमुनारूपिणे नमः॥
नमो गौरी स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो दुःख विनाशाय दुःख मोक्ष रूपिणे॥
महाबलाय, वैद्याय, भैरवाय नमो नमः।
नमो नन्दि स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो नन्दि स्वरूपाय स्थिररूपाय ते नमः।
नमः केलि स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः क्षेत्र निवासाय वासिणे ब्रह्मवादिने।
नमः शांताय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः॥

नमो नर्मदरूपाय जलरूपाय ते नमः ।
नमो विश्व विनोदाय जयदाय नमो नमः ॥
नमो महेन्द्र रूपाय महनीयाय ते नमः ।
नमः संसृतिरूपाय शरणीयाय ते नमः ॥
नमस्त्रिन्धुवासाय बालकाय नमो नमः ।
नमः संसारसाराय संसारपतये नमः ॥
नमः जरस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः कारुण्यरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो गोकार्जरूपाय ब्रह्मवक्षाय ते नमः ।
नमः शङ्करवर्णाय हस्तिकर्णाय ते नमः ॥
नमो विष्टरकर्णाय यक्षकर्णाय ते नमः ।
नमः शंबुककर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो दिव्यसुकर्णाय कालकर्णाय ते नमः ।
नमो दिग्रूपकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो विशुद्धकर्णाय विमलाय नमो नमः ।
नमः सहस्रकर्णाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो नेत्रप्रकाशाय सुनेत्राय नमो नमः ।
नमो वरदनेत्राय जयनेत्राय ते नमः ॥
नमो विमलनेत्राय योगीनेत्राय ते नमः ।
नमः सहस्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः कलिदरूपाय कलिदाय नमो नमः ।
नमो ज्योतिस्वरूपाय ज्योतिषाय नमो नमः ॥
नमस्तारप्रकाशाय तारूपिन नमोऽस्तुते ।
नमो नक्षत्रस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥

नमश्चन्द्रप्रकाशाय चन्द्ररूप नमोऽस्तुते ।
नमो रश्मिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः आनन्दरूपाय जमानन्दरूपिने ।
नमो द्रविड़रूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः शंखनिवासाय शंकराय नमो नमः ।
नमो मुद्राप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो न्यासस्वरूपाय न्यासरूप नमोऽस्तुते ।
नमो विन्दुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो विसर्गरूपाय प्रणवरूपाय तें नमः ।
नमो मन्त्रप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो जंम्बुकरूपाय जंगमाय नमो नमः ।
नमो गरुड़रूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो भयदकर्णाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः आकाशवर्णाय कालकर्णाय ते नमः ॥
नमः लम्बुकरूपाय लंबिकाय नमो नमः ।
नमो लक्ष्मीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो वीरस्वरूपाय वीरणाय नमो नमः ।
नमः प्रचण्डरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो डंभस्वरूपाय डमरूधारिन्नमोऽस्तुते ।
नमः कलंकनाशाय कालनाथाय ते नमः ॥
नमः स्मृद्धिप्रकाशाय सिद्धियाय नमो नमः ।
नमः सिद्धस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो धर्म प्रकाशाय धर्मनाथाय ते नमः ।
धर्माय धर्मराजाय भैरवाय नमो नमः ॥

नमो धर्माधिपतये धर्मंध्येयाय ते नमः।
नमो धर्मार्थं सिद्धाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो विरजरूपाय रूपारूपप्रकाशिने।
नमो राजप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः प्रतापसिंहाय प्रतापाय नमो नमः।
नमः कोटिप्रतापाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः सहस्ररूपाय कोटिरूपाय ते नमः।
नमः आनन्दरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः संहारवंधाय वन्धकाय नमो नमः।
नमो विमोक्षरूपाय मोक्षदाय नमो नमः॥
नमो विष्णुरूपाय व्यापकाय नमो नमः।
नमो मांगल्य नाथाय शिवनाथाय ते नमः॥
नमो कालाय व्याघ्राय व्याघ्ररूप नमोऽस्तुते।
नमो व्यालविभूषाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो विद्याप्रकाशाय विद्यानामपतये नमः।
नमो योगस्वरूपाय क्रूररूपाय ते नमः॥
नमः संहाररूपाय शत्रुनाशाय ते नमः।
नमो पालकरूपाय भैरवाय नमो नमः॥
नमः कारूण्यदेवाय देवदेवाय ते नमः।
नमो विश्व विलासाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो नमः प्रकाशाय काशीवासिन्नमोऽस्तुते।
नमो भैरव क्षेत्राय क्षेत्रपालाय ते नमः॥
नमो भद्रस्वरूपाय भद्रकाय नमो नमः।
नमो भद्राधिपतये भयहंत्रे नमोऽस्तुते॥

नमो माया विनोदाय मायिने मदरूपिणे।
नमो मत्ताय शांताय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो मलयवासाय कैलाशाय नमो नमः।
नमो कैलाशवासाय कालिकातनयाय ते नमः ॥
नमः संसार साराय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातृविनोदाय विमालाय नमो नमः ॥
नमो यमप्रकाशाय नियमाय नमो नमः।
नमः प्राण प्रकाशाय ध्यानाधिपतये नमः ॥
नमः समाधिरूपाय निर्गुणाय नमो नमः।
नमो मन्त्रप्रकाशाय मन्त्ररूपाय ते नमः ॥
नमो वृंदविनोदाय वृंदकाय नमो नमः।
नमो वृहंतिरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो नैस्थिरपीठाय सिद्ध पीठाय ते नमः।
नमो मंगलपीठाय रक्तपीठाय ते नमः ॥
नमो यशोदानाथाय कामनाय ते नमः।
नमो विनोदनाथाय सिद्धिनाथाय ते नमः ॥
नमो नाथाय नाथाय ज्ञाननाथाय ते नमः।
नमः शंकरनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥
नमो मुदगलनाथाय नीलनाथाय ते नमः।
नमो बालकनाथाय धर्मनाथाय ते नमः ॥
विश्वनाथाय नाथाय कार्यनाथाय ते नमः।
नमो भैरवनाथाय महानाथाय ते नमः ॥

नमो ब्रह्मसनाथाय योगनाथाय ते नमः ।
नमो विश्वविहाराय विश्वभाराय ते नमः ॥
नमो रंगसनाथाय रंगनाथाय ते नमः ।
नमो मोक्षसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो गोरक्षनाथाय गोरक्षाय नमो नमः ।
नमो मन्दारनाथाय नन्दनाथाय ते नमः ॥
नमो मंगलनाथाय चम्पानाथाय ते नमः ।
नमो संतापनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो निर्धननाथाय सुखनाथाय ते नमः ।
नमः कारूण्यनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो द्रविड़नाथाय दरिद्रनाथाय ते नमः ।
नमः संसारनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ॥
नमो माध्वीक नाथाय मन्त्रनाथाय ते नमः ।
नमो न्गास सनाथाय ध्याननाथाय ते नमः ॥
नमो गोकर्णनाथाय महानाथाय ते नमः ।
नमः शुभ्रसनाथाय भैरवाय नवो नमः ॥
नमो विमलनाथाय मण्डलनाथाय ते नमः ।
नमः सरोजनाथाय सत्यनाथाय ते नमः ॥
नमो भक्तिसंनाथाय भक्तिनाथाय ते नमः ।
नमो मोहननाथाय वत्सनाथाय ते नमः ॥
नमो मातृसनाथाय विश्वनाथाय ते नमः ।
नमो विन्दुसनाथाय जयनाथाय ते नमः ॥
नमो मंगलनाथाय धर्मनाथाय ते नमः ।
नमो गंगासनाथाय भूमिनाथाय ते नमः ॥

नमो क्षीरसनाथाय बिन्दुनाथाय ते नमः ।
नमः कंचुकिनाथाय श्रंगिनाथाय ते नमः ॥
नमः समुद्रनाथाय पर्वतनाथाय ते नमः ।
नमो मांगल्यनाथाय कद्रुनाथाय ते नमः ॥
नमो वेदान्तनाथाय श्रीनाथाय नमो नमः ।
नमो ब्रह्माण्डनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो गिरीशंनाथाय वामनाथाय ते नमः ।
नमो बीजसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो मंदिरनाथाय मदनीनाथाय ते नमः ।
नमो भैरवीनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
अंबानाथाय नाथाय जन्तुनाथाय ते नमः ।
नमः कलिसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो मुकन्दनाथाय कुन्दनाथाय ते नमः ।
नमो कुण्डलनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमो ऽष्टचक्रनाथाय चक्रनाथाय ते नमः ।
नमो विभूतिनाथाय शूलनाथाय ते नमः ॥
नमो न्याससनाथाय न्यायनाथाय ते नमः ।
नमो दयासनाथाय जंगमनाथाय ते नमः ॥
नमो विशवनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ।
नमः कामिकनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥
नमः क्षेत्र सनाथाय जीवनाथाय ते नमः ।
नमश्चेलं नाथाय चैल नाथाय ते नमः ॥
नमो मात्रा सनाथाय ऽमात्राय नमो नमः ।
नमो द्वंद सनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥

नमः शूरमनाथाय शूरनाथ ते नमः।
नमः सौजन्यनाथाय सौजन्याय नमो नमः॥
नमो दृष्टि सनाथाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भय सनाथाय बिंबनाथाय ते नमः॥
नमो माय सनाथाय भैरवाय नमो नमः।
नमो विटंकनाथाय टंकनाथाय ते नमः॥
नमश्चर्म सनाथाय खड्ग नाथाय ते नमः।
नमः शक्ति सनाथाय धनुर्नाथाय ते नमः॥
नमो वान सनाथाय शाप नाथाय ते नमः।
नमो यन्त्र सनाथाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो गण्डूपनाथाय गण्डुषाय नमो नमः।
नमो डाकिनीनाथाय भैरवाय नमो नमः॥
नमो डामरनाथाय डारकाय नमो नमः।
नमो डंक सनाथाय डंकनाथाय ते नमः॥
नमो मांडव्यनाथाय यज्ञनाथाय ते नमः।
नमो यजुः सनाथाय क्रीड़ा नाथाय ते नमः॥
नमः साम सनाथाय ऽथर्वनाथाय ते नमः।
नमः शून्यायनाथाय स्वर्गनाथाय ते नमः॥

फलश्रुति—इदं नाम सहस्रं मे रुद्देन परिकीर्तितम्।
यः पठेत्पाठेयद्वापि स एव मम सेवकः॥
यं यं चिंतयते कामं कारकारं प्रियाकृति।
यः श्रणोति दुरायं हितं तं प्राप्नोतिमामकः॥
राजद्वारे श्मशाने तु पृथिव्यां जलसन्निधौ।
यः पठन्मानवाकृत्य स शूर..... संशय॥

एक कालं द्वकालं वा त्रिकाल वा पठेन्तर: ।
स: यावद् बुद्धिमांल्लोके भवेत्येव न संशय: ।।
य: श्रणोतिनोभक्तया स एव गुणसागर: ।
य: श्रद्धया रात्रिकाले श्रणोति पठते च वा ।।
स एव साधक: प्रोक्त सर्वदुष्ट विनाशक: ।
अर्धं रात्रौ पठेद्यस्तु स एव पुरूषोत्तम: ।।
त्रिसंध्यायां देव गृहे शमशाने च विशेषत: ।
वने च मार्ग गमने बले दुर्जने सन्निधौ ।।
य: पठेत्प्रयतो नित्यं स्सुखी स्यान्नसंशय: ।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनं ।।
शूरार्थी लभते शौर्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात ।
एकविंशतिमन्त्रेनऽक्षरेण सहैव मे ।।
य: पठेत्प्रातहृत्थाय सर्वकाममवाप्नुयात ।
रसार्थी रसमात्रेण रसं प्राप्नोति नित्यश: ।।
अन्नार्थी लभतेचान्नं सुखार्थी सुखमाप्नुयात ।
रोगी प्रमुच्यते रोगाद्वद्धोमुच्यते बंधनात ।।
शापार्थी लभते शापं सर्वंशत्रु विनाशनं ।
स्थावरंजंमं वापि विष सर्वं प्रणश्यति ।।
सर्वलोकप्रियशांतो मातृपितृ प्रियंकर: ।
संग्रामे विजयं तस्य य: पठेतभक्ति संयुत: ।।
सकलं विजयं देवि स्तोभमेतत्प्रकीर्तितम् ।
इदं स्त्रोत्रं महतपुण्यं निंदकाय न दर्शयेत् ।।
ऽसाधकाय दुष्टाय मातृपितृ विकारिणे ।
ऽस्वामिकायाकुलीनाय नेदं स्सोत्र प्रकाशयेत् ।।

साधकाय च भक्ताय योगिने धार्मिकाय च ।
गुरुभक्ताय शांताय दर्शयेत्साधकोत्तमः ॥
अन्यथा पापभिन्नस्यात्क्रोधोऽय भैरवोत्तमे ।
तस्मातसर्वप्रयत्नेन गोपनीयं प्रयत्नतः ॥
इदं स्तोत्रं च रुद्रेन रामस्यापीःमुखेऽर्सपतम् ।
तन्मुखाद्विश्रुतं लोकेदरिद्राय च बंधवे ॥
रामेण कथितं श्रामे लक्ष्मणाय मदात्मने ।
ततो दुर्वासिसे प्राप्तं तेनैवोक्तं तु पांडवे ॥
पांडवोह्यब्रवीत्कृष्णं कृष्णेनेह प्रकीर्तितम् ।
अस्य स्तोत्रस्य महात्मयं रामोजानाति तत्त्वतः ॥
रामोऽपिराज्यं संप्राप्तोऽस्य स्तोत्रस्य पाठतः ।
पांडवोऽपि तथा राज्य संप्राप्तो भैरवस्य च ॥
अनेने स्तोत्र पाठेन किमलभ्यं भवदिति ।
सर्वलोकस्य पूज्यस्तु नाम न संशयः ॥

॥ इति श्री रुद्रयामलोक्तं श्री भैरव सहस्रनाम स्तोत्रं ॥

शिवरामाष्टकम्

शिवहरे शिवराम सखे प्रभो,
त्रिविधताप-निवारण हे विभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥

कमल लोचन राम दयानिधे,
हर गुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भव शङ्कर पाहिमां,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥

स्वजनरञ्जन मङ्गलमन्दिर,
भजति तं पुरूषं परं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं,
शिवहरे विजयं कुरू मे वरम्॥

जय युधिष्ठिर-वल्लभ भूपते,
जय जयार्जित-पुण्यपयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तुते,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥

भवविमोचन माधव मापते,
सुकवि-मानस हंस शिवारते।

जनक जारत माधव रक्षमां,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥

अविन-मण्डल-मङ्गल मापते,
जलद सुन्दर राम रमापते।
निगम-कीर्ति-गुणार्णव गोपते,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥
पतित-पावन-नाममयी लता,
तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥
अमर तापर देव रमापते,
विनयतस्तव नाम धनोपमम्।
मयि कथं करूणार्णव जायते,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥
हनुमतः प्रिय चाप कर प्रभो,
सुरसरिद्-धृतशेखर हे गुरो।
मम विभो किमु विस्मरणं कृतं,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥
नर हरेति परम् जन सुन्दरं,
पठति यः शिवरामकृतस्तवम्।
विशति राम-रमा चरणाम्बुजे,
शिव हरे विजयं कुरू मे वरम्॥
प्रातरूत्थाय यो भक्त्या पठदेकाग्रमानसः।
विजयो जायते तस्य विष्णु सान्निध्यमाप्नुयात्॥

रुद्राक्ष महात्म्य एवं धारण विधि

शिव पुराण एवं स्कन्द पुराण में रुद्राक्ष महात्म्य एवं धारण विधि का वर्णन किया गया है। रुद्रक्ष को साक्षात् शिव स्वरूप कहा गया है। रुद्राक्ष शिवजी को अत्यन्त प्रिय है, यह अतीव, पवित्र, दर्शन, स्पर्श एवं जप से सम्पूर्ण पापों का नाशक बतलाता गया है। सर्वप्रथम भगवान शिव ने लोकोपकार की भावना से भगवती के समक्ष रुद्राक्ष की महिमा का वर्णन किया था।

रुद्राक्ष भी वर्ण व्यवस्थानुसार चार प्रकार का होता है। श्वेत, रक्त, पीत एवं कृष्ण, मनुष्य को अपने वर्णानुसार रुद्राक्ष को धारण करना श्रेयस्कर रहता है। श्वेत ब्राह्मण वर्णी है ब्राह्मण को धारण करना चाहिए रक्त रुद्राक्ष क्षत्रिय को पीत वैश्य को और कृष्ण शूद्र को धारण करना उचित है। आज के युग में वर्ण व्यवस्था कुछ अटपटी लग सकती है। यह प्राचीन व्यवस्था है और हमारे पूर्वजों ने बहुत सोच-विचार कर प्रचलित की थी। इसमे न तो किसी जाति विशेष को बोध होता है न ही किसी से घृणा करने की बात।

वेद में कहीं भी जाति भेद और स्त्री पुरुष में असमानता के प्रमाण नहीं मिलते। यदि वेदों के ऐसे संकुचित विचार होते तो उन्हें विश्व व्यापी ख्याति कदापि नहीं मिल पाती। यदि हमारे पूर्वजों में किसी प्रकार की असमानता की भावना होती तो वे विश्व भर में भारतीय संस्कृति का डंका बजाने विदेशों में न जाते अपतु अपनी उपासना पद्धति एवं सिद्धान्तों को अपने तक ही सीमित रखते, किन्तु व्यवहारिक रूप में ऐसा देखने को नहीं मिलता।

आज के शस्त्रों को देखते हुए ऐसा लगता है कि मध्यकालीन युग के आचार्यों ने अपने विचारों के अनुसार श्लोकों की रचना करके मिला दिए।

हो सकता है कि उस समय की परिस्थितियां ही ऐसी रही हों कि उन्हें मजबूरन ऐसा कदम उठाया पड़ा हो किन्तु आज ऐसे विचार किसी प्रकार भी उपयुक्त नहीं कहे जा सकेत कि जाति भेद को उभार कर धर्म भावना को मलिन करें। इससे मानवता का या राष्ट्र का कुछ भी भला नहीं हो सकता।

वर्णों को जाति का आधार मानना भ्रम मात्र ही है क्योंकि वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म नहीं गुण, कर्म स्वभाव रहे हैं। महाभारत के शान्ति पर्व में भारद्वाज जी ने महर्षि भृगु जी से प्रश्न किया था कि यदि रंग भेद से वर्णों का विभाजन किया जाए तो सभी वर्णों में सभी रंग के लोग होते हैं। यदि काम, क्रोध, भय, लोभ, शोक आदि के आधार पर वर्ण व्यवस्था की जाए तब भी यह सबमें समान रूप में मिलती हैं। मल-मूत्र, खून, पसीना, पित्त और कफ सब शरीरों में एक जैसा है फिर वर्ण भेद कैसे किया जाए ?

इस पर भृगु जी ने उत्तर दिया था इस संसार में पहले एक ही वर्ण था पीछे गुण और कर्म के भेद से चार वर्ण बने। सब मानव योनि द्वारा ही उत्पन्न होते हैं अर्थात् मल-मूत्र के स्थान से ही जन्म लेते है। सबमें एक-सी इन्द्रियवासनाएं हैं इसलिए जन्म से जाति मानना ठीक नहीं है। कर्म को प्रधानता से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र माने जाते रहे हैं। यदि शूद्र उत्तम कर्म वाला हो तो उसे ब्राह्मण मानना चाहिए और जो कर्तव्य-हीन ब्राह्मण हो उसे शूद्र से नीचा मानो।

गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं—

चतुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण् कर्म विभागशः (गीता ४/१३)

अर्थात् मैंने गुण कर्म के अनुसार मानव को चार वर्णों में बांट दिया है। अब हम मूल विषय पर आते हैं। भगवान शिव कहते हैं कि— हे महशानि ! मुक्ति के इच्छुक पुरुष को रुद्राक्ष अवश्य धारण करना चाहिए। शिव भक्तों को तो शिव और शिवा की प्रीति के लिए रुद्राक्ष को अवश्य ही धारण करना चाहिए आंवले के फल के बराबर का रुद्राक्ष उत्तम, वदरी फल के समान मध्यम और चणक प्रमाण को अधम कहा जाता है। बेर के बराबर का रुद्राक्ष लोक में सुख सौभाग्य की वृद्धि करता

है धात्री फल के बराबर का रुद्राक्ष समस्त अरिष्टों को शान्त करता है तथा चौंटली के प्रमाण का रुद्राक्ष सर्वार्थ साधक माना गया हैं।

रुद्राक्ष को पाप नाश करने के निमित्त धारण किया जाता है। संसार में रुद्राक्ष की माला जितनी फलदायक है इतनी अन्य नहीं। कृमियों से खाए हुए, छिन्न-भिन्न, कांटे रहित, गोलाई से रहित तथा व्रण युक्त यह छः प्रकार के रुद्राक्ष धारण करने के अयोग्य माने जाते हैं। जिस रुद्राक्ष में स्वयं छेद हो वह उत्तम तथा मनुष्य द्वारा छेद क्रिया हुआ माध्यम माना गया है। रुद्राक्ष धारण करने से महा पाप भी दूर हो जाते हैं। सौ रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य रुद्र स्वरूप हो जाता है। साढ़े पांच सौ रुद्राक्षों को धारण करने वाला पुरुष कहा जाता है।

तीन सौ आठ रुद्राक्षों की तीन लड़ी बनाकर यज्ञोपवीत की तरह धारण करने, शिखा में तीन, कानों में छः-छः, कण्ठ में एक सौ एक बांहों में ग्यारह, कूर्पर और मणिबन्ध में ग्यारह तथा कटि में पांच रुद्राक्ष धारण करने वाला शिवजी के समान हो जाता है।

शिखा में एक, सिर में तीस, कण्ठ में पचास तथा दोनों भुजाओं में सोलह, मणिबन्ध में बारह स्कन्ध में पांच सौ तथा यज्ञोपवीत में एक सौ आठ रुद्राक्ष धारण करने वाला रुद्र के समान स्वरूप वाला माना गया है।

ईशान मंत्र से सिर में, तत्पुरुष मंत्र से कानों में अघोर मंत्र से कण्ठ और हृदय में, वामदेव मंत्र से, अन्य जगह सद्योजातादि मंत्र से अथवा सब जगह मूलमंत्र से रुद्राक्ष धारण करे। जो महात्मा रुद्राक्ष धारण करता है त्रिपुण्ड लगता है तथा शिव के पचांक्षर मंत्र को जपता है वह पूजनीय है।

जिसके गले में रुद्राक्ष तथा मस्तक पर त्रिपुण्ड है और जो मृत्युंजय का जप करता है उसकी अकाल मृत्यु कभी नहीं होती तथा उसके दर्शन करने से रुद्र के दर्शन का फल प्राप्त होता है। रुद्राक्ष की माला धारण किए हुए को देखकर भूत-प्रेत पिचाश अथवा अन्य द्रोही जीव तथा कुछ कृत्रिम अभिचारादि भी दूर से ही भाग जाते हैं।

भस्म रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य ही शिव भक्त माना गया है। भस्म तथा रुद्राक्ष माला के बिना शिव पूजन निष्फल कहा गया है।

भगवान शिव ने षणमुख को प्रत्येक मुख के रुद्राक्ष का फल लिखे

अनुसार बतलाया था। एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिव स्वरूप है और धारण करने पर ब्रह्महत्या के पाप का भी निवारण करता है। द्विमुखी रुद्राक्ष देव देवेश स्वरूप होता है तथा गौहत्या के पाप का नाशक कहा गया है। त्रिमुखी रुद्राक्ष अग्नि स्वरूप है और स्त्री हत्या के पाप को क्षय करता है। चतुर्मुखी रुद्राक्ष साक्षात् ब्रह्म स्वरूप है तथा नर हत्या के पाप को नष्ट करता है।

पंचमुखी रुद्राक्ष कालाग्नि रुद्र स्वरूप है और धारण करने पर मनुष्य अगम्य गमन और अभक्ष्य भक्षण आदि पापों से मुक्त हो जाता है। षणमुखी रुद्राक्ष स्वामी कार्तिकेय स्वरूप है जो मनुष्य इसे दाहिनी भुजा में धारण करता है वह भ्रूण हत्या (गर्भपात) के पाप से छूट जाता है। सप्तमुखी रुद्राक्ष अनन्त स्वरूप है एवं सैंकड़ों पापों का नाश करता है। अष्टमुखी रुद्राक्ष को साक्षात् गणेश स्वरूप जानो यह धारण करने पर स्त्री जन्य पातक से मुक्त हो जाता है।

नवमुखी रुद्राक्ष भैरव स्वरूप है एवं लक्ष कोटि पापों का नाश करता है। दशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् जनार्दन स्वरूप है तथा धारण करने से भूत-प्रेत, वेताल, ब्रह्म राक्षस आदि के भय से मुक्त करके पापों का नाश करता है। ग्यारह मुखी रुद्राक्ष साक्षात् रुद्र स्वरूप है इसके धारण करने से अनन्त फल प्राप्त होता है। बाहरमुखी रुद्राक्ष सूर्य स्वरूप है और धारण करने वाले को चोर, अग्नि आदि भय व्याप्त नहीं होता दरिद्र भी धनवान हो जाता है।

तेरहमुखी रुद्राक्ष इन्द्र स्वरूप है जो मनुष्य इसे धारण करता है वह अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण करके अतुल सौभाग्य का उपभोग करता है। चौदहमुखी रुद्राक्ष स्वयं हनुमत् स्वरूप है जो मनुष्य इसे धारण करते हैं वे निःसंदेह मोक्ष पद को प्राप्त कर लेते हैं। अब एकमुखी से लेकर चौदहमुखी रुद्राक्ष को धारण करने के मंत्र लिखे जाते हैं।

एकमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—अस्य श्री शिव मंत्रस्य प्रसाद ऋषिः पंक्ति छन्दः शिवो देवता हं बीजम् ॐ शक्तिः ममचतुर्वर्ग सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे

विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—प्रासाद ऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्द से नमो मुखे शिवो देवतायै नमः हृदि हं बीजाय नमः गुह्ये औं शक्तये नमः पादयोः विनियोगायै नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः ॐ एं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ हं ह्रू मध्यमाभ्यां नमः ॐ आं ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॐ ऐं ह्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः ॐ ॐ ह्रः करतल कर प्रष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॐ एं ह्रीं शिर से स्वाहा ॐ हं ह्रू शिखायै वषट् ॐ आं ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ऐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान : मुक्तापीन पयोद मौक्तिक जपा वर्णैर्मुखैः पञ्चाभि-
स्त्र्यक्षैराजितमीशमिन्दुमुकुटं पूर्णेन्दुकोटिप्रभम्।
शूलं टङ्क-कृपाण वज्रदहनं नागेन्द्रघण्टाशुकं,
हस्ताब्जेष्वभयं वरांश्च दधतं तेजोज्ज्वलं चिन्तये॥

ध्यान का अर्थ—घनघोर मेघ द्वारा मोती के समान जल से लाल मुख वाले, पांच मुखों वाले, तीन नेत्रों वाले, करोड़ों चन्द्रमाओं की कान्ति की भांति मुकुट पर चन्द्र धारण करने वाले, शूल, टंक, कृपाण, वज्रधारी, कामारि (कामदेव को मारने वाले) सर्पराज, घण्टा तथा तोता धारण किए हुए, हस्त कमल वाले तथा प्रचण्ड तेजोराशि शिवजी का मैं ध्यान करता हूं।

उपरोक्त रीति से ध्यान करके मानसोपचार पूजन करे तथा मूलमंत्र की ग्यारह माला का जप करे।

मूलमंत्र—"ॐ एं हं औं ऐं ॐ"

इसके पश्चात् स्थापित घट के ऊपर तांबे का पात्र रखकर रुद्राक्ष को उस पात्र में रख दे, प्राणायाम करे, प्राणायाम करने के बाद जलपात्र को बाएं हाथ में लेकर पुनः उस पात्र के नीचे दाहिना हाथ लगाकर हटा ले और ११ माला का जप करे तथा रुद्राक्ष पर जल छिड़के तब उसे धारण करे। यह रीति सभी मुखी रुद्राक्षों के लिए काम में लानी चाहिए।

द्विमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—अस्य श्री देवदेवश मन्त्रस्य अत्रि ऋषिः गायत्री छन्दः देवदेवशो देवता, क्षीं बीजम्, क्षौं शक्तिः चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—अत्रि ऋषये नमः शिरसि गायत्री छन्द से नमे मुखे, देवदेवशो देवतायै नमः हृदि क्षीं बीजाय नमः गुह्ये क्षौं शक्तये नमः पादयो विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ क्षीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ क्षीं मध्यामभ्यां नमः, ॐ क्षौं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ व्रीं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ॐ ॐ करतल कर प्रष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ क्षीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्षौं कवचाय हुम्, ॐ व्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ॐ अस्त्राय फट्।

ध्यानम् : तपनसोमहुताशन लोचनं घनसमान गलं शशिसुप्रभम्।
अभय-चक्र पिनाकवरान् करैंदंधतमिन्दुधरं गिरिशं भजेत्॥

ध्यानार्थ—सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि के समान तीन नेत्र वाले मेघ के समान गले वाले अर्थात् नीलकण्ठ, चन्द्रमा की कान्ति के सदृश अभयमुद्रा, चक्र एवं धनुधारी तथा जिनके भाल पर चन्द्रमा सुशोभित हैं उन गिरीश अर्थात् शिवजी को भजो।

मूलमंत्र—"ॐ क्षी ह्रीं क्षौं व्रीं ॐ"

त्रिमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

मूलमंत्र—"ॐ रं इं ह्रीं हूं ॐ"

विनियोग—अस्य श्री अग्नि मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः गायत्री छन्दः अग्नि देवता ह्रीं बीजम् हूं शक्तिः चतुवर्ग सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे च जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि गायत्री छन्द से

नमः मुखे, अग्निर्देवतायै नमः हृदि, ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ह्रूं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

कर न्यास—ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ रं तर्जनीभ्यां नमः ॐ इं मध्यमाभ्यां नमः ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्रूं कनिष्ठकाभ्यां नमः ॐ ॐ करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ रं शिरसे स्वाहा ॐ इं शिखायै वषट् ॐ ह्रीं कवचाय हुम् ॐ ह्रूं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ॐ अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् : अष्ट शक्तिस्वास्तिकामाति मुच्चैर्दीर्घैरेभिर्धायन्तं जपाभम् ।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थम् त्रिनेत्रं ध्यायेद् वह्नि वद्धमौलिं जटाभिः ॥

ध्यानार्थ—श्रेष्ठ स्वास्तिक आदि अष्टशक्तियों को धारण करने वाले अड़हुल (जपा फूल) के फूल के समान वर्ण वाले सोने के स्वरूप वाले पद्मासन पर विराजे हुए वह्नि (अग्नि) स्वरूप प्रखर तेजोमय जटाधारी तीन नेत्रों वाले भगवान शिव का ध्यान करे ।

चतुर्मुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—ॐ अस्य श्री ब्रह्म मन्त्रस्य भार्गव ऋषिः अनुष्टुप छन्दः ब्रह्मा देवता वां बीजम् क्रां शक्तिः चतुर्वर्ग सिद्धार्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—भार्गव ऋषिः नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्द से नमः मुखे ब्रह्मादेवतायै नमः हृदि वां बीजाय नमः गुह्ये क्रां शक्तये नमः पादयो विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

कर न्यास—ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ वां तर्जनीभ्यां नमः ॐ क्रां मध्यमाभ्यां नमः ॐ तां अनामिकाभ्यां नमः ॐ हां कनिष्ठकाभ्यां नमः ॐ ईं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ वां शिरसे स्वाहा, ॐ क्रां शिखायै वषट्, ॐ हां कवचाय हुम्, ॐ तां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् : प्रणम्य शिरसा शश्वदष्ट वक्त्रम् चतुर्मुखम् ।
गायत्री सहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम् ॥

ध्यानार्थ—समस्त सृष्टि के विधायक, सभी देवताओं के स्वामी, चारमुख वाले शिव के चरणों में मस्तक टेकते हुए गायत्री सहित भगवान चन्द्रमौली को मैं प्रणाम करता हूं ।

मूलमंत्र—"ॐ वां क्रां तां हां ई"

पंचमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—ॐ अस्य श्री मन्त्रस्य ब्रह्माऋषि:, गायत्री छन्द:, सदाशिव कालाग्नि रुद्रो देवता ॐ बीजम् स्वाहा शक्ति: रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोग: ।

ऋष्यादि न्यास—ब्रह्मऋषि: नम: शिरसि, गायत्री छन्द से नम: मुखे, सदाशिव कालाग्निरुद्रो देवतायै नमो हृदि ॐ बीजाय नमो गुह्ये स्वाहा शक्ति: नम: पादयो विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ।

कर न्यास—ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नम: ॐ ह्लां तर्जनीभ्यां नम: ॐ आं मध्यमाभ्यां नम:, ॐ क्ष्म्यौं अनामिकाभ्यां नम:, ॐ स्वाहा कनिष्टकाभ्यां नम:, ॐ ह्लां आं क्ष्म्यौं स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नम: ।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नम: ॐ ह्लां शिरसे स्वाहा ॐ आं शिखायै वषट् ॐ क्ष्म्यौं कवचाय हुम् ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लां आं क्ष्म्यौं स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् : हावभावविलसार्द्धनारिकं भीषणार्धमथवा महेश्वरम् ।
दाशसोत्पलकपालशूलिनं चिन्तये जपविधौ विभूतये ॥

ध्यानार्थ—जो भयंकर, हाव-भावयुक्त, अर्द्धनारीश्वर, दाशस, कमल, कपाल एवं त्रिशूल को धारण किए हुए हैं उन भगवान महेश्वर का मैं जप सिद्धि की इच्छा से ध्यान करता हूं ।

मूलमंत्र—"ॐ ह्लां आं क्ष्म्यौं स्वाहा"

षष्ठमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—ॐ अस्य श्री मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि: पंक्ति छन्दः श्री षष्ठमुखी (कार्तिकेय) देवता ऐं बीजम् सौं शक्तिः क्लीं कीलकं रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्दसे नमो मुखे, कार्तिकेय देवतायै नमो हृदि, ऐं बीजाय, नमो गुह्ये सौं शक्तये नमः पादयो क्लीं कीलकायै नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ॐ अगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ॐ सौं कनिष्ठकाभ्यं नमः ॐ ऐं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रीं शिखायैवषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम्, ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं अस्त्राय फट्।

ध्यानम् : कोञ्चपर्वत विदारणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः।
चूतपल्लव शिरोमणि चोदी भोष्पडानन ! जगत्परिपाहि॥

ध्यानार्थ—जो क्रौंच पर्वत को नष्ट करने में चञ्चल।

सप्तमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—ॐ अस्य श्री अनन्त मन्त्रस्य भगवान् ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तो देवता क्रीं बीजम् ह्रीं शक्तिः मम अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—भगवान् ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, अनन्तो देवतायै नमः हृदि, क्रीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ॐ अगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ग्लौं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ॐ सौं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्रीं शिखायै वषट्, ॐ ग्लौं कवचाय हुम्, ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ सौं अस्त्राय फट्।

ध्यानम् : अनन्त पुण्डीकाक्षं फणाशत विभूषितम्।
विष्वक्वंधूक आकारं, कूर्मारूढ़ प्रपूजयेत्॥

ध्यानार्थ—सहस्रों फणों से शोभायमान, बन्धूक पुष्पों (अडहुल) के आकार वाले, कछुआ की पीठ पर बैठे हुए अनन्त पुण्डरीकाक्ष भगवान् विष्णु का ध्यान करे।

मूलमंत्र—"ॐ ह्रीं क्रीं ग्लौं ह्रीं सौं"

अष्टमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—अस्य श्री गणेश मन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः श्री विनायको देवता ग्रीं बीजम्, आं शक्तिः मम अभीस्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ॐ भागर्व ऋषये नमः शिरसिः अनुष्टुप छन्द से नमः मुखे, विनायाको देवतायै नमः हृदि, ग्रीं बीजाय नमोगुह्ये, आं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ॐ अगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रां तर्जरीभ्यां नमः, ॐ ग्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ लं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ आं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ॐ श्रीं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्रां शिरसे स्वाहा, ॐ ग्रीं शिखायै वषट्, ॐ लं कवचाय हुम्, ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ श्रीं अस्त्राय फट्।

ध्यानम् : हरतु कुल गणेशो विघ्न संघातशेषान्,
नयतु कुल सपर्यां पूर्णतां साधकानाम्।
पिबतु वटुक नाथः शोणितं निन्दकानां,
दिशतु सकल कामान् कौलिकानां गणेशः॥

ध्यानार्थ—कुल देव गणपति मेरे सभी विघ्न, बाधाओं का नाश करें और अपने साधकों के समस्त कार्यों को बिना किसी बाधा के अर्थात् निर्विघ्न पूरा करें। जो रुद्राक्ष की निन्दा करते हैं ऐसों का श्री वटुकनाथ रक्तपान करें तथा श्री गणेश जी साधनारत लोगों का कल्याण करें।

मूल मंत्र—"ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं"

नवमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—अस्य श्री भैरव मंत्रस्य, नारद ऋषि: गायत्री छन्द:, भैरवो देवता, वं बीजं ह्रीं शक्ति: चतुवर्ग सिद्ध्यर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोग: ।

ऋष्यादि न्यास—नारद ऋषये नम: शिरसि, गायत्री छन्द से नमो मुखे, श्री भैरवो देवतायै नम: हृदि, वं बीजाय नमो गुह्ये ह्रीं शक्तये नम: पादयो, विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ।

कर न्यास—ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नम:, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: ॐ वं मध्यमाभ्यां नम: ॐ यं अनामिकाभ्यां नम: ॐ रं कनिष्ठकाभ्यां नम: ॐ लं करतल कर पृष्ठाभ्यां नम: ।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नम: ॐ ह्रीं शिर से स्वाहा ॐ वं शिखायै वषट्, ॐ यं कवचाय हुम्, ॐ रं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ लं अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् :

कपाल हस्तं भुजगोपवीतं कृष्णच्छविद दण्डधरं त्रिनेत्रम्।
अचिन्त्याद्यं मधुपानमत्तं हृदि स्मरेद् भैरवमिष्टदं नृणाम्॥

ध्यानार्थ—हाथ में कपाल धारण किए हुए, सर्पों का यज्ञोपवीत पहने हुए, कृष्ण वर्णी, दण्ड के धारण करने वाले, तीन नेत्रों वाले मधुपान से मदोन्मत्त, अचिन्त्य, मानव मात्र के सभी मनोरथों को पूरा करने वाले, समस्त देवों में आदि पुरुष, ऐसे भैरव देव का हृदय में ध्यान करें।

मूल मंत्र—"ॐ ह्रीं वं यं रं लं"

दशमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—अस्य श्री जनार्दन मन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्री जनार्दनो देवता, श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थ जप विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास—नारद ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्द से नमो मुखे, जनार्दन देवतायै नमः हृदि, श्रीं बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

कर न्यास—ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ व्रीं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ॐ ॐ करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा ॐ ह्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुम्, ॐ व्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ॐ अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् : विष्णुं शब्द चन्द्र-कोटि सदृशं शंख रथाङ्गं गदा-
मम्भोजं दधतं सिनाब्जनिलयं कान्त्यां जगन्मोहनं ।
आबद्धामद-हारकुण्डल महा-मौलि स्फुरत्कङ्कणं
श्री वत्साङ्क मुदार कौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रैः स्तुतम् ।।

ध्यानार्थ—करोड़ों शरद् चन्द्र के समान कान्ति वाले तथा अपने हाथों में चक्र, शंख, कमल, गदा आदि धारण करने वाले, सफेद कमल की शय्या पर आसीन, प्रखर तेजो राशि, जगत को मोहित करने वाले, अपनी भुजाओं में भुज बन्द, गले में मुक्ताहार, कानों में कुण्डल, कलाई में कङ्कण धारण किए हुए, महामौलि में शोभायमान गले में कौस्तुभ मणि धारण किए हुए श्रेष्ठ मुनियों द्वारा पूजित एवं स्तुत्य भगवान विष्णु को मैं नमस्कार करता हूं।

मूल मंत्र—"ॐ श्री ह्री क्लीं व्रीं ॐ"

एकादशमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—ॐ अस्य श्री रुद्र मंत्रस्य कश्यप ऋषि: अनुष्टुप छन्द: रुद्रो देवता, रूं बीजम्, क्षू शक्ति: रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादि न्यास—कश्यप ऋषये नम: शिरसि, अनुष्टुप छन्द से नमो मुखे, रुद्रो देवतायै नम: हृदि, रूं बींजाय नम: गुह्ये क्षूं शक्तये नम: पादयो, विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ॐ अगुष्ठाभ्यां नम:, ॐ रूं तर्जनीभ्यां नम: ॐ क्षूं मध्यमाभ्यां नम: ॐ मूं अनाभिकाभ्यां नम:, ॐ यूं कनिष्ठकाभ्यां नम:, ॐ औं करतल कर पृष्ठाभ्यां नम:।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नम: ॐ रूं शिरसे स्वाहा, ॐ क्षूं शिखायै वषट् ॐ मूं कवचाय हुम्, ॐ यूं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ औं अस्त्राय फट्।

ध्यानम् : वालार्कायुत तेजसं घृत जटाजूटेन्दु खण्डोज्ज्वलं,
नागेन्द्रै:कृत शेखरं जपवटी शूलं कपालं करै:।
खट्वाङ्गदधतं त्रिनेत्र विलसत्पञ्चाननं सुन्दरं,
व्याघ्रत्वक्परिधानमब्जनिलयं श्री कण्ठं भजेत्॥

ध्यानार्थ—उदय होते सूर्य के समान तेजस्वी, अपनी जटाओं में उज्ज्वल अर्धचन्द्र एवं भयंकर सर्पराज को लपेटे हुए, अपने हाथों में खट्वाङ्ग, जपमाला, शूल एवं कपाल धारण किए हुए, तीन नेत्र वाले, पांच मुख वाले, व्याघ्र चर्म को धारण करने वाले, कमल शैया पर आसीन, ऐसे भगवान शंकर का ध्यान करे।

मूल मंत्र—"ॐ रूं क्षूं मूं यूं औं"

द्वादशमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—ॐ अस्य श्री सूर्य मंत्रस्य भार्गव ऋषि: गायत्री छन्द: विश्वेश्वरी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्ति: घृणि: कीलकं, अभीष्ट सिद्धयर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जप विनियोग:।

ऋष्यादि न्यास—भार्गव ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्द से नमो मुखे, विश्वेश्वरो देवतायै नमः हृदि, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयो, घृणि: कीलकं नमः नाभौ, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्या नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्षौं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ घृणि: अनामिकाभ्यां नमः, ॐ श्रीं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं क्षौं घृणि: श्रीं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्षौं शिखायै वषट्, ॐ घृणि: कवचाय हुम्, ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लीं क्षौं घृणि: श्रीं अस्त्राय फट्।

ध्यानम् : शोणाम्भोरुहंसस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयी विग्रहं,
दानाम्भोज युगाभयानि दधतं हस्तैः प्रवाल प्रभम्।
केयूराङ्गद-कङ्कणद्वयधरं कर्णोलसत्कुण्डलं
लोकोत्पत्ति-विनाश-पालन करं सूर्यं गुणाब्धि भजेत्॥

ध्यानार्थ—लाल कमल के आसन पर विराजे हुए, तीन नेत्रधारी ऋग-युजः-सामवेद स्वरूप शरीर वाले, अपने हाथों में मूंगे जैसे अभय मुद्रायुक्त, दो कमल धारण किए हुए। अपने दोनों हाथों एवं भुजाओं में कयूर, अङ्गद और कङ्कण धारण किए हुए, कानों में देदीप्यमान कुण्डल धारण करने वाले, गुणों की खान, तीनों लोकों की उत्पत्ति, पालन एवं विनाश के एकमात्र कारण सूर्यनारायण का भजन करे।

मूलमंत्र—"ॐ ह्लीं क्षौं घृणि: श्रीं"

त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—अस्य श्री इन्द्र मन्त्रस्य ब्रह्माऋषि: पंक्ति छन्दः इन्द्रो देवता ई बीजम् आप इति शक्तिः रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्द से नमो मुखे इन्द्रो देवतायै नमः हृदि ई बीजाय नमः गुह्ये, आप इति शक्तये नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ॐ अगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ई तर्जनीभ्यां नमः, ॐ यां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ आप अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ॐ कनिष्काभ्यां नमः, ॐ ई यां आप ॐ करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ ई शिरसे स्वाहा, ॐ यां शिखायै वषट्, ॐ आप कवचाय हुम्, ॐ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ई यां आप ॐ अस्त्राय फट्।

ध्यानम् : पीतवर्णं सहस्राक्षं वज्रपदमधरं विभुम्।
सर्वालङ्कार संयुक्तं नौमिन्द्रादिकमीश्वरम्॥

ध्यानार्थ—हजारों आंखों वाले, पीले वर्ण वाले, हाथों में वज्र और कमल धारण करने वाले, समस्त अलंकारों से सुशोभित, व्यापक, सभी देवताओं के स्वामी, शचि पति इन्द्रदेव को मेरा नमस्कार है।

मूलमंत्र—"ॐ ई यां आप ॐ"

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष धारण मंत्र

विनियोग—अस्य श्री हनुमन्मन्त्रस्य, रामचन्द्र ऋषिः जगती छन्दः, श्री हनुमद्देवता ॐ बीजम् हस्फें शक्तिः चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे रुद्राक्ष धारणार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास—रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि, जगती छन्द से नमो मुखे, हनुमद्देवतायै नमो हृदि, औं बीजाय नमो गुह्ये, हस्फें शक्तिः नमः पादयो, विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर न्यास—ॐ ॐ अगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ औं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ हस्फें मध्यमाभ्यां नमः, ॐ खफ्रें अनामिकाभ्यां नमः, ॐ हस्त्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ॐ हसख्फें करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास—ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ औं शिरसे स्वाहा, ॐ हस्फें शिखायै वषट्, ॐ खफ्रें कवचाय हुम्, ॐ हस्त्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ हसख्फें अस्त्राय फट्।

ध्यानम् : उद्यन्मार्त्तण्ड-कोटिप्रकटरुचियुक्तं चारुवीरासनस्थं,
मौञ्जीयज्ञोपवीताभरण रुचि शिखा शोभितं कुण्डलाभ्यां।
भक्तानामिष्ट दान-प्रवणमनुदिनं वेदनादप्रमोदं,
ध्यायेद्देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवारिद्धम् ॥

ध्यानार्थ—उदय होते करोड़ों सूर्य के समान कान्ति वाले, वीरासन से बैठने वाले, मूंज का यज्ञोपवीत, स्वर्ण कुण्डलों की किरणों से शोभायमान, भक्तों को इच्छित वर प्रदान करने वाले, समुद्र को लांघने वाले, अपने भयंकर नाद से हर्षित होने वाले, वानर कुलपति हनुमद्देव का ध्यान करे।

मूलमंत्र—"ॐ ऑं हस्फ्रें खफ्रें हस्रौं हसख्फ्रें"

इस प्रकार उपरोक्त मंत्रों से एकमुखी रुद्राक्ष से लेकर चौदहमुखी रुद्राक्ष धारण करे।

आरती

शङ्कर तेरी जटा में बहती है गङ्गधारा।
काली घटा के अन्दर जिमि दामिनी उजारा॥
गल मुण्डमाला राजे, शशि भाल में विराजे।
डमरू निदान बाजे कर में त्रिशूल भारा॥ शङ्कर......

दृग तीन तेज राशि, कटिबन्ध नाग फांसी।
गिरिजा हैं संग दासी सब विश्व के अधारा॥ शङ्कर......

मृग चर्म भस्मधारी, वृषभराज पर सवारी।
निज भक्त दुःखहारी, कैलाश में विहारा॥ शङ्कर......

शिव नाम जो उचारे, सब पाप दोष टारे।
ब्रह्मानन्द ना बिसारे भव सिन्धु पार तारा॥ शङ्कर......

शङ्कर तेरी जटा में बहती है गङ्गधारा।
काली घटा के अन्दर जिमिदामिनी उजारा॥ शङ्कर......

× × ×

हे भोलानाथ तेरी आरती उतारूं,
आरती उतारूं तन मन वारूं! हे भोलानाथ......

पर्वत पर राजत है जोरी,
भोले शङ्कर के सङ्ग में गौरी! हे भोलानाथ......

वाम भाग में शोभित जगजन्नी,
चरण विराजय हैं गण नन्दनी ! हे भोलानाथ......
क्षण प्रतिक्षण यह रूप निहारूं ! हे भोलानाथ......

आरती

झांकी उमा महेश की आठों पहर किया करूं।
नयनों के पात्र में सुधा भर-भर के मैं पिया करूं ॥
वाराणसी का वास हो, और न कोई पास हो।
गिरिजापति के नाम का सुमिरण भजन किया करूं ॥ झांकी......
जयति जय महेश हैं, जयति नन्दकेश हैं।
जयति जय उमेश हैं प्रेम से जप करूं ॥ झांकी......
अम्बा कहीं श्रमित न हो, सेवा का भार मुझको दो।
जी भर के तुम पिया करो, घोट के मैं दिया करूं ॥ झांकी......
मन को तुम्हारी है लगन, उधर खींचते हैं व्यसन।
हरदम चलायमान मन इसका उपाय क्या करूं ॥ झांकी......
भिक्षा में नाथ दीजिए, अपनी शरण में लीजिए।
ऐसा प्रवन्ध कीजिए सेवा में मैं रहा करूं ॥ झांकी......
तुम तो जगत् के नाथ हो सव पर दया का हाथ हो।
मैं ही निराश हे प्रभु तुम्हारे द्वारे से क्यों फिरूं ॥ झांकी......
वेकल हूं नाथ रात दिन, नहीं चैन प्रभु आप विन।
मैं तो सब्र कर भी लूं दिल का उपाय क्या करूं ॥ झांकी......

× × ×

जय बोलो हिम गिरिसुत वर की
आरती बोलो शङ्कर की। जय......

जटा मुकट सिर गङ्ग विराजे, माथे तिलक चन्द्रमा साजे।
रूप देख रति कामहु लाजे, शोभा हर हर की ।। आरती……
चिता भस्म रहे लगा अङ्ग हैं, पहरें कछू ना रहें निहंग हैं।
खायें धतूरा, आक, भंग हैं, देखो छवि भूतेश्वर की ।। आरती……
आसन बिछा रहे मृगछाला, नार पड़ी मुण्डन की माला।
अरुण नयन भृकुटि हैं विशाला, कटि बाघम्बर की ।। आरती……
कानों में कुण्डल दमकत हैं, बैल नादिया सङ्ग रहत हैं।
ऋषि मुनी सब ध्यान धरत हैं, भक्त लोग आरती करत हैं।
विन्ती किंकर की, आरती बोलो शङ्कर की।
जय बोलो हिमगिरि सुतवर की, आरती बोलो शङ्कर की ।।

आरती

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा ।। ॐ हर हर हर महादेव
एकानन, चतुरानन, पञ्चानन राजे।
हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजे ।। ॐ हर……………
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवनजन मोहे ।। ॐ हर……………
श्वेताम्बर, पीताम्बर बाघम्बर अङ्गे।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक सङ्गे ।। ॐ हर……………
अक्षमाला, वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारीश मुरारी करमाला धारी ।। ॐ हर……………
करमध्ये तु कमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुःखहारी जग पालनकारी ।। ॐ हर

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥ ॐ हर...............
लक्ष्मी व सावित्री पार्वती सङ्गा।
पार्वती अर्द्धाङ्गी शिवलहरी गङ्गा ॥ ॐ हर...............
पर्वत विराजत पार्वती और शङ्कर कैलासा।
भांग धतूरे के भोजन और भस्मी में वासा ॥ ॐ हर...............
शिव की जटा में गङ्गा वहत है गल मुण्डन माला।
शेष नाग लिपटावत ओढ़त मृगछाला ॥ ॐ हर...............
काशी में विराजे विश्वनाथ नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ दर्शत पावत महिमा अति भारी ॥ ॐ हर...............
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई गावै।
कहे शिवानन्द स्वामी वाञ्छित फल पावै ॥ ॐ हर...............

शिव-स्तुति

दोहा— श्री गिरिजापति वंदिकर, चरण मध्य शिरनाय।
कहत अयोध्या दास तुम, मोपर होहु सहाय ॥

कवित्त

नन्दी की सवारी नाग अङ्गीकार धारी,
नित सन्त सुखकारी नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं।
गले मुण्डमाला भारी सिर सोहैं जटाधारी,
वाम अङ्ग में विराजी गिरिजा सुतवारी हैं ॥
दानी देख भारी शेष शारदा पुकारी,
काशीपति मदनारी त्रिशूल चक्रधारी हैं।
कला उजियारी लख देव सा निहारी,
यश गावै वेदचारी सो हमारी सुखकारी हैं ॥

शम्भु बैठे हैं शिवाला, भङ्ग पिवैं सो विशाला,
नित रहैं मतवाला अहिअङ्ग पै चढ़ाये हैं।
गले सोहे मुण्डमाला, कर लिए डमरू विशाला,
अरू ओढ़े मृगछाला भस्म अङ्ग में लगाये हैं॥
संग सुर भी सुतशाला करें जग प्रतिपाला,
मृत्यु हरैं अकाला शीश जटा को बढ़ाये हैं।
कहैं रामलाल, मोहि करो तुम निहाल,
अब गिरिजापति कैलाश जैसे काम को जलाये हैं॥
जारा है जलन्धर और त्रिपुर को संहार,
जिन जारा है काम जाके शीश गङ्गधारा है।
सारा है अपार जासू महिमा है तीन लोक,
भाल में है इन्दु जाके सुख वाको सारा है॥
सारा है बात सब खायो हलाहल जानि,
भक्त के आधार जाहि वेदन उचारा है।
चारा है भाग जाके द्वार है गिरीश कन्या,
कहत अयोध्यादास सोई मालिक हमारा है॥
अष्ट गुरू ज्ञानी जाके मुख वेद वाणी,
शुभ भवन में भवानी सुख सम्पत्ति लहा करें।
मुण्डन की माला जाके चन्द्रमा ललाट सौहे,
दासन के दास जाके दरिद्र दहा करें॥
चारों द्वार बन्दी जाके द्वारपार नन्दी,
कहत कवि अनन्दी नाहक नर हहा करें।
जगत् रिसाय यमराज को कहा बसाय,
शङ्कर सहाय तो भयंकर कहा करें॥

सवैया—गौरी शरीर में गौरि विराजत, मौर जटा सिर सोहत जाके।
नागन को उपवीत लसै, कहे अयोध्या शशि भाल में वाके॥
दान करै पल में फल चारि, और टारत अंक लिखे विधना के।
शङ्कर नाम निःशङ्क सदा ही, भरोते रहैं निसिवासर ताके॥

दोहा— मगसर मास हेमन्त ऋतु, छट दिन है शुभ वृद्ध।
कहत अयोध्या पाहि तुम, शिव के विनय समुद्ध॥

श्री शिवाष्टक

आदि अनादि अनन्त अखण्ड अभेद अखेद सुवेद बतावैं।
अलख अगोचर रूप महेश को जोगि जती मुनि ध्यान ना पावैं ।
आगम-निगम-पुराण सबै इतिहास सदा जिनके गुण गावैं।
बडभागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव को नित ध्यावैं ॥
सृजन-सुपालन-लय-लीलाहित जो विधि हरि-हर रूप बनावैं।
एकहि आप विचित्र अनेक सुवेस बनाई के लीला रचावैं॥
सुन्दर सृष्टि सुपालक करि जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं।
बडभागी नर-नरि सोई जो सांब-सदाशिव को नित ध्यावैं॥
अगुन अनीह अनामय अज अविकार सहज नित रूप धरावैं।
परम सुरम्य बसन आभूषण सजि मुनि-मोसन रूप करावैं॥
ललित ललाट बाल विधु बिलसैं रत्न-हार उर पै लहरावैं।
बडभागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव को नित ध्यावैं॥
अङ्ग विभूति रमाय मसान की विषमय भुजगनि को लपटावैं।
नर-कपाल कर, मुण्डमाल गल, भालु चर्म सब अङ्ग उढ़ावैं॥
घोर दिगम्बर, लोचन तीन भयानक देख के सब थर्रावैं।
बडभागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव को नित ध्यावैं॥
सुनतहि दीन की दीन पुकार दयानिधि आप उबारन आवैं।
पहुंच तहां अविलम्ब सुदारून मृत्यु को मर्म विदारि भगावैं॥
मुनि मुकंड सुत की गाथा सुचि अजहुं, विज्ञजन गाई सुनावैं।

बडभागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव को नित ध्यावैं॥

चाउर चारि जो फूल धतूरे के, बेल के पात अरु पान चढावें।
गाल बजाये के बोल जो "हर-हर महादेव" धुनि जोर लगावें॥
तिनहिं महाफल देय सदाशिव सहजहिं भक्ति मुक्ति सो पावें।
बडभागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव को नित ध्यावें॥
बिन सिदोर दुःख दुरित दैन्य दारिद्रय नित्य सुख शांति मिलावें।
आसुतोष हर पाप-ताप सब निर्मल बुद्धि-चित्त बकसावें॥
अशरण-शरण कटि भवबन्धन भव निज भवन भव्य बुलवावें।
बडभागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव को नित ध्यावें॥
औढ़र दानी, उदार अपार जु नेकुसी सेवा ते ढुरि जावें।
दमन अशान्ति, समन सङ्कट, बिरद बिचार जिनहिं अपनावें॥
ऐसे कृपालु कृपामय देव के क्यों न सरन अबहीं चलि जावें।
बडभागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव को नित ध्यावें॥

आरती

धन-धन भोलेनाथ सदाशिव कमी नहीं खजाने में।
तीन लोक बस्ती में बसा शिव आप बसे बीराने में॥
जटाजूट सर गङ्गा शङ्कर जी गले में रूण्डन की माला।
माथे चन्दा छोटा रे सागर, कृपा ले का हे प्याल॥
जिसको देख के भय व्यापै, गले में नागन की माला।
जिनके तीसरे नेत्र में है तीन लोक का उजियाला॥
पीने को है भङ्ग-सदाशिव और धतूरा खाने में।
तीन लोक बस्ती में बसा शिव आप बसे बीराने में॥
नाम अनेक आपके शङ्कर, सबसे उत्तम है नङ्गा।
यही तो आपकी माया शिवजी जटा बीच में है गङ्गा॥

भूत प्रेत वैताल नाथ जी यह लश्कर सबसे चंगा।
तीन लोक के हो के विधाता आप बने हो भिखमङ्गा ॥
हमें बताओ नाथ क्या मिलता आपको अलख जगाने में।
तीन लोक बस्ती में बसा शिव आप बसे वीराने में ॥
हर हर हर महादेव ! हर हर हर महादेव !! हर हर हर महादेव !!!

आरती

आरती करो हरिहर की, करो नटवर की भोले शङ्कर की,
आरती करो शङ्कर की।
शिर पर शशि का मुकुट संवारे, तारों की पायल झंकारे।
धरती अम्बर डोले ताण्डव लीला से नटवर की,
आरती करो शङ्कर की।
फणि का हार पहनने वाले, शम्भु हैं जग के रखवाले।
सकल चराचर डगमग नाचे उंगली पर विषधर की।
आरती करो शङ्कर की—आरती करो हरिहर की करो नटवर की भोले शङ्कर की आरती करो शङ्कर की।

एक रूप में चार रूप

आधे अंग में कृष्ण लक्ष्मी आधे में शिव पार्वती,
एक अंग में रूप हैं चार यह वर्णन करे यति।
एक समय मैंने भक्ति कर कहा हरि-हर से भाई।
एक अङ्ग में मुझे तुम चार रूप देऊ दिखलाई ॥
शिव के बांय गौरी दाहिने श्री लक्ष्मी यदुराई।
भक्त के वश में है प्रभु यह महिमा वेदों ने गाई ॥

ऐसा ही रूप दिखाया मुझको लक्ष्मीधर और गिरिजापति।
एक अंग में रूप हैं चार यह वर्णन करे यति॥
श्री कृष्ण के मोर मुकुट शिव का जूडा बन्ध रहा विशाल।
गौर को सोहें फूलों के हार, रमा-रमा के मुक्त माल॥
शिव धारें भस्मी माथे पर श्री कृष्ण गौरोचन भाल।
रमा के सोहें भूषण दिव्य और गिरि को लपटे हैं व्याल॥
चार वेद चारों की करें स्तुति, तऊ न पावें पाव रत्ती।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करे यती॥
श्री कृष्ण के शंख हाथ में शिवजी कर में लिए कपाल।
रमा बजावें दो चुटकी गौरा दोऊ कर से देवें ताल॥
मनमोहन की मुरली बाजे शिव का डमरू बजे धमाल।
गौर के माथे पर चन्दन रचत और रमा के भाल पे बिन्दी लाल॥
शिव योगी-हरि ब्रह्मचारी, लक्ष्मी क्वांरी और गौर सती।
एक अंग में रूप हैं चार यह वर्णन करे यती॥
श्रीकृष्ण के चक्र सुदर्शन शिवजी कर में लिए त्रिशूल।
पार्वती के हाथ में खड्ग, रमा के कर में कमल का फूल॥
देवीसिंह ने कहा ख्याल यह वेद पुराणों के अनुकूल।
बनारसी के छन्दों में न कभी हरगिज निकले भूल॥
जो इस पद को सुनै और गावै उनकी हो जाये तुरत गति।
एक अंग में रूप हैं चार यह वर्णन करे यती॥

आरती उमापति

जय गौरी शङ्कर उमापते,
कैलाशपते जय शिव जय शिव।
जय महादेव जय चन्द्रमौलि,
जय श्री शङ्कर जय शिव जय शिव।
जय मृत्युञ्जय जय भोलेश्वर,
जय योगेश्वर जय शिव जय शिव।
जय पार्वती पति परमेश्वर,
जय कामारि जय शिव जय शिव।
जय गंगाधर त्रिपुरारि विभो,
जय भवहारा जय शिव जय शिव।
जय आशुतोष जय महाकाल,
कालहु के काल जय शिव जय शिव।
जय ओंकारेश्वर रामेश्वर,
जय वैजनाथ जय शिव जय शिव।
जय जय अविनाशी जय शम्भो,
जय विश्वनाथ जय शिव जय शिव।
जय त्रिगुणातीत महेश्वर जय,
जय निर्विकार जय शिव जय शिव।
शिर नाई जोरिकर विनती है,
स्वीकार करो जय शिव जय शिव।
मम हृदय विराजो भक्ति देहु,
सब पाप हरो जय शिव जय शिव।

मेटो चौरासी का चक्कर,
कर जन्म सफल जय शिव जय शिव।
शरणागत हूं नाथ मैं, करो मेरी प्रतिपाल।
त्राहि त्राहि अशरण शरण, शम्भो होहु दयाल ॥

आरती

दर्शन देवो सदा-शिव शम्भो भक्त वत्सल तेरा नाम हवे।
मस्तक तेरे चन्द्र विराजे शशि मध्य से गङ्ग बहे ॥
नाथ हाथ लिये डमरू वाजै भुगङ्ग हृदय पर साज हवे।
तीन कोटि सवालक्ष, हजारों गण तेरे सम्मुख नाच हवे ॥
दर्शन देवो सदा-शिव शम्भो भक्त वत्सल तेरा नाम हवे।
मस्तक तेरे चन्द्र विराजे शशि मध्य से गङ्ग बहे ॥
हाथ त्रिशूल लिए भोले शम्भो वामां में गौरी राज हवे।
भस्म रमावत अङ्ग तू नारे गले मुण्डमाला साज हवे ॥
दर्शन देवोनाथ सदा-शिव शम्भो भक्त वत्सल तेरा नाम हवे।
मस्तक तेरे चन्द्र विराजे शशि मध्य से गङ्ग बहे ॥
कोऊ त्रिवंके कोऊ अङ्ग लम्बे काके वमन डबार हवे।
काहु के केश बने अति पीले रक्त रंग कोऊ काले हवे ॥
दर्शन देवो सदा-शिव शम्भो भक्त वत्सल तेरा नाम हवे।
मस्तक तेरे चन्द्र विराजे शशि मध्य से गङ्ग बहे ॥
आसन तेरो कैलाश विराजन लहरी गङ्गा गाज हवे।
भङ्ग धतूरा सदा रहे खाता तव बाघम्बर साज हवे ॥
दर्शन देवो सदा-शिव शम्भो भक्त वत्सल तेरा नाम हवे।
मस्तक तेरे चन्द्र विराजे शशि मध्य से गङ्ग बहे ॥

नारद इन्द्र देवता दानव आरती तेरी गाव हवे।
ऐसे ही मनुष्य गावे सूने जे मन वांछित फल पाव हवे॥
दर्शन देवो सदा-शिव शम्भो भक्त वत्सल तेरा नाम हवे।
मस्तक तेरे चन्द्र विराजे शशि मध्य से गङ्ग बहे॥
रूप कहे करजोरी सदा-शिव मेरो मनोरथ कीजै हवे।
गुरु चरणों में प्रीत रहे मेरी रचना सफल कीजै हवे॥
दर्शन देवो सदा-शिव शम्भो भक्त वत्सल तेरा नाम हवे।
मस्तक तेरे चन्द्र विराजे शशि मध्य से गङ्ग बहे॥

आरती साम्ब-शंकर

आरती परम साम्ब-शंकर की। सत्य सनातन शिव शुभकर की।
आदि, अनादि, अनन्त, अनामय। अज, अविनाशी अकल कलामय॥
सर्व रहित निन रू.ि उरालय-
मस्तक सुर सरिधर शशीधर की, आरती परम साम्ब-शंकर की॥
कर्ता-भर्ता जग संहारी। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र तनु धारी।
सर्व विकार रूप अविकारी-
अग-जग पालक प्रलयंकर की, आरती परम साम्ब-शंकर की॥
विश्वातीत विश्वगत स्वामी। द्रष्टा साक्षी अन्तर्यामी।
काम काल सब जगहित कामी-
अनघ स्वरूप सकल अघहर की, आरती परम साम्ब-शंकर की॥
मुनि मन हरण मधुर शुचि सुन्दर। अति कमनीय रूप सुषमावर।
दिव्याम्बर रत्ना भूषण धर-
सर्वनयन मनहर सुखकर की, आरती परम साम्ब-शंकर की॥
विकट कराल पंचमुखी धारी। मुण्डमाल विषधर भयकारी।

हाथ कपाल शमशान बिहारी-
वेप अमङ्गल मङ्गल कर की, आरती परम सम्ब-शंकर की ॥
भोगी-योगी-ध्यानी-ज्ञानी । जग अभिमानधार अमानी ।
आशुतोष अति औढ़रदानी-
दैन्य-दुरित-दुर्गति हर-हर की, आरती परम साम्ब-शंकर की ॥

आरती भोलेनाथ की

अभयदान दीजै दयालु प्रभु सकल सृष्टि के हितकारी ।
भोलेनाथ भक्त दुख गंजन भव भंजन शुभ सुख कारी ॥
दीन-दयालु कृपालु कालरिपु अलख निरंजन शिवयोगी ।
मंगल रूप अनूप छबीले अखिल भुवन के तुम भोगी ॥
वाम अङ्ग अति रङ्ग रस भीने उमा बदन की छवि न्यारी । भोलेनाथ···
असुर निकन्दन सब दुःख भंजन वेद बखानें जग जाने ।
रुण्डमाल गल व्याल भाल शशि नील कण्ठ शोभासाने ॥
गङ्गाधर त्रिशूलधर विषधर बाघम्बरधर गिरिचारी ॥ भोलेनाथ···
यह भव सागर अति अगाध है पार उतर कैसे बूझै ।
ग्राह मगर बहुकच्छप छाये मार्ग कहो कैसे सूझै ॥
नाम तुम्हारा नौका निर्मल तुम केवट शिव अधिकारी ॥ भोलेनाथ···
मैं जानूं सद्गुण सागर अवगुण मेरे सब हरियो ।
किंकर की विनती सुन स्वामी सब अपराध क्षमा करियो ॥
तुम तो सकल विश्व के स्वामी मैं हूं प्राणी संसारी ॥ भोलेनाथ···
काम क्रोध लोभ अतिदारुण इन पे मेरे वश नाहिं ।
द्रोह-मोह-मद सङ्ग न छोड़े आन देत नहीं तुम ताईं ॥
क्षुधा तृषा नित लगी रहत है बढ़ी विषय तृष्णा भारी ॥ भोलेनाथ···

तुम ही शिवजी कर्त्ता-हर्त्ता तुम ही जग के रख वारे।
तुम हो गगन मगन पुनि पृथ्वी पर्वत पुत्री के प्यारे ॥
तुम ही पावन हुताशन शिवजी तुम ही रवि शशि तम हारी ॥ भोलेनाथ...
पशुपति अजर अमर अमरेश्वर योगेश्वर शिवगोस्वामी।
वृषभारूढ़ गूढ़ गुरु गिरिपति गिरिजा वल्लभ निष्कामी ॥
सुषमा सागर रूप उजागर गावत है सब नर नारी ॥ भोलेनाथ...
महादेव देवों के अधिपति फणिपति-भूषण अति साजै।
दीप्त ललाट लाल दोऊ लोचन उर आनत ही दुःख भाजै ॥
परम प्रसिद्ध पुनीत पुरानन महिमा त्रिभुवन विस्तारी ॥ भोलेनाथ...
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष मुनि नारद आदि करत सेवा।
सबकी इच्छा पूर्ण करते नाथ सनातन हर देवा ॥
भुक्ति मुक्ति के दाता शंकर नित्य निरन्तर सुखकारी ॥ भोलेनाथ...
महिमा इष्ट महेश्वर जो सीखे सुने नित्य गावैं।
अष्ट सिद्धि-नवनिधि सुख-सम्पत्ति स्वामी भक्ति मुक्ति पावे ॥
अहिभूषण पर प्रसन्न होकर कृपा कीजिये त्रिपुरारी ॥ भोलेनाथ...
अभयदान दीजे दयालु प्रभु सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ भक्त दुख गंजन भव भंजन शुभ सुखकारी ॥

शिव चालीसा

दोहा— जय गणेश गिरिजा सुवन, मङ्गल मूल सुजान।
कहत अयोध्या दास तव, देऊ अभय वरदान।

जै गिरिजा पति दीनदयाला।
सदा करत संतन प्रतिपाला ।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके।
कानन कुण्डल नाग फीन के ।।
अङ्ग गौर शिर गङ्ग बहाये।
मुण्डमाला तन छार लगाये ।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सौ हे।
छवि को देख नाग मुनि मोहे ।।
मैना मातु की ह्वैं दुलारी।
वाम अङ्ग सोहत छवि भारी ।।
कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी ।।
नन्दीगण सोहत हैं कैसे।
सागर मध्य कमल हैं जैसे ।।
कार्तिक श्याम और गणराऊ।
या छवि को कहि जात न काऊ ।।
देवन जब ही जाय पुकारा।
तब ही दुःख प्रभु आय निवारा ।।

किये उपद्रव तारक भारी ।
देवन सब मिल तुमहिं जुहारी ॥
तुरत षडानन आप पठायउ ।
लव निमेष में मारि गिरायउ ॥
आप जलन्धर असुर संहारा ।
सुयश तुम्हारा विदित संसारा ॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ।
सबहिं कृपा कर लीनिह बचाई ॥
किया तपहिं भागीरथ भारी ।
करी तपस्या सकल पुरारी ॥
दानिन में तुम सम कोऊ नाहीं ।
सेवक स्तुति करत सदा हीं ॥
वेद नाम महिमा तव गाई ।
अकथ अनादि भेद नहिं पाई ॥
प्रकटे उदधि मथन में ज्वाला ।
जरत सुरासुर भये विहाला ॥
कीन्ह दया तहं करी सहाई ।
नील कण्ठ तव नाम कहाई ॥
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा ।
जीत के लङ्क विभीषण दीन्हा ॥
सहस्र कमल में हो रहे धारी ।
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥
एक कमल प्रभु राखेऊ जोई ।
[illegible] पूजन चहं सोई ॥

कठिन भक्ति देखी प्रभु शङ्कर।
भये प्रसन्न दिया इच्छित वर॥
जय-जय-जय अनन्त अविनाशी।
करत कृपा सबके घट वासी॥
दुष्ट सकल नित मोंहि सतावें।
भ्रमत रहौं मोंहि चैन न आवें॥
त्राहि-त्राहि मैं नाथ पुकारौं।
यहि अवसर मोहि आन उबारौं॥
ले त्रिशूल शत्रुन को मारौ।
सङ्कट से मोहि आन उबारौ॥
मात पिता भ्राता सब कोई।
सङ्कट में पूछत नहीं कोई॥
स्वामी एक है आश तुम्हारी।
आय हरहु मम सङ्कट भारी॥
धन निर्धन को देते सदा ही।
जो कोई जांचे सो फल पाही॥
स्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी।
छमहु नाथ अब चूक हमारी॥
शङ्कर हो सङ्कट के नाशन।
विघ्न विनाशन मङ्गल कारन॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावें।
शारद नारद शशि नवावें॥
नमो नमो जय नमः शिवाये।
सुर ब्रह्मादिक पार ना पाये॥

जो यह पाठ करे मन लाई।
नापर होते हैं शम्भु सहाई॥
ऋनिया जो कोई हो अधिकारी।
पाठ करै सो पावन हारी॥
पुत्रहीन कर इच्छा कोई।
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥
पण्डित त्रयोदशी को बुलावै।
ध्यान पूर्वक होम करावै॥
त्रयोदशीव्रत करै हमेशा।
ताके तन नहीं रहे क्लेशा॥
शङ्कर सन्मुख पाठ सुनावै।
मन क्रम वचन जो ध्यान लगावै॥
जनम-जनम के पाप नशावै।
अन्त वास शिव पुर में पावै॥
कहै अयोध्या आश तुम्हारी।
जानि सकल दुःख हरो हमारी॥

दोहा— नित नेम करि प्रातः ही, पाठ करै चालीस।
तव सब मन कामना, पूर्ण करहि जगदीश॥
मगसर छठि हेमन्तु ऋतु, संवत चौंसठ आन।
अस्तुति चालीस शिवहिं पूर्ण कीन कल्याण॥

शिवापराध क्षमापन

हे शिव ! हे महेश्वर ! हे शम्भु ! पूर्वजन्म के किए पापों के कारण ही मुझे बार-बार मां की कोख में आना पड़ता है। माता के उदरस्थ अपवित्र विष्ठा और मूत्र के मध्य मेरी जठराग्नि अत्यन्त सन्तप्त होती है। वहां के न सह सकने वाले कष्ट मुझे निरन्तर पीड़ित करते रहते हैं, उनका वर्णन करने की सामर्थ्य किसमें है। सो हे शङ्कर ! मेरे अपराध क्षमा करिये।

मुझे बाल्यकाल में अत्याधिक कष्ट होता था, मेरी देह मल-मूत्र में सनी रहती थी तथा मुझे सदैव स्तनपान करने की इच्छा होती रहती थी। मेरी सारी इन्द्रियां कोई भी कार्य कर सकने में अशक्त थीं। आपकी माया से उत्पन्न जीव मुझे लगातार काटते रहते थे। उस समय मैं अनेक रोगों और दुःखों के कष्ट से असहाय बनकर रोता रहता था तब भी मैंने आपका स्मरण नहीं किया। अतः हे त्रिपुरारि ! मेरे इस अपराध को आप क्षमा करें।

जब मैं युवा होकर प्रौढ़ हुआ तब पांच विषय रूपी सर्पों ने मेरे मर्म-स्थल को डस लिया और मेरा विवेक इस कारण नष्ट हो गया। मैं धन, पुत्र, स्त्री आदि के सुखोपभोग में लीन हो गया, उस समय मेरा हृदय अभिमान से भरा था सो उस समय भी मैं आपका स्मरण चिन्तन नहीं कर सका सो हे शम्भो ! आप मेरा यह अपराध (जो कि अक्षम्य है) क्षमा करें।

इसी प्रकार मेरी वृद्धावस्था आ गई, इन्द्रियां शिथिल पड़ गईं, मेरी बुद्धि मन्द हो गई। आधिदैविक त्रितापों, पापों, स्त्री वियोग और रोगों से मेरा शरीर जर्जर हो गया इतने पर भी मन मिथ्या, मोह और अभिलाषाओं के ही चक्कर में फंसा रहा। उस समय भी हे शिव ! मैंने आपका नाम

स्मरण नहीं किया सो हे शङ्कर! हे शिव ! हे महादेव ! आप मेरे इस अपराध को क्षमा करें।

मैं प्रातः काल प्रतिदिन स्नान करता हूं, किन्तु आपके स्नान के लिए गंङ्गा जल एवं आपकी पूजा के लिए विल्वपत्र भी लाकर मैंने आपको अर्पित नहीं किए, कभी विकसित कमल पुष्प और गन्धादि भी समर्पित नहीं की अतः हे करूणा सागर ! हे शिव ! आप मेरा यह अपराध क्षमा करें।

मैंने आपकी मूर्ति पर कभी भी सुगन्धित चन्दन का लेप नहीं किया, नहीं आपको पंचामृत (दूध+दही+घी+शहद+चीनी) स्नान कराया न घतुरे के पुष्प अर्पित किए, धूप, दीप, कपूर एवं षडरस व्यञ्जनों का भोग भी नहीं लगाया अतः हे शङ्कर ! आप मेरे अपराध को क्षमा करें।

हे महादेव ! हे शम्भो ! हे करुणावलय ! आपकी जय हो, जय हो।
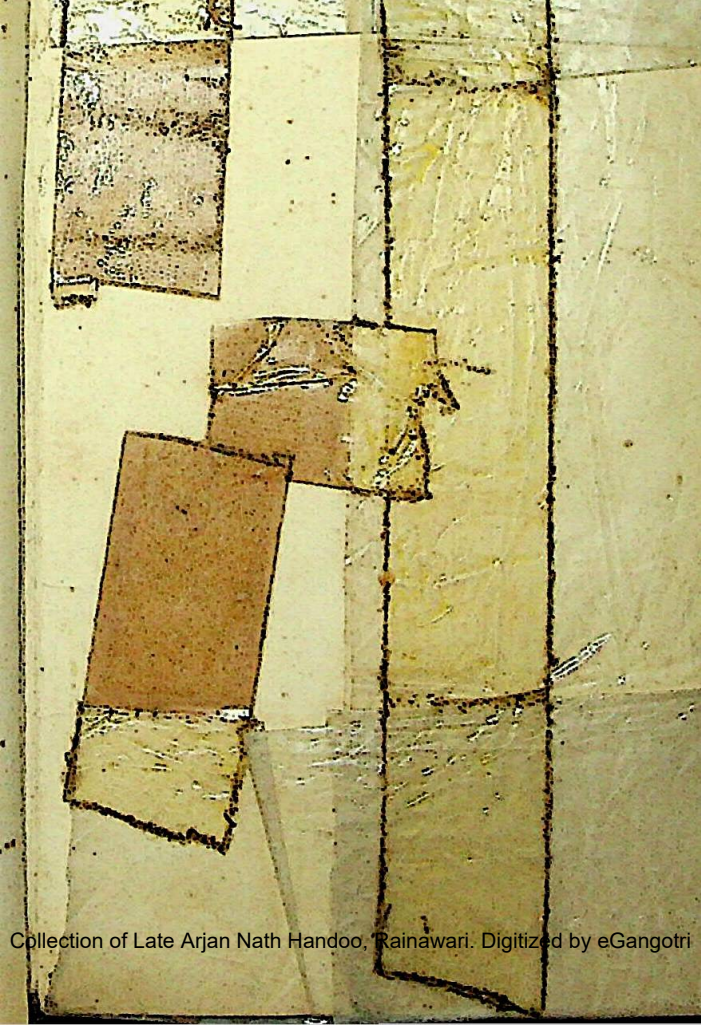
[illegible] भौतिक, रोग-शोक एवं संतापयुक्त तथा मरणधर्मा [illegible] भव से मुक्ति चाहते हैं और अपनी हृदय गुफा में [illegible] सत्य को जानकर उसको लक्ष्य बनाकर अमृत-तत्व को प्राप्त करना चाहते हैं जिसके बारे में गीताकार ने लिखा है।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते

गीता १३ १७

यह पद बहुत ज्योतियों का भी ज्योति एवं अविद्या-अज्ञानान्धकार से परे कहा गया है, वह परमात्मा बोधस्वरूप, जानने योग्य तथा तत्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है और सबके हृदय में विशेष रूप से वास करता है।

उसका साक्षात्कार करने के लिये यह पुस्तक अपनाइये और अपने हृदय में शिवज्ञान का प्रकाश फैलाईये। -

साधना पॉकेट बुक्स